इन्शाअल्लाह

व्यंगात्मक सामजिक उपन्यास
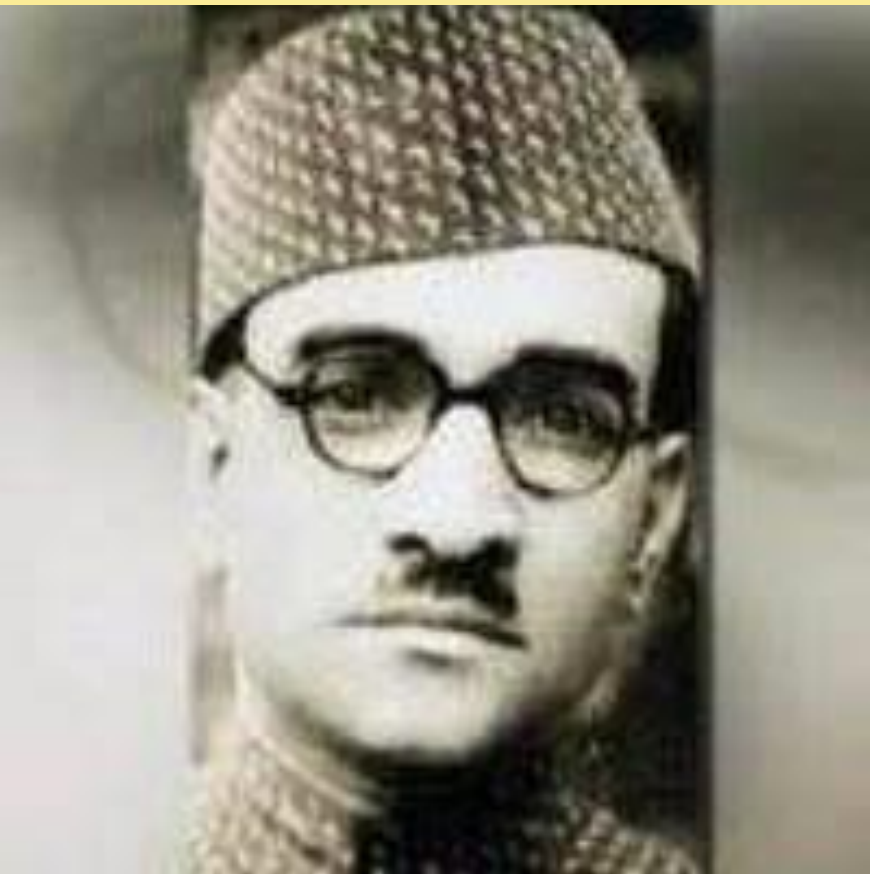
शौकत थानवी

इन्शा अल्लाह

मानव जीवन में केवल हास्य और मनोरंजन ही नहीं बल्कि चिन्तन के लिए गम्भीर सामग्री भी है। यही बात प्रस्तुत उपन्यास इन्शाअल्लाह में उपन्यासकार शौक़त थानवी ने चुभते हुए वाक्य, फड़कती हुई उक्तियों का सहारा लेकर विशिष्ट मनोरंजक ढंग से वर्णन की है। वैसे अन्य उपन्यासों की भाँति इंशाअल्लाह में भी शौक़त थानवी ने अपना विशिष्ट रंग और शोखियाँ दिखाई हैं। लेकिन हास्यरस प्रधान लेखक होते हुए भी उपन्यास में यथा स्थान और उचित ही व्यंग तथा हास्य है।

इन्शाअल्लाह

(एक व्यंगात्मक सामाजिक उपन्यास)

लेखक
शौकत थानवी
अनुवादक
श्रीकृष्ण गुप्त

प्रकाशक
नारायणदत्त सहगल एन्ड सन्ज़
दरीबा कलाँ दिल्ली—६

प्रकाशक—
नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्ज़
दरीबा कलां दिल्ली।

प्रथम संस्करण सन् १९५७
मूल्य ३ रुपये

मुद्रक:—
नूतन प्रेस,
चाँदनी चौक, दिल्ली।

INSHAALLAH SHAUKAT THANVI Rs. 3·00 nP.

१
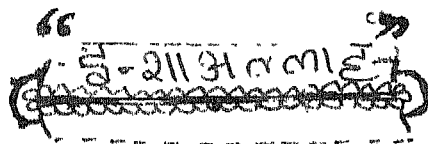
"यह बात इन्शाअल्ला, वह बात इन्शाअल्ला। बस बैठे बैठे इन्शाअल्ला करते रहो, मगर देख लेना कि इस सफेदी में एक दिन स्याही लगकर रहेगी।"

"अजी अस्तगसार अल्ला क्या बात करती हो तुम। इन्शाअल्ला* उसकी मर्जी है तो हमारी इज्जत पर कभी हर्फ नहीं आयेगा। वह बड़ा रबउल इज्जत† है।

नहीं उसकी रहमत का कोई शुमार

क्या मजाल है जो पत्ता भी उसके हुक्म के बग़ैर हिल जाए। जब उसका हुक्म होगा नजमा की शादी भी इन्शाअल्ला हो जाएगी।"

"फिर वही इन्शाअल्ला। खुदा के लिए मुझे यह तो समझा दो कि यह किस खुदा ने कहा है कि न हाथ हिलाओ न पैर फैलाओ बस बैठे हुए इन्शाअल्ला करते रहो। उसका हुक्म जब ही तो होगा जब खुद तुमको कोई फिक्र हो।"

"इन्शाअल्ला!"

"अब मैं अपना सिर पीट लूँगी। यह क्या तुमने मेरी कोई चिढ़ मुकर्रर की है।"

एक नौजवान और एक हसीना हँसी जब्त न कर सके और भागे

---

* भगवान ने चाहा। † इज्जत रखने वाला।

परदे के पीछे से हँसते हुए। जब दूर जाकर मुश्किल से हँसी पर काबू पाया तो उस नौजवान ने जिसका खिलता हुआ रंग हँसी के मारे सुर्ख हो चुका था, अपनी मुँडी हुई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—"इन्शाअल्ला !"

लड़की बिगड़ गई—"वाह तो क्या अब आप मेरे अब्बाजान की नक्ल भी करेंगे ?"

लड़के ने उसी मजबूती से कहा—"इन्शाअल्ला !"

लड़की ने आंखें निकाल कर कहा—"तो फिर इन्शाअल्ला सरम्रत भी जनाब की वह होगी कि इन्शाअल्ला की जगह इनालिल्ला कहने लगेंगे।" दोनों हँस दिये।

किस्सा दरअसल यह है कि जिस मकान के ये दो मनाजिर* निगाहों के सामने आ गये हैं वह मौलवी रजबअली साहब का दौलतकदा† है। मौलाना निहायत पाकबाज, खुदा और रसूल को पहिचानने वाले बुजुर्ग हैं। जवानी में भूलें किससे नहीं होतीं, मगर पैन्शन लेने के बाद से तो यह हाल है कि अब वह हैं और यादे खुदा। तमाम वक्त तो गुनाह बख्सवाने में गुजरता है और उसकी रहमत से उम्मीद है कि शायद तमाम रिश्वत स्तानियाँ भी नामाए एमाल से हर्फ गलत की तरह मिटा दी जाएंगी। और जवानी की वे तमाम चाँदनी रातें बख्शवादी जाएँगी जिनमें दारोगा रजबअली साहब राजा इन्द्र बनकर परियों के झुमंट में बैठा करते थे। पुलिस की नौकरी, बेचैन दिल, रिश्वत की आमदनी, आखिर इन्सान क्यों कर अपने काबू में रह सकता है।

वे तमाम हालात पेन्शन ले चुके थे, जवानी पेन्शन ले चुकी, दिल की हर उमंग पेन्शन ले चुकी। हद यह है कि तमाम परियाँ भी पचपन साला में आ चुकी थीं जो उस वक्त गारत गर ईमान कहलाती थीं। और चूँकि अब ईमान का कोई गारत गर न रहा था लिहाजा ईमान ही ईमान था।

---

* दृश्य † निवास स्थान

नमाज़ रोजा बजाइफ गरये बेज़ारी । सुबह का भूला शाम को घर आया था । इसको उसकी रहमत भूला नहीं कहती । रहमत का दरवाजा तौबा के लिए हर वक्त खुला हुआ है बस दिल की सदाकत, इन्फ़ाल की सचाई, और एतराफ की पाकीज़गी दरकार हैं । बहर सूरत जवानी जैसी भी गुज़री हो मगर बुढ़ापा नूर ही नूर था । अलबत्ता बीवी से बेचारे मजबूर थे । खुद इन हज़रत की थानेदारी तो खत्म हो चुकी थी मगर बीवी अब तक घर में थानेदार थी । सबसे बड़ी बात तो यह कि खुदा न करे कि किसी बीवी के जहन में यह बात जम कर रह जाए कि उसका मियाँ अक्ल का ज़रा यूँ ही-सा है । फिर तो बीवी की बन आती है । शौहर को उंगलियों पर नचाना शुरू कर देती हैं । इस किस्म की बीवियों का मियाँ गरीब रोज बरोज दब्बू बनता चला जाता है । यही हाल यहाँ भी था । मौलवी रजबअली साहब तो बेचारे चोला बदलकर मर्दमोमिन बन गये थे मगर बेगम साहिबा के दमखम वही थे, थानेदारनियों वाले । इस वक्त जो बहस थी उसका खुलासा सिर्फ यह है कि इन दोनों की तन्हा औलाद नजमा अब शादी के काबिल थी । निस्बतें* तो बहुत सी जगह से आ रही थीं मगर मौलवी साहब हमेशा यह कहकर टाल दिया करते थे कि ग़ौर करूँगा इन्शाअल्ला । और बेगम साहिबा को दरअसल कोई निस्बत पसन्द ही न थी । वरना वह मौलवी साहब के ग़ौर करने की शायद परवाह भी न करतीं । ले देकर एक निस्बत ऐसी थी जिसके मुता-लिक आम खयाल भी था कि शायद नजमा की शादी उसी लड़के से हो जाए । यह वही लड़का था जो इस वक्त नजमा के साथ मौलवी और उनकी बेगम साहिबा के राज़ो न्याज़† सुन कर हँसता हुआ भागा था । अलीगढ़ कालेज का ग्रेजुवेट, जामा जेब, शरीफ तन्दुरुस्त मिजाज का नौजवान मौलवी साहब की हमशीरा मुअज्जमा मरहूमा की तन्हा निशानी शकील, जो अलीगढ़ से आते ही मुकाबले के इम्तिहान में बैठकर डिप्टी

* रिश्ते । † ढकी छुपी बातें ।

कलेकटरी के लिए चुना जा चुका था। मगर बेगम साहिबा की पशोव पेश सिर्फ यह थी कि वह लड़की अपने किसी अजीज को देना चाहती थीं, बजाए इसके कि मौलवी साहब के किसी अजीज को दी जाए। और इस सिलसिले में खुद उनकी बहिन का लड़का सरदार हुसैन उर्फ बब्बू मियाँ हर एतबार से उनके नजदीक मुनासिब था, बशर्ते कि वह जरा आवारा न होता, थोड़ा सा पढ़ा लिखा होता और कुछ न कुछ तहजीब उसमें होती। मगर उसको इन रस्मी चीजों की क्या जरूरत थी। घर में अल्ला का दिया इतना मौजूद था कि बग़ैर नेक चलन बने, बग़ैर पढ़े लिखे और बग़ैर तहजीब और तमीज के ढकोसलों के वह बड़े मजे के साथ जिन्दगी भर आवारगी करता रहता तो भी बाप इतना कमा चुके थे हुण्डी के कारोबार में, कि रुपये की तंगी का कोई इम्कान न था। मगर मौलवी साहब उसके नाम पर लाहौल भेजा करते थे और साफ-साफ कह चुके थे कि इन्शाअल्ला यह निस्बत मेरे जीते जी न होगी।

बेगम साहिबा अब तक इनको समझा रही थीं कि शादी होने के बाद लड़के में खुशगवार तब्दीलियाँ पैदा हो जाएंगी। चाल-चलन सुधर जायेगा। जिम्मेवारी का ऐहसास पैदा होगा। हमारी नजमा की खुश-किस्मती इसी नालायक को लायक बनावेगी, और अगर यह भी न हुआ तो भी रुपया इतना है कि नजमा को कोई तकलीफ न होगी। शकील पढ़े-लिखे समझदार सैयद और शरीफ सही, मगर आखिर गरीब हैं। ज्यादा-से-ज्यादा वही डिप्टी कलेक्टरी की तनख्वाह और तनख्वाह से ज्यादा डिप्टी कलेक्टरी ठाठ। क्या खुद उठायेंगे और क्या बीवी के लिये छोड़ेंगे। मगर इनमें से हर एतराज का जवाब मौलवी साहब की तरफ से यही था कि "इन्शाअल्ला जो होगा बहतर ही होगा।"

नजमा को बब्बू मियाँ के नाम से बुखार चढ़ता था और वह उस वक्त के लिये मौत माँगती थी जब उसको अपनी जिन्दगी उस नामाक़ूल से वाबस्ता करना पड़े। शकील ने और भी उसके मयार इन्तखाब को

बुलन्द कर दिया था। उसके इस वक्त एक तरफ शकील था—जो शराफत का पुतला, तहजीब का पैकर, तालीमयाफ्ता और हर ऐतबार से एक पसन्द आने वाला नौजवान था और दूसरी तरफ वे हजरत थे जिनके मुतालिक पूछा जा सकता था कि ऊँट रे ऊँट तेरी कौनसी कल सीधी' चेहरे पर वही बाजारियत बरसती थीं जो इस किस्म के लोगों के चेहरे पर बरसने लगती है। पान कल्ले में दबाये, पटियाँ चिकनाए, उँग-लियों में सिगरेट दबाये फिर रहे है इधर से उधर। दोस्त हैं तो वे ऐसे ही। कोई कामदानी बनाने वाला जनाब का दोस्त है तो कोई बिसाती आपकी दोस्ती का दम भर रहा है। शौक सब देगची से और घटिया किस्म के कनकौवे के मैदान बदले जा रहे हैं। बटेरों की पालियाँ मुनक्किद की जा रही हैं या ज्यादा-से-ज्यादा तहजीब वाला बनने को जी चाहा तो मरहूम नाना साहब की ब्याज* से एक-आध गजल नकल करके चले गये किसी मुशायरे में और दाद वसूल कर लाये। इस सिल-सिले में तखल्लुस था जनाब का मजनूं। हालांकि यह तखल्लुस ऐसे-ऐसे मिसरों में भी ठूँसा गया था जिनमें अलग ही नजर आता था। मगर इन बातों की जनाब को परवाह न थी। गजल पढ़ते इस अन्दाज से थे कि हमेशा कव्वालों की टोली में रह चुके हों और लुत्फ आता था उस वक्त जब मौजूं मिसरे को नामौजूं पढ़ कर मरे हुए नाना की रूह को शर्मिन्दा कर दिया करते थे। ऐसे हमागी बेरहूदा को नजमा की ऐसी काबिल और समझदार लड़की अपने लिये तपेदिक न समझती तो क्या करती।

---

* नोट बुक

नज़मा न बहुत हसीन थी न उसके चेहरे में कोई ऐसी खास बात जिसको शायराना अन्दाज के साथ बयान किया जा सके। फिर भी उसे हसीना इसलिए कहा गया है कि अव्वल तो नाविल में एक हसीना का होना जरूरी है दूसरे ह[illegible] औरत का पैदायशी हक़ है और इस हक का मुतालबा* हर वह औरत [illegible]र सकती है जो बदसूरत न हो। गोरा रंग ही हुस्न के लिए जरूरी नहीं है, गेहुँए रंग में भी हुस्न होता है। हिरनियों की आँखें ही खूबसूरत नहीं होतीं, कभी-कभी बैल के-से दीदे अच्छे लगते हैं। और नर्गिसी आँखों का तो पूछना ही क्या। बड़ी आँख तो खैर बड़ी बात है मगर आँख का बीमार नजर आना भी तो हुस्न है। मुख्तसर† यह कि हुस्न का साफ पूछिये तो कोई मयार‡ ही नहीं। बाज लोगों को ऐसी औरतों के इश्क में मुबतिला देखा गया है कि जिनकी शक्ल हुस्न से कोसों दूर और बदशकली से करीबतर होती है। यहाँ तक कि आशिक-जार की ऐनक का नम्बर देखने वालों को गलत मालूम होने लगता है। मगर चूँकि इश्क का देवता अन्धा है लिहाजा इश्क को दरअसल हुस्न से कोई ताल्लुक नहीं। बल्कि हुस्ननजर उसको हसीन बना दिया करता है। खैर यह तो एक लम्बी बहस है और अन्देशा है कि बदसूरत औरतें इस बहस की मुखालफत शुरू कर देंगी। मगर हमारा खयाल दरअसल यह

---

* आकांक्षा। † संक्षिप्त। ‡ धरातल।

है कि वह जवान हो चुकी हो और बुढ़िया न हुई हो। बचपन और बुढ़ापे के इस दरमियानी वकफे में मामूली-से-मामूली शक्ल व सूरत की औरत किसी-न-किसी के लिये अपने में एक कशिश* जरूर रखती है। खैर नजमा तो वाकई इस एतबार से खूबसूरत थी कि वह मुकाबलाए हुस्न में शरीक होकर इनाम चाहे हासिल न कर सके मगर उसके चेहरे पर एक चमक थी, एक कशिश थी, और जिस्म के हिस्सों की सुडौलता में और बहैसियत तमाम, वह गजल का एक ऐसा शेर नजर आती थी जो अल्फाज की शक्ल अख्त्यार करने की बजाए मुजस्सिम† हो कर रह गया हो। मगर शायरी के जानकार उसको फिर भी उसको शेर समझ कर पढ़ें और झूम-झूम उठें। जहानत‡ उसके चेहरे पर बरसती और निगाहों में चमकती थी। शोखी और जराफत उसकी फितरत थी। अगर कभी-कभी बब्बू मियाँ का रूह फरसा खयाल उसको पसमुर्दा न कर दिया करता तो वह यकीनन एक सदाबहार फूल थी। जिसकी शगुफ्तगी के लिए बहार व खिजां की कोई कैद न थी। मौलवी रजब-अली साहब अब मजहबी किस्म के आदमी बन गये थे। वरना पहिले तो उनको इस पर भी कोई ऐतराज न था कि नजमा किसी अंग्रेजी स्कूल में बेपरदा रह कर तालीम हासिल करे। वह तो कहिये कि बेगम साहिबा की रोक-टोक ने इस्लामिया गर्ल्स कालिज में परदा के साथ उसको तालीम दिलवाई और इसके पूर्व कि मौलवी रजबअली साहब मिस्टर से मौलवी बनें वह इन्टरेन्स पास कर चुकी थी। वह तो अब तक बी० ए० भी हो जाती मगर वालिद साहब का रंग ही बदल गला। फिर भी एक जहीन लड़की के लिए अपनी जहानत के सही इस्तेमाल के लिए इतना ही काफी था कि वह इन्टरेन्स पास कर चुकी थी। इन तमाम हालात के होते हुए उसके लिये वाकई क्योंकर मुमकिन था कि वह बब्बू मियाँ जैसे नौजवान को जो "मिजाज शरीफ" को रवानी में "मिजाज सरीफ" कह

* आकर्षण। † साक्षात ‡ बुद्धिमता।

जाया करते थे—लखनऊ को नखलऊ कहते थे। बात-बात पर अपने सिर अजीज की कस्म खाते थे। ऐसे शख्श को मजाजी खुदा, शरीकेहयात* कैसे बना लेती। वह तो दो मिनट भी उनसे बात करके उलझ जाया करती थी और उसकी समझ में कुछ न आता था कि उनकी बातों का क्या जवाब दे। अलबत्ता जब वह शकील से बात करती थी तो उसको महसूस होता था कि वह हमसखुन व हमनवाँ† के साथ है। बात-बात में बुद्धिमत्ता और असलियत, तहजीब और शाइस्तगी का दामन कभी हाथ से न छूटता था। बात करने का लुत्फ, जवाब पाने का लुत्फ। अकसर ऐसा भी होता कि शकील और बब्बू मियाँ एक साथ मौलवी साहब के यहाँ पहुँच जाते थे। उस वक्त नजमा को कभी तो शकील की अलीगढ़ वाली शोखियाँ लुत्फ देती थीं और कभी यह डर लगता था कि कहीं वह जानवर जिसका नाम बब्बू है खफ़ा न हो जाये या शकील को खफा न कर दे।

आज भी इत्तफाक से शकील के आते ही खुदा जाने बब्बू कहाँ से आ निकले। पहिले तो शकील को देखते ही आपने एक नारा बुलन्द किया—अग्वाह उस्ताद धरे हुए हो यहाँ। तुमको तो कहीं और ढूँढना ही बेकार है या घर पर या रास्ते में वरना यहाँ।"

शकील ने तहजीब से कहा—"और आपके नजदीक मुझको कहाँ होना चाहिये ?"

बब्बू ने कहा—"अमाँ ग़जब खुदा का। इतना बड़ा मुशायरा शहर में हो गया। दूर-दूर के शायर आये हुए थे। खलक़त खुदा की फट पड़ी थी। मगर तुम को जैसे इन बातों से कोई दिलचस्पी नहीं।"

शकील ने कहा—"इरादा तो हुआ था आने का मगर सवारी के लिए कोई तखल्लुस हीं न मिला, आखिर कैसे आता।"

---

* जीवन-साथी † अपने जैसा रुचि, स्वभाव वाला।

बब्बू ने बगैर समझे हुए कहा—"मगर लखनऊ फिर लखनऊ है। ऐसी-ऐसी गजलें लखनऊ वालों ने सुनाई हैं कि बाहर वाले मुँह देखकर रह गये—'मिसराए तरह भी तो गजब का था—

शायद की बहार आई, जंजीर नजर आई।

नजमा ने फौरन इम्तिहान लिया—"बब्बू भाई किस का मिसरा है यह ?"

बब्बू ने काबलियत से कहा—"मुशायरे का था मिसराए तरह और किसका होता। अरे भई यह तो इसलिए दिया जाता है कि उस पर गिरह लगाई जाये। इसी से शायर की काबलियत मालूम होती है। लखनऊ के एक शायर ने तुम जानते होगे शकील उनको, वह मीरन साहब हैं न कमीशन एजेन्ट, सिफर तखल्लुस है उनका। क्या खूब गिरह लगाई है। कहता है जालिम—

गेसू किसी जालिम के लहराए गुलिस्तॉं में।
शायद कि बहार आई, जंजीर नजर आई॥

नजमा ने कहा—"हाय गरीब मीर तेरा क्या हाल हुआ होगा यह गिरह सुन कर।"

बब्बू ने कहा—"मीर मुशायरे का ना। अरे साहब वह थे मीर मुशायरा असगर अली खाँ असगर रेलवे वाले।"

शकील से जब्त न हो सका—"आपने भी तो ग़जल पढ़ी होगी, इस मिसरे को किस तरह जिबह फरमाया है ?"

बब्बू ने कहा—"अजी खैर मैं क्या और मेरी गिरह क्या, मगर दो मर्तबा मुशायरा में पढ़वाया गया यह शेर। रुख जरूर नया निकाला है। तुम शायद पसन्द करोगे। उस्ताद मीरन साहब सिफर ने तो बहुत पसन्द किया है।"

शकील ने कहा—"तो खुदा न करे कि मुझे पसन्द आए।"

बब्बू ने जोश में कहा—"हाँ सुनो तो सही, तुम्हें मेरी कसम। अर्ज करता हूँ कि भई—

रंगीन डुपट्टे का उड़ता हुआ आँचल।
शायद कि बहार आई जंजीर नजर आई॥

नजमा ने हँसी जब्त करके कहा—"कोई हँसा तो नहीं इस पर?"

शकील ने फौरन बात संभाली—"हँसने के लिये मसखरों की क्या कमी है। मगर इसमें शक नहीं कि मिसरा अपना लिया है तुमने। रंगीन कह कर बहार को संभालना और दुपट्टे के बल से जंजीर बनाना यह तुम्हारा ही काम था।"

बब्बू आ गये चकमे में—"जब ही तो मैं कहता हूँ यार कि तू ऐसी अच्छी सूझ-बूझ रखता है शेर की। फिर भी न जाने क्या आफत है कि मुशायरों की तरफ रुख भी नहीं करता। तुम्हारी कसम ऐसे-ऐसे शेर सुने हैं रात के मुशायरे में, कि जागना वसूल हो गया।"

शकील ने घड़ी देखते हुए कहा—"मैं आपकी पूरी गजल सुनता मगर मुझे इसी वक्त जाना है। टैनिस मैच में आज लखनऊ के सबसे मशहूर खिलाड़ी और कलकत्ते के बोस का फाइनल है।"

बब्बू ने जरा निराश-सा होकर कहा—"ऊँह! बस तुम इसी गेंद बल्ले में रहे। अमाँ यह लौंडिहारपन अब छोड़ोगे भी या नहीं।"

खैरियत यह हुई कि ऐन उसी वक्त नजमा की वालिदा ने बब्बू को आवाज देकर बुलाया। बब्बू के जाते ही नजमा ने शकील से कहा—"अब आप तो चुपके से निकल जाइये मगर मेरे हक में दुआ कीजियेगा कि ये हजरत अपनी गजल कहीं मुझे न सुनाने बैठ जाएँ।"

शकील ने टोपी उठाते हुए कहा—"खुदावन्द करीम आप को इस

बदमजाकी से महफूज रक्खे। हालांकि आपको तो लुत्फ लेना चाहिए इन बातों से। ऐसे शायर हमेशा नहीं पैदा होते ? और अगर होते हैं तो फौरन फिल्म कम्पनियों में चले जाते हैं।"

नजमा ने कहा—"अब कहाँ जाते हैं फिल्म कम्पनियों में, अब तो वहाँ भी सही किस्म के शायर जा रहे हैं।"

शकील ने जाते हुए कहा—"अच्छा तो फिर यह खाकसार भी कोशिश करेगा। आदाबअर्ज।"

३

आज नजमा के पास न बब्बू साहब का गुज़र मुमकिन था न शकील साहब वहाँ जा सकते थे। इसलिए कि स्कूल की दो तीन सहेलियाँ आई हुई थीं और उन सहेलियों में साजिदा की वजह से एक अजीब धमा चौकड़ी मची हुई थी। साजिदा जहाँ हों वहाँ खामोशी और सकून का इमकान जरा मुश्किल से पैदा हो सकता है। इसको छेड़ उसको सता, इस तरफ कूद उस तरफ फाँद—हँसी, कहकहे, नकलें सारांश यह कि वह बजाते खुद एक मुस्तक़िल हंगामा की हैसियत रखती थी। जैसे ही उसको यह इतला मिली कि शकील आया हुआ है और वह नजमा के सिर थी कि किसी तरह कहीं से शकील को दिखा दे। नजमा जानती थी कि शरबते दीदार की उस प्यास की क्या वजह है। अगर यह जिद बब्बू साहब के लिए उसने की होती तो शायद नजमा को कुछ पशोपेश न होता मगर शकील के लिए वह अपनी पोजीशन मुस्तहकम* समझ रही थी फिर भी उसने इतना जरूर कहा :—

"आखिर आप इस कदर बेकरार क्यों हैं, किसी गैर मर्द को देखने के लिए ?"

हाजिर जवाबी देखिये कम्बख्त की। फौरन बोली—"बात यह है बहिन, कि हमारे यहाँ होती है तिबाबत, अब्बाजान हकीम हैं ना।

* महत्वपूर्ण।

थोड़ा बहुत दखल मुझको भी है तिब में। अब मैं उन साहब को देखकर तुम्हारे बाज अमराज की तसखीस* करना चाहती हूँ।"

बाकी दो सहेलियाँ नरगिस और रेहाना हँस दीं। नजमा ने कहा—"आप का बहुत बहुत शुक्रिया? मगर मैंने तो अपने किसी मर्ज का जिक्र आपसे नहीं किया है।"

साजिदा ने बड़ा हकीमाना चेहरा बनाकर कहा—"आपको बयान करने की जरूरत ही क्या है, मशाक़ हकीम और काबिल नब्बाज वह होता है जो बगैर हाल सुने सिर्फ चेहरा देखकर मर्ज की तह तक पहुँच जाए। जिस वक्त मुलाजिमा ने आकर यह कहा है कि शकील मियाँ आये हुए हैं उस वक्त आपके रुखेरोशन पर एक ऐसी मौज पैदा हुई थी जिसको हम हिकमा अपने तिब्बी नुक़ताए नजर से निहायत खतरनाक समझते हैं। इस किस्म के मौजू का अगर फोरी इलाज न किया जाए तो नतीजा जरा खराब निकलता है। ऐसे मरीजों को देखा गया है कि उनको पहिले इखतलाजं† की शिकायत होती है, फिर आँखों में पानी पैदा होने लगता है। इसके बाद भूख प्यास का ऐहसास कम हो जाता हैं। यहाँ तक कि आखिर में वह शिकायत पैदा हो जाती है जिसको मुहब्बत कहते हैं बल्कि बहुत से मरीजों को मुहब्बत भी नहीं इश्क हो जाता है।"

नजमा ने जलकर कहा—"चल दूर। बड़ी आई वहाँ से हक़ीम की बच्ची बनकर।"

साजिदा ने जरा संजीदगी के साथ कहा—"दोनों बातें सही हैं। हकीम की बच्ची भी हूँ और बड़ी बच्ची भी। मगर आप के इस गमजे की बदौलत मैं अपना इरादा तर्क नहीं कर सकती। मैं उस शख्स को जरूर देखूंगी जिसने मेरी मासूम सहेली को इस बुरे मर्ज में मुबतिला कर दिया है।"

---

* खोज। † धड़कन

नजमा ने कहा—"कुछ हवासों में है या नहीं, जो मुँह में आता है बकती चली जाती है। कम्बख्त की जबान में जैसे लगाम ही नहीं।"

नरगिस ने कहा—"खुदा के लिए ले जाकर कहीं से इस बला को झंका दो। कोई पूछे आप से कि अगर कुछ है तो आप कौन, आप से क्या मतलब ?"

नजमा ने कुछ कहना ही चाहा था कि साजिदा ने उसको चुप करते हुए कहा—"मैं कौन ? मुझ से क्या मतलब ? हाँ बहिन ठीक कहती हो। यह भी नई रौशनी का एक अन्धेरा है कि आजकल की लड़कियाँ इस किस्म के मामलात में बुजुर्गों से मशवरा ही नहीं करतीं। जब हम तुम्हारी उम्र के थे और हमको यही मर्ज हो गया था। एक शकील मियाँ को देखकर तो हमने सबसे पहिला काम यही किया था कि अपनी नानी जान मरहूमा से फौरन मशवरा किया। नानी जान आज हमने एक शकील मियाँ को देखा है और अब—

दिले नादाँ बहलता नहीं बहलाने से

बतलाइये क्या किया जाए ? नानीजान ने फौरन दिल को बहलाने की दुवा पढ़कर फूँक दी। मगर फिर भी यह शिकायत न गई तो मशवरा दिया कि अब तुम अपने मर्ज ही से दिल बहलावो। इसलिए कि उनको मालूम था कि—

दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना

'रेहाना ने नजमा को मश्वरा दिया—"तुम जीत नहीं सकोगी इस बलाए बेदरमा से, ले जाकर दिखा लाओ ना शकील साहब को।"

नजमा ने कहा—"तशरीफ लाइये। हालाँकि यह बड़ी बेइन्साफी है कि आप उन बेचारे को चुपके से देख लें और उनको खबर भी न हो कि उनका मुआइना हो रहा है। इसी कमरे में तो हैं बराबर वाले में, उस खिड़की से देख लो जाकर।"

साजिदा दौड़कर खिड़की के पास पहुँची और पहिले तो एक मिन्ट

तक बाहर झाँकती रही इसके बाद दौड़ी हुई आई और नजमा का मुंह दोनों हाथों में लेकर बिल्कुल अपने मुकाबिल किया। फिर एक हाथ से एक आँख का पपोटा उलटने लगी तो नजमा ने घबरा कर कहा—"यह क्या, आखिर यह क्या हो रहा है ? यह मेरी आँख पर मेहरबानी क्यों शुरू हुई है ?"

साजिदा ने कहा—"ठहरो जरा ! मुझे तुम्हारी आँख के उस नुक्स को देखना है जिसकी वजह से तुमको यह कनकौवा पसन्द आया है। एक बदतमीज़ सा इंसान। जिसको पान तक खाने का सलीका नहीं। मालूम होता है भाँड़ों के ताहिफा* से निकल भागा है या पान का गुलाम है।"

कुदरती तौर पर नजमा ने हैरत से कहा—"क्या ?" और गैर इरादी तौर हर झपटी चिलमन की तरफ, कि आखिर किस्सा क्या है। देखती क्या है कि बजाए शकील के सामने वाली कुर्सी पर बब्बू मियाँ वाकई पान के गुलमटे बने हुए बैठे हैं। उसने वहीं से हंसना शुरू कर दिया और साजिदा के पास आकर कहा—"अल्लाह न करे कि ये शकील भाई हों, ये तो बब्बू भैया हैं। शकील भाई इस तरफ पुश्त किये बैठे है।"

साजिदा ने ताली बजाकर कहा—"जिनाब का मर्ज रफ्ता रफ्ता खुलता जा रहा है। किस कदर बुरा मानकर फरमाया है कि अल्लाह न करे यह शकील हों। दुआ भी दुरुस्त है कि अल्ला न करे यह भाई हों। जजबा भी दुरुस्त कि अल्ला न करे उनकी ऐसी शक्ल और क़ता हो।"

रेहाना ने कहा—"उफ्फोह् री अफलातून ! पनाह नहीं है इसकी। मैं तो सच कहती हूँ कि इसको वकालत का इम्तिहान देना चाहिये था।"

---

* झुंड

नरगिस बोली—"और मुझे यह फिक्र है कि उस गरीब का क्या हाल होगा जो इसकी इस जहालत का जिन्दगी भर के लिए शिकार बनेगा।"

साजिदा ने कहा—"हाल क्या होगा, ज्यादा से ज्यादा यही कि मियां जी खैरियत चाहेंगे तो अपनी हदों में रहेंगे वरना दोनों कानों के बीच में सिर नजर आएगा। दूसरी बात यह कि मैं ठहरी लड़की जात मुझ से इस किस्म की बातें न किया करो। मुझे अगर इत्तफाक़ से शर्म आ गई तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

नजमा ने कहा—"शर्म आये, और तुम को, ऐसी बेशर्म नहीं है शर्म। कि तुम को अपना मरकज* बना ले।"

साजिदा ने दाद देने के अन्दाज से कहा—"सुबहान अल्ला! क्या शेर इरशाद हुआ है गोया लिटरेचर बघार गईं जनाबा एक ही जुम्ले में। मगर इस तरह बात टल नहीं सकती। मुझे अब किसी दूसरे कमरे से चल कर उनको भी दिखाओ, जिनको देखने की बजाए मैं उन हजरत को देख आई जो शेर बने हुए बैठे हैं।"

नजमा जानती थी कि अब इस जिद को पूरा ही करना पड़ेगा। लिहाजा दूसरे कमरे से ले जाकर शकील की जियारत भी इन मोहतरिमा को करा दी और उनके तुफैल में बाकी सहेलियों ने भी शकील को देख लिया—साजिदा ने नजरों ही नजरों में शकील को अच्छी तरह परखकर पहिले तो निहायत खामोशी के साथ उस कमरे का रुख किया जहाँ ये सब पहिले से बैठी थीं। इसके बाद दो चार मर्तबा सिर को यूं ही हिलाकर कहा—"हूँ, हूँ तो अब किस मंजिल पर है तुम्हारा मर्ज ?"

नजमा ने कहा—"पागल तो नहीं है। कैसा मर्ज, वह मेरे भाई हैं।" साजिदा ने मुँह बनाकर कहा—"अच्छा खैर होंगे खैर भाई ऐसे भाइयों का क्या ठिकाना। आजकल मेरे भी एक चचा [illegible] भाई!

---

* केन्द्र

मचले हुए हैं कि भाई की बजाए कुछ और यानी भाई के अलावा सब कुछ तो खैर क्या मगर बहुत कुछ बन जाएं। ये रिश्ते के भाई हमेशा खतरनाक होते हैं लड़की जात के लिए।"

नरगिस ने कहा—"लो और सुनो कम्बख्त अपना किस्सा भी उगल गई आखिर।"

साजिदा ने कहा—"अरे बहिन मैं तो अभी बहुत कुछ उगलूंगी। मुझको तो दरअसल तलाश थी किसी ऐसी राजदार सहेली की, जिसको चुपके चुपके अपनी दास्ताने मुहब्बत सुनाया करूं मगर यह नजमा वाला किस्सा ?"

नजमा ने हाथ जोड़कर कहा—"लिल्लाह मेरे हाल पर रहम करो। मुझे बख्श दो। चलो वह देखो चाए आ गई।"

इस वक्त तो खैर चाए आ जाने की वजह से यह किस्सा खत्म हो गया मगर साजिदा को अब भला कहाँ चैन। नजमा की वालिदा से चलते वक्त वायदा ले लिया कि कल नजमा को उसके यहाँ भेज देंगी और · पाया कि कल उसी के यहाँ सब दिन भर साथ रहेंगीं।

मौलवी रजब अली साहब से नजमा ने कहा—"तो इजाजत है ना अब्बाजान ! मैं शाम तक आ जाऊंगी ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शा अल्ला ।"

बेगम साहिबा ने कहा—"इन्शा अल्ला क्या, शाम को या तो तुम खुद जाकर ले आना या मैं नसीबन को भेज दूँगी । अकेली कैसे आवेगी वहाँ से रात केवक्त, ज्यादा अच्छा तो यही हो कि तुम खुद चले जाना ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"हाँ, हाँ इन्शा अल्ला । अच्छा अब तुम जाओ बेटी । फी उमान अल्ला ।" (ईश्वर की अमान में सौंपता हूँ)

बेगम ने कहा—"बस यहीं से बैठे हुए अमान अल्ला और मलका सुरैया करते रहो, यह नहीं कि बाहर जाकर लड़की को सवार करा दें ।"

नजमा ने जाते हुए कहा—"नहीं अम्मीजान वाजीफा पढ़ने दीजिये ना । मैं बैठी जाती हूँ गाड़ी में । साजिदा के घर ही की तो गाड़ी है और उनकी नौकरानी भी तो साथ है ।"

बेगम ने कहा—"अच्छा जाओ बेटी, इमाम जामिन की जामिनी ।"

नजमा जिस वक्त साजिदा के यहाँ पहुँची है तो नरगिस और रीहाना को साथ लिए साजिदा ड्योढ़ी ही में उसकी प्रतीक्षा में थी । चुनाचे उसे

गाड़ी से घसीट कर अपने से लिपटाते हुए कहा—"और भी सुना कुछ, आज तेरे वो भी आ रहे हैं।"

नजमा ने हैरत से कहा—"मेरे वो कौन होते? मैं कहती हूँ तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है। वाकई इलाज की जरूरत है।"

साजिदा ने उसको झंझोड़ते हुए कहा—"अच्छा खैर! बनना बाद में, वाकई शकील साहब भी आ रहे हैं। मैंने सोचा कि तुमको अकेला बुलाना ठीक नहीं है। वहाँ खाला जान और खालू जान की वजह से तुम दोनों आपस में बात भी न कर पाते होगे मगर यहां तो मैदान साफ है।"

नजमा ने उससे अपने को अलेहदा करते हुए कहा—"आप की इस तवज्जह और गरीब परवरी का शुक्रिया। मगर यह बकवास है क्या आखिर?"

नरगिस ने कहा—"अरे भाई किस्सा यह है कि आज इनके भाई जान ने भी अपने कुछ दोस्तों को चाए पर बुलाया है और उन दोस्तों की फहरिस्त में एक साहब शकील नैमानी अलीग भी हैं। इनका ख्याल है कि यह वही शकील साहब हैं।"

नजमा ने कहा—"ख्याल तो दुरुस्त है। मगर यह तवारद* है या खुश इन्तजामी कि एक ही तीर से दो दो हरिन शिकार किये गये हैं।"

साजिदा ने कहा—"मजमून लड़ गया भाई जान से। मैंने जब कल शाम को आकर अम्मी से कहा कि मेरी सहेलियाँ कल आ रही हैं तो मालूम हुआ कि भाई जान के कुछ दोस्त भी आ रहे हैं। मैंने भी कहा चलो अच्छा है। बयक क्रिश्मा दो कार भी है। फिर यह कि मैं इससे ज्यादह शायद तुम्हारी कोई और खातिर भी नहीं कर सकती।"

रेहाना ने कहा—"मुझ से सुनो साफ साफ! हम सब लोग और

---

* एक ही चीज दो जगह, या एक मजमून दो शायरों के खयाल में आ जाना।

बाहर शकील साहब वगैरह भी दरअसल तुफैलिये हैं जो दरअसल मेहमान आ रहे हैं यानी जनाब के होने वाले हमदम हमज़ाद* ।"

नजमा ने चौंक कर कहा—"कौन ? साजिदा के होने वाले दूल्हा ।"

नरगिस ने कहा—"हाँ, हाँ कप्तान सैयद । जिनके साथ इनकी निस्बत ठहरी हुई है । वह दरअसल इनके भाई साहब के हैं दोस्त, और यही दोस्ती इस हद तक रंग चुकी है कि रिश्तेदार बनने वाले हैं ।"

रीहाना ने कहा—"इस बर्के बला† के लिए है भी वह मुनासिब आदमी । फौजी अफसर ठहरा, कवाइद करा करा के बेगम साहिबा की तमाम तेजी दो दिन में रुखसत कर देगा । कहेगा अटेनशन, कुइक मार्च ।"

साजिदा ने कहा—"कहीं इस हवा में भी न रहना, मुझको भी अबाउट टर्न कहना आता है ।"

नजमा ने कहा—"वाकई तुम ठीक कहती हो । अकबर ने तुम्हारी ऐसी बेगम को पेश नज़र रखकर कहा था ।

अकबर डरे नहीं किसी सुलताँ की फौज से ।
लेकिन शहीद हो गये बेगम की नोज से ।

साजिदा ने कहा—"ऐसे रंगरूटों से मैं रौब में आ जाऊँ तो लानत है मुझ पर ।"

नरगिस ने कहा—"अरी कम्बख्त अब इस मामले में तो चुप रहा कर यह तेरे ही होने वाले मियां का जिक्र है । क्या वाकई तेरी आँखों का पानी बिल्कुल मर चुका है । सचमुच क्या जमाना आ लगा है ।"

साजिदा ने कहा—"सच कह रही हैं आप नानी अम्मां । आपके जमाने में तो आँखों का पानी इस कदर जिन्दा रहता था कि मियाँ का नाम आया और आपने उसी पानी में डुबकी लगाई । सवाल यह है कि अपने मियां के किस्से में अगर मैं न बोलूँगी तो कौन बोलेगा, तुम ? कान खोलकर सुन लो कि खबरदार जो मेरे उनके मामले में तुमने

---

*घनिष्ट मित्र जीवन-साथी । † छलावा ।

दखल दिया। शर्म नहीं आती तुमको। जवान जहान कँवारी लड़की और दूसरों के मियांओं में दखल दे।"

नजमा ने कहा—"खुदा की मार तेरी जबान पर, यह हद कर दी बेगैरती की।"

साजिदा ने कहा—"हाँ बहिन बेगैरती ना करूं तो क्या करूँ। मेरे कोई रिश्ते के भाई तो हैं नहीं कि उनकी खुशामद करती फिरूँ, कि आखिर इस भाई बने रहने से क्या फायदा, मियां बन जाए।

आ रही है चाह यूसुफ से सदा,
हैं मियां थोड़े यहाँ भाई बहुत।

एक दम से बाहर कमरे में कहकहों की आवाज बुलन्द हुई तो ये लड़कियाँ एक दम खामोश हो गईं। साजिदा की तमाम तेजी भी एक दम खत्म हो गई। या तो जबान कैंची की तरह चल रही थी या एक दम जैसे सन्नाटे में आ गई। रीहाना, नरगिस, और नजमा उस दरवाजे के पास पहुँच गईं, जिस पर चिलमन पड़ी हुई थी और ड्राइंगरूम का हर दृश्य सामने था। नरगिस ने नजमा के कान में कहा—"कप्तान सैयद तो वर्दी की वजह से यूं ही पहिचाने जा सकते हैं। सफेद सूट में साजिदा के भाईजान हैं। वह सामने जिनके सिर पर अच्छा खासा जंगल है बालों का, और वो क्रीम रंग की शेरवानी में मेरे भाई जान हैं उनका नाम ये बताएंगी रेहाना।"

रेहाना ने कहा—"और साजिदा के भाईजान का नाम इनसे पूछ लो।"

नजमा दौड़ कर साजिदा को भी पकड़ लाई। मगर इससे पहिले कि उससे कुछ पूछते साजिदा ने आते ही कहा—"मेरी आँखों में खाक! आज तो तुम्हारे शकील साहब अंग्रेजी लिबास में अच्छे खासे डारविन साहब नजर आ रहे हैं।"

बाहर की गुफ्तगू अब शबाब पर थी। शकील साहब इस वक्त चहक

रहे थे और उन्हीं को मीर महफिल की हैसियत हासिल थी। गुफ्तगू से यह अन्दाजा तो खैर हो ही चुका था कि उनमें से कोई भी एक दूसरे के लिए अजनबी न था।

सब आपस में पुराने दोस्त थे और मालूम हो रहा था कि मुद्दत के बाद इस तरह इकट्ठे हुए हैं। शकील इसी मौजू पर रोशनी डालते हुए कह रहा था—"मैं तो पहिले ही अर्ज कर चुका था कि न तुम खाली न हम खाली। सैयद ठहरे फौजी आदमी। बेचारे दोस्ती न निभायें तो कोर्ट मार्शल हो जाए।"

सैयद ने कहा—"अरे भाई कितनी मर्तबा मुआजरत तलब करूँ। शर्मिन्दा होने को वैसे ही तैयार बैठा हूँ। किस्सा दरअसल यह है कि जब से कोइटा से लखनऊ आया हूँ वाकई सरकारी कामों की वजह से निजी कामों का होश नहीं आया।"

शकील ने कहा—"और आज भी अगर होने वाली ससुराल का मामला न होता तो शायद ही जनाब तशरीफ लाते।"

साजिदा के भाईजान अख्तर साहब ने कहा—"खूब याद आया, शकील वह तुम्हारी शादी का मामला अब किस मंजिल पर है?"

"अभी तक इन्शाअल्ला के दायरे में चक्कर काट रहा है। मगर हम भी इसके कायल हैं कि—

जजबाए दिल जो सलामत है तो इन्शाअल्ला
कच्चे धागे में चले आयेंगे सरकार बन्धे।

साजिदा ने एक चुटकी ली तो नजमा बिलबिला कर भागी। वहाँ से उसके साथ ही सब लड़कियाँ चिलमन वाले दरवाजे से हट आईं। साजिदा ने आते ही कहा—"भई इस नजमा का मरदुवा है बड़ा बातूनी।" नरगिस ने कहा—"और खुद अपने कप्तान साहब के मुतालिक आपकी क्या राय है?"

नजमा ने कहा—"वह बेचारे किस काबिल हैं।"

साजिदा ने बात काट कर कहा—"अरे हाँ नजमा इन दोनों की

चौरियाँ भी तो सुनो—यह जो मेरी बड़ी चहेती सहेली बनती हैं बी नरगिस। इन कम्बख्तों को देखो कि अख्तर भाईजान के अलावा इनको कोई और जैसे जुड़ता ही न था। मेरे ही घर पर डाका डाला है और मेरे ही माँ जाए का दिल चुराए बैठी हैं। मगर उसके यहाँ भी अन्धेर नहीं हैं बदला भीं ऐसा मिला है कि वाह री तेरी शान, खुद इनके भाईजान इश्तियाक साहब वह जो शकील साहब के बराबर बैठे थे बुशशर्ट पहिने हुए, रेहाना के एक ही तीर नजर के ऐसे शिकार हो गये हैं कि उनका इश्क सबसे वाजी ले गया है।"

साजिदा की वालिदा ने कमरे में दाखिल होकर इस वेतकल्लुफी को तकुल्लुफ से बदल दिया, कि सब लड़कियाँ संभल संभल कर कायदे से वैठ गईं।

५

नजमा के लिए यह दौरे जिन्दगी निहायत महत्वपूर्ण दौर था। मौलवी रजबअली साहब हज बय्यत अल्ला शरीफ का इरादा फरमा चुके थे। मगर बेगम साहिबा ने यह शरयी पहलू निकाल दिया था कि उस वक्त तक हज का इरादा तकमील को नहीं पहुँच सकता जब तक कि जवान लड़की घर में बैठी है। उसकी शादी के फर्ज से सुबकदोष* होने के बाद ही हज का इरादा किया जा सकता है। मौलवी साहब ने हरचन्द फरमाया कि वह इन्शाअल्ला हो ही जाएगी मगर बेगम साहिबा मौलवी साहब के इन्शाअल्ला से कुछ ऐसी बे विश्वासी हो गई थीं कि इसको मौलवी साहब के तकिया कलाम से ज्यादा और कोई वक़त न देती थीं। बल्कि उनके लिए यह बहतरीन मौका था कि बब्बू मियाँ के टट्टू को आगे बढ़ाएं। आखिर एक दिन फिर इसी इरादे से विस्तृत और फ़ैसलाकुन गुफ्तगू करने के लिए मौलवी साहब के कमरे में मये पानदान के जा पहुँचीं। मौलवी साहब भी आखिर पुलिस के छंटे हुए थे। बीवी का इरादा कुछ संगीन नजर आता है, और इस पानदान के मायने यह हैं कि अब वह इत्मीनान से बैठ कर दिमाग चाटेंगीं। चुनाचे वह भी जान पर खेलकर तस्बीह एक तरफ रख कर तवज्जह देते हुए बोले—"खैरियत तो है ?"

---

* निवृत्त।

बेगम ने बैठते हुए कहा—"खैरियत क्या खाक होगी, जबकि तुम यह एक सिरे से भूले हुए बैठे हो कि एक जवान जहान शादी के काबिल लड़की के बाप हो। मैं यह पूछती हूँ कि आखिर साहबजादी को कब तक घुटने से लगाए बैठे रहोगे, और कान खोलकर सुन लो कि जब तक इस फर्ज से सुबकदोश नहीं होते हो, हज करने का इरादा भी न करना।"

मौलवी साहब ने कहा—"हज भी इन्शा अल्ला होगा और शादी भी इन्शा अल्ला होगी।"

बेगम ने कहा—"और सब कुछ इन्शा अल्ला बस इसी तरह हो जाएगा, कि तुम बैठे इन्शा अल्ला इन्शा अल्ला करते रहो। मैं कहती हूँ कि आखिर बब्बू में क्या खराबी है? समझा बूझा घर का लड़का है। यूं खराबियाँ किसमें नहीं होतीं। खुद अपनी ही जवानी पर गौर करो कि मेरी शादी से पहिले वह कौन थी मुई?"

मौलवी साहब ने आँखें बन्द करके कहा—"तू बड़ा रहीम है, तू बड़ा करीम है। न मेरे गुनाहों का कोई शुमार है, न तेरी रहमत का कोई अन्दाजा। तू ही बख्शने वाला है।"

बेगम ने पानदान खोलते हुए कहा—"कौन कह सकता था कि तुम एक दिन भी किसी शरीफ घराने की लड़की से निबाह कर सकोगे। और शादी के बाद भी कौन सी कमी कर दी थी तुमने। मुश्किल से एक महीना तक ढंग ठीक रखे होंगे, फिर वही।"

मौलवी साहब ने बात काट कर कहा—"खैर खैर! तो मेरा मकसद यह है कि अजीजी बब्बू मियाँ सल्मा के अतवार के अलावा न उनकी तालीमी हालत ऐसी है कि वह नजमा के शायांशान* हों, न इखलाकी हालत ऐसी।"

बेगम ने कहा—"बस तालीमी और इखलाकी हालत लिये बैठे रहो और टालते रहो यह किस्सा।"

---

* योग्य।

मौलवी साहब ने कहा—"सवाल यह है कि आखिर शकील के लिए तुम गौर क्यों नहीं करतीं।"

बेगम ने जलकर डली काटते हुए कहा—"फिर वही शकील ! हजार मर्तबा कह चुकी हूँ कि शकील के यहाँ सिवाय सरकारी नौकरी के और धरा ही क्या है ? तोबा करके कहती हूँ कि सरकारी वजीफों पर तो साहबजादे ने तालीम हासिल की है, नौकरी का क्या है आज है कल नदारद। इतना भी तो घर में नहीं है कि चार दिन इत्मीनान से बैठकर खा सकें और बीवी को खिला पहिना सकें। बब्बू में सौ ऐब सही, मगर रुपये को देखो उनके यहाँ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"न सिर्फ रुपया ही वह खूबी है कि तमाम अय्यूब* नजर अन्दाज कर दिये जाएं, और न महज गुर्बत वह ऐब है कि तमाम अच्छाइयों को भुला दिया जाए। तुमको नजमा की इफ्ताद तबियत† का अन्दाजा होना चाहिए, वह इन्शा अल्ला गुर्बत की जिन्दगी को बाग व बहार बना देगी। मगर खुदा न खास्ता महज रुपया हुआ और बाकी हर ऐतबार से कोफ्त, तो वह हसास‡ इस कदर है कि·····बेगम ने बात काट कर कहा—"ऐ बस रहने भी दो, बड़ी हसास है और बड़ी काबिल है। आखिर मैं भी तो थी, कौन से लाल जड़े हुए थे तुम में। अल्ला झूठ न बुलाए तो ऐब ही ऐब थे। मगर मर तो नहीं गई मैं, न कोफ्त हुई न कोफता। सब कहने की बातें हैं, लड़की जात को इन बातों से क्या।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"अब वह वक्त नहीं है। नजमा को काफी तालीम दी गई है, उसके लिए हमको तालीमयाफ्ता शौहर ढूंढ़ना चाहिये। वरना उस बेजबान का सबर पड़ेगा हम पर।"

बेगम ने गिलोरी मौलवी साहब की तरफ बढ़ाते हुए कहा—"तो क्या बब्बू पढ़ा लिखा नहीं है ? एक अंग्रेजी नहीं जानता, उर्दू तो माशा

---

* ऐब। † सुरुचि। ‡ भावुक।

अल्ला ऐसी फर फर पढ़ता है कि तबियत खुश हो जाए। शायरी तक करता है और अगर पढ़ा लिखा नहीं है तो हजारों रुपये की आमदनी का हिसाब कौन कर जाता है आकर।"

मौलवी साहब ने जरा तलखी से कहा—"तुमको साहबजादे साहब की आम शोहरत और बेरूनी* नेक नामियों का चूंकि इल्म नहीं है लिहाजा तुम इसको मामूली बात समझ रही हो। मैं अपनी सही राए जाहिर करने से गुरेज† कर रहा था, ताकि तुमको तकलीफ न हो। मगर अब मजबूरन कहता हूँ कि वह तो छटा हुआ आवारा, न सुधरने वाला हद तक खराब हो चुकने वाला लड़का है। सोहबत उसकी खराब, शौक उसके बाजारी, चाल चलन उसके शर्मनाक, हद तक खराब और तुम मुझ से कहती हो कि मैं अपनी लड़की का हाथ उसके हाथ में दे दूं। मेरी जिन्दगी में इन्शा अल्ला ऐसा हरगिज न होगा, और न आइन्दा मैं इस जिक्र को सुनना चाहता हूँ।"

मियाँ के बिगड़े हुए तेवर देखकर अब तो बीवी को भी होश आया। वह क्या जानती थी कि यह मौलवी साहब एक दम से कलाबाजी खाकर फिर थानेदार बन जाएगा। हैरत से पहिले तो मौलवी साहब का मुँह देखती रहीं और आखिर सिर्फ इस कदर कह सकीं—"अच्छा तो न करो उससे, फिर कोई और ढूंढ़ना मुनासिब सा लड़का। मगर यह नहीं हो सकता कि बब्बू के साथ न हो और शकील के साथ हो जाए।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"जो उसकी मर्जी होगी इन्शा अल्ला वही होगा। न तुम कुछ कर सकती हो न मैं कुछ कर सकता हूँ।"

बेगम ने चौंक कर—"किस की मर्जी, नजमा की?"

मौलवी साहब ने कहा—"नहीं साहब उसकी मर्जी, जिसकी मर्जी के बगैर हम और तुम साँस भी नहीं ले सकते, इस दरख्त की एक पत्ती भी नहीं हिल सकती, इस खाक का एक जर्रा भी नहीं हिल सकता।"

---

* बाहरी। † आनाकानी।

ऐन उसी वक्त बब्बू मियाँ कमरे में दाखिल हुए—"खाला जान तस्लीम। आदाबअर्ज खालू जान ! मैं तो तमाम घर में खाला जान आप को ढूंढ आया, यह अंगूठी दिखाने लाया था। देखिये कैसा लाजवाब हीरा है, कैसी आब है, क्या तड़प है ? फिर यह कि है कितना बड़ा।"

बेगम साहिबा ने कहा—"ए भैया ! भला मुझे क्या पहिचान, अपने खालूजान को दिखाओ।"

बब्बू ने कहा—"खालू जान भी क्या जानें, यह भी कोई सरका नकबजनी का मुजरिम है जिसको खालूजान पहिचान लें अपने तजुर्बे से काम लेकर। आप की दुवा से खालाजान जवाहरात के मामले में वह नजर रखता हूं कि बड़े बड़े जोहरी लोहा मानते हैं। परसों ही का वाकिया है एक दाना नीलम का आ गया था, कबूतर के अण्डे के बराबर। तमाम जौहरियों में खलबली सी मच गई थी। आखिर लाला गिरधारी लाल ने लाकर मुझे दिखाया। मैंने फौरन उनको बता दिया कि इसके जिगर में दाग है, और इस दाग ने इसका नाश मार दिया है। तो मतलब कहने का यह है कि आपकी दुवा से इतनी सूझबूझ तो इस गुलाम को भी हासिल है।"

मौलवी साहब को उससे उलझन हो रही थी। लिहाजा वह बात टालने के लिए नमाज को खड़े हो गये और बेगम साहिबा अपने अजीज अज जान भानजे को साथ लेकर अपने कमरे में चली आईं। इसलिए कि जो बातें वह इस वक्त बब्बू मियाँ से करना चाहती थीं वह मौलवी साहब की मौजूदगी में नामुमकिन थीं। अपने कमरे में पहुँच कर और हर तरह का इत्मीनान करके, कि इस वक्त यहां से करीब भी कोई और नहीं है। निहायत सरगोशी के अन्दाज में भानजे से कहा—"अभी इसी जिक्र के लिए गई थी। मगर भैया तुम्हारी हरकतों ने तो वह शौहरत हासिल की है कि कोई बात उनसे छुपी नहीं है। फिर यह भी तो सोचो कि नजमा

आखिर मेरी भी औलाद है। मुझे खुद तुम्हारी हरकतें एक आँख नहीं भातीं।"

बब्बू ने कहा—"मगर खाला जान ! आप ही के सिर अजीज की कसम, यह तो आप की पुरानी शिकायतें हैं। अब तो आपकी दुवा से मैंने हर बुरी राह से कतराना शुरू कर दिया है। हस्सो से कता ताल्लुक, घुड़दौड़ खत्म, कबूतर सब बेच डाले। आखिर अब और आप क्या चाहती हैं, बकौल शायर। अब और क्या चाहता है जालिम, तेरे इशारों पे चल रहे हैं।"

बेगम साहिबा ने कहा—"बस यही बेतुकापन है तुम्हारा, कि खाला को जालिम कह रहे हो, जबान के आगे खन्दक जो है।"

बब्बू ने कहा—"वह तो खैर शायराना बात थी मगर वाकई बताइये कि अब मैं और क्या कर सकता हूँ।"

खाला ने भानजे के और करीब खिसक कर देर तक न जाने क्या काना फूंसी की। सिर्फ कभी-कभी बब्बू मियाँ की गर्दन हिलती थी और खालाजान जो इस वक्त अदाकारी के तमाम कमालात काम में ला रही थीं मालूम होता था कि सिनेमा की उस जमाने वाली कोई परछाई हैं जब फिल्में गूंगी हुआ करती थीं। आखिर आध घंटे के बाद खाला का मुंह भानजे के कान के पास से हटा और बब्बू मियाँ ने जाते हुए कहा—"अब यही होगा और आपके हुक्म की हरुफबाहरुफ तामील होगी। मालूम नहीं क्या हुक्म था और क्या तामील।"

९

नजमा की सहेलियों में साजिदा जिस कदर तेज और देखने में जरूरत से ज्यादा बेतकल्लुफ नजर आती थी उसी कदर वह संजीदा और सोच-विचार वाली भी थी। और नजमा के लिये जो जजबा उसके दिल में हमेशा से मौजूद था इसका अन्दाजा खुद नजमा को भी था। यही वजह थी कि अपना दुःख-दर्द अगर किसी से कह सकती थी तो वह साजिदा थी। साजिदा की गहरी नजरों से यह हकीकत तो खैर छुप न सकी कि नजमा अपने दिल में शकील के लिये उमंग को पनपा रही है। मगर इससे ज्यादा उसको कुछ और मालूम न था बल्कि वह मुन्तजिर थी कि अगर इस मजाक को कभी कोई संजीदगी हासिल हुई तो नजमा उससे कहे बगैर न रह सकेगी। हालाँकि उसको यह भी मालूम था कि नजमा उन लड़कियों में से नहीं है जो हर उस उम्मीदवार से यकसां किस्म का मेल-जोल पैदा कर सकती हैं जिन-जिन की निस्बतें आती हैं। इस किस्म की लड़कियाँ दरअसल किसी सखशियत से सम्बन्ध पैदा नहीं करती हैं बल्कि शौहर के खयाल से उनका मेल होता है। अब यह लेबिल जिस सख्श के भी लग जाए। नजमा उन लड़यिकों से बिलकुल मुख्तलिफ साबित हुई थी। उसकी भावुकता की नजाकत और उसकी भावनाओं की कोमलता का साजिदा को अन्दाजा था। और वह इस कदर उस राज को पा चुकी थी कि नजमा अपना इन्तखाब कर चुकी है। मगर यह इन्तखाब

सरकारी तौर पर पक्का नहीं हुआ था यानी अब तक नजमा के वालदैन की राय जाहिर नहीं हुई थी। यही वजह है कि साजिदा को अपनी जगह पर बेचैनी सी थी कि किस तरह नजमा से इस सिलसिले में गुफ्तगू करके किसी नतीजे पर पहुँच सके। चुनाचे एक दिन वह मौका निकाल कर तन्हा ही नजमा के यहाँ आ मौजूद हुई। नजमा आजकल जिस आलम से गुजर रही थी इसका अन्दाजा सिर्फ उसी को था। और ऐसे आलम में उसको साजिदा का अकेला आ जाना कुछ ऐसा मालूम हुआ जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल जाए। साजिदा को देखते ही दौड़ कर उससे लिपट गई।

"अरी मेरी साजिदा आ गई। मैं अगर इस वक्त बादशाहत भी माँगती तो मिल जाती। दिल चाह रहा था कि किसी तरह तुम ही से मिल लूँ।"

साजिदा ने शरारत भरी नर्मी से कहा—"जो मुझे सदाकत और सच्चे दिल से याद करता है मैं उनसे दूर नहीं रहती।"

नजमा ने भी शरारत से कहा—"मसलन कप्तान सैयद।"

साजिदा भला शिकस्त खाने वाली थी। फौरन जवाब दिया—"हाँ सच्ची चाहत तो मुमकिन है। मगर खुदगर्जी के साथ चाहत के लिये शर्त अव्वल यह है कि बेलौस हो।"

नजमा ने कान पकड़ कर कहा—"तू जीती मैं हारी। ऐसी बेहया को मेरे फरिश्ते भी शर्मिन्दा नहीं कर सकते। मगर आज तुम कुछ संजीदा-सी नजर आ रही हो?"

साजिदा ने कहा—"और नहीं तो क्या, मैं कोई आपके दरबार की मसखरी तो हूँ नहीं कि अब जवाबदेही करती फिरूँ कि किसी वक्त संजीदा क्यों हुई।"

नजमा ने कहा—"सवाल यह है कि आखिर तुमसे किस जबान में गुफ्तगू की जाये जो तुम आदमियों की तरह जवाब दो। कैसी ही

जरूरी बात कितनी ही संजीदगी से की जाए, जवाब ऐसा मिलता है कि खुद शर्मिन्दा होना पड़े। मैं देख रही हूँ कि आज तुम्हारे चेहरे पर वह बशाशत* और वह बेपरवाही नहीं है जो तुम्हारा तुर्राह इम्तियाज† है।"

साजिदा ने कहा—"इस तरह से गोया आप अपनी सलाहियत नजर‡ का सबूत दे रही है। हालाँकि मैंने खुद कई मर्तबा कहा है कि तुम माशाअल्ला समझदार हो।"

नजमा ने झुँझला कर कहा—"अरे भई सुना कि नहीं, कब तक इस किस्म की किताबी और अदबी गुफ्तगू होती रहेगी। मोटे-मोटे अल्फाज में आड़ी-तिर्छी इजाफतें लगा-लगा कर आदमियों की-सी बात करो और यह बताओ कि किस्सा क्या है?"

साजिदा ने हँसकर कहा—"अब की है तुमने अपनी मादरी जबान में बातचीत, तो जवाब भी तुमको शायद ठीक-ठीक मिल जाये। कि परे-शानी मेरी अपनी नहीं है बल्कि मैं तुमसे बातचीत करने के बाद अपने दिल के इस बोझ को हल्का करने आई हूँ जो तुम्हारी तरफ से ख्वाम-ख्वाह अपने दिल पर लिये हुए हूँ।"

नजमा ने ताज्जुब से पूछा—"मेरी तरफ से तुम्हारे दिल पर बोझ! क्या मतलब?"

साजिदा ने कहा—"देखो बनने, मुकरने और चिन्दराने की शर्त नहीं है। इस किस्म के कर्तब अदना किस्म के मदारी किया करते हैं। साफ-साफ मुझको बताओ कि शकील साहब का किस्सा किस हद तक पुख्ता है और किस हद तक खाम§ है? इतना तो खैर मैं भी समझ चुकी हूँ कि इन हजरत ने मेरी भोली-भाली सहेली को अपना लिया है मगर खाला जान और खालूजान के क्या खयालात हैं? यह सिलसिला जिन

---

* प्रफुल्लता। † विशेषता। ‡ योग्यता।

§ कच्चा।

यानी बाकायदा भी हो चुका है या नहीं। किस्सा दरअसल यह है कि तुम हो इस कदर बेवकूफ कि तुमसे मुझको हर वक्त यह डर रहता है कि कहीं नुकसान न उठा जाओ।"

नजमा ने इधर-उधर देख कर कहा—"खुदा के लिए जरा आहिस्ता बोलो, बराबर वाले कमरे में अम्मीजान मौजूद हैं। आओ चलो ऊपर के कमरे में चलकर बैठें।"

साजिदा ने उठते हुए कहा—"ऊपर चलो या जहाँ जी चाहे। मगर इसके लिये तैयार होकर चलो कि आज तुम्हारी बाकायदा मरम्मत की जायेगी। गजब खुदा का कि अब साहबजादी इस काबिल भी हो गईं कि हमसे भी राजदारियाँ होने लगीं।"

ऊपर के कमरे में पहुँच कर नजमा ने इत्मीनान की साँस ली। अब उसको इत्मीनान था कि यहाँ इन दोनों की गुफ्तगू सुनने वाला और कोई नहीं है। आखिर जब साजिदा ने कहा—"हाँ बोलो!" तो उसने साजिदा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा—"साजिदा तुमको मालूम है कि आज तक मैंने तुमसे कोई बात छुपी हुई नहीं रखी। मगर इस किस्से में इतनी पेचीदगियाँ हैं कि अब तक मैं खुद किसी नतीजे पर नहीं पहुँची हूँ।"

साजिदा ने कहा—"मेरा खयाल सही निकला। मुझको यह अँदाजा हो चुका था कि किसी अन्दरूनी कशमकश में मुबतिला हो। यही वजह है कि आज खुद मैं बेग़ैरत बनकर वह हालात मालूम करने आई हूँ जो तुमको खुद बता देना चाहिये थे। हाँ तो क्या पेचीदगियां हैं?"

नजमा ने पहले तो शुरू से आखिर तक अपने खान्दानी हालात उसको समझाए इसके बाद शकील के मुतािल्लिक बताया कि उसने किन मुश्किलात का मुकाबला कर के तालीम हासिल की और क्या-क्या जतन करने के बाद अब वह इस काबिल हुए की डिप्टी कलेक्टरी के मुकाबिले के इम्तिहान में कामयाब हो सका है। उसका तन्हा ऐब उसकी गुर्बत है, और उसके मुकाबिले पर बब्बू मियां हैं। जिन में सिवाय इसके कोई

खूबी ही नहीं कि रुपये की इफरात* है। वह भी उनका कमाया हुआ नहीं बल्कि उड़ाने से जो बच रहा है उसका जिक्र है।" बब्बू की जिन्दगी पर पूरी-पूरी रोशनी डालने के बाद नजमा ने निहायत कष्ट के साथ कहा—"मुझ कम्बख्त की वजह से शकील को इस गिरावट में गिराया गया कि उसका मुकाबला बब्बू जैसे घटिया इन्सान से किया जा रहा है।"

साजिदा ने कुछ देर खामोश रहने के बाद कहा—"खैर यह तो नामुमकिन है कि बब्बू कामयाब हो सके। इस किस्म के हालात में इस किस्म के लोग अगर बीच में न आ जाया करें तो इन वाकियात की अहमियत ही कम हो जाए। मगर सवाल तो यह है कि खालाजान को वाक़ई क्या हो गया है।"

नजमा ने कहा—"इनको कोई नई बात तो हुई नहीं है—रुपये की पूजा तो हमारे घराने का पुराना रिवाज है। रुपये-पैसे के लिये जितने कतल हमारी ननिहाल में हुए हैं शायद ही किसी खानदान में कभी हुए हों। उनको तो इसकी जरूरत होती है कि रुपयों की झंकार सुन लें। बस फिर न किसी ऐब में कोई ऐब है न किसी हुनर की जरूरत है। अब यह हद नहीं तो और क्या है कि बब्बू के मशागिल† उनकी निगाहों के सामने हैं। यह भी तय है कि मैं उनकी सौतेली लड़की नहीं बल्कि उनकी ममता की सीधी हकदार हूँ······मगर मेरी कुर्बानी भी उनको मंजूर हैं।"

साजिदा ने कहा—"तोबा-तोबा, सच-मुच निहायत नफरत भरी जहनियत है। बहिन माफ करना वह तुम्हारी मां है। मगर मुझे तो जैसे उनसे घिन-सी आने लगी, यह हालात मालूम करके। मगर देख लेना कि अव्वल तो खालूजान उनकी कोशिशों को कामयाब न होने देंगे और अगर खालूजान ने भी कमजोरी दिखाई तो ख्वाह कुछ भी हो मगर

---

* बहुतायत। † शौक।

यह तय है कि बब्बू मियां की दाल न गलने दूँगी। खुदा की कसम यह तो जुर्म है। मैं पूछती हूँ मार डालने में और इस किस्म की शादी करने में फर्क ही क्या है।"

नजमा ने कहा—"तुमको मालूम नहीं कि अम्मी जान किस कदर खतरनाक साबित हुई हैं। अब इस किस्म के मामलात में आजकल अब्बाजान को राम* करने की तदबीर हो रही है और शकील से तो उनको लिल्लाही† बैर है। हालाँकि वह जिस कदर अम्मी जान का एहतराम‡ करते हैं और इन बातों के बावजूद सम्मान करते हैं। बब्बू सौ मर्तबा मर कर जन्म लें तो भी उससे वह एहतराम और वह खयाल मुमकिन नहीं है।"

साजिदा ने कुछ देर के लिये किसी खयाल में अपने को गुम करके कहा—"अच्छा अब तुमको मेरी ही कसम है जो इस सिलसिले में अपने को जरा भी घुलाओ। निहायत इत्मीनान से बैठी मजे करती रहो। खालाजान के खयाली पुलाव को पकने दो, खूब अच्छी तरह। आखिर में जाकर देखना कि वह खुद मुँह देखकर रह जायेंगी। मैं आज ही भाई जान को जाकर अपनी साजिश में शरीक करती हूँ ताकि शकील साहब के हालात का अन्दाजा भी होता रहे।"

नजमा ने कहा—"खुदा के लिये कोई हंगामा न पैदा कर देना। रह गया उनके हालात का अन्दाजा, तुम यूँ ही कर सकती हो। वहाँ तो न कोई साजिश है न कोई दांव-पेंच।"

साजिदा ने कहा—"खैर मुझे आपके मशवरों की जरूरत नहीं है। मेरी स्कीम में दखल देने का आपको कोई हक नहीं है।" नीचे से मुलाजिमा ने आकर कहा—"आपको अम्मीजान बुला रही हैं। चाय तैयार है।"

साजिदा ने छूटते ही कहा—"यूँ नहीं यूँ कहो—

---

* सहमत। † भगवान के यहाँ का। ‡ सम्मान।

बैठी नाहक ही हौले खाती हैं । अम्मीजान आपको बुलाती हैं ॥
रुख पे गेसू* हवा से हिलते हैं । चलिये अब दोनों वक्त मिलते हैं ॥

नजमा ने कहा—"हाय कमबख्त तुझको जहरे इश्क तक याद है ?"

साजिदा ने उठते हुए कहा—"जरूरत पड़ा करती है अक्सर तुम जैसे मरीजों के लिये । फकीर की झोली में सब ही कुछ है बाबा ।"

नजमा ने कहा—"अच्छा चलिये शाह साहब । बिस्मिल्ला ।" दोनों हँसती हुई नीचे उतर आईं ।

---

* बाल ।

७

मौलवी रजब अली साहब पैन्शन लेने के बाद जब तौबा और रोजा नमाज की तरफ मतवज्जह हुए तो आपने हजरत शाह अब्दुलमनान साहब सिजदा नशीन दरगाह हजरत मखदूम सुभानअल्लाह शाह रहमत उल्ला अलिया के दस्त मुबारक पर बैयत फरमा कर जावराह सफर आखिरत फराहम* करना शुरू किया था। हजरत शाह साहब किबला से जो दीवाना वार अकीदत मौलवी साहब को थी वह जाहिर ही है। जिस पीर की करामात जिन्दगी भर के बदतरीन गुनाहों को यकसर धो डाले और बंदा शैतान को शायान रहमत† बना दे। उससे अकीदत न होने का माइनी ? मौलवी साहब के लिए यह नामुमकिन था कि हजरत शाह साहब किबला के किसी हुक्म को कभी टालने की जुर्रत कर सकें। घर पर हकूमत मौलवी साहब ही की थी, मगर सिक्का शाह साहब किबला का चलता था। इस हकीकत से मौलवी साहब की बीवी से ज्यादा और कौन बाखबर हो सकता था। चुनाचे जब वह खुद उनको बब्बू मियां के सिलसिले में नाकामी नजर आई तो तब हजरत शाह साहब किबला याद आए और याद भी इस तरह आये कि बब्बू मियां को मौलवी साहब की शफकतों का मरकज बनाने के लिए उस रोज देर तक यही समझाया बुझाया कि तुम कुछ और न करो, बस सीधे

---

* प्रस्तुत † सुहृदय

शाह साहब के पास जाकर बयत[1] कर लो। फिर देखो तुम्हारे मुतालिक तुम्हारे खालूजान की राय कैसे बदलती है। बब्बू मियां के लिए यह क्या बड़ी बात थी। विश्वास करने का मामला होता तो दिल को टटोलते, रूह का जाइजा लेते, सोचते समझते विचारते फिर अपने को पीर के सुपुर्द करने का फैसला करते। मगर यहाँ तो विश्वास नहीं, बल्कि इन्त-जामन मुरीद होने की जरूरत महसूस कर रहे थे। लिहाजा दूसरे ही दिन नहा-धोकर असर कबूल करने और पशेमानियों[2] का मेकअप करके शाह साहब किबला की खिदमत में हाजिर हो गये और रो-रोकर अपने गुनाहों से तोबा करने के बाद अपने को मुरीद[3] की हैसियत से पेश कर दिया। शाह साहब बेचारे नेक बुजुर्ग अल्ला वाले यह क्या जानें कि उस बहरूपिये में क्या है। थोड़े बहुत हीले-हवाले के बाद मुरीद कर लिया। यह खबर ऐसी न थी कि मौलवी रजबअली साहब तक फौरन न पहुँ-चती। बब्बू मियाँ के पहुँचने से पहिले ही यह इत्तला उनको मिल गई और वह नक्श हैरत[4] बनकर रह गये कि यह क्या इन्कलाब है। थोड़ी ही देर मे मिठाई लिए खुद बब्बू मियाँ भी आ मौजूद हुए और खालू से बगलगीर होते हुए कहा—

"खालू जान मेरी इस बेदारी[5] का बाइस आप और सिर्फ आप हैं। रात मैंने आपको ख्वाब में देखा। देखता क्या हूँ कि एक जगह घास पर मैं बेहोश पड़ा हूँ, मगर इतना होश है कि मैं दो आदमियों की बातें बराबर सुन रहा हूँ। एक आप हैं और दूसरे हजरत साहब किबला। आप हजरत साहब किबला से बार-बार फरमा रहे हैं कि हजूर यह भी आप ही का गुलाम है। आखिर यह कब तक इस आलम में पड़ा रहेगा। आप अगर चाहें तो इसको भी सहारा देकर उठा सकते हैं और राह से लगा सकते हैं। आखिर हजरत साहब किबला ने फरमाया—रजबअली

---

१ शागिर्द बनना। २ पश्चाताप। ३ शिष्य। ४ आश्चर्य की प्रतिमा। ५ जागृति।

तुम्हारी खुशी यही है तो लो यह। यह कहकर हजरत साहब किबला ने मेरा बाजू पकड़कर मुझको उठाया और फरमाया कि बब्बू मियां यह सहारा पाकर सम्भल जाओ। फौरन मेरी आँख खुल गई और मैंने अपने पास बाजू को जहाँ हजरत साहब किबला का दस्ते मुबारक छुआ था मुअत्तर पाया। अर्से से मैंने इत्र नहीं लगाया था, मगर आला दर्जे की हिना की खुश्बू मेरी नाक में बराबर आती रही और अब तक वह खुश्बू मेरी बाजू पर मौजूद है, सूंघ लीजिए आप भी।"

मौलवी रजब अली साहब ने बाजू सूँघकर कहा—"सुभान अल्ला! इन्शा अल्ला यह खुश्बू तुम्हारी रूह को भी मुअत्तर कर देगी। मियाँ साहबजादे मुझे तुम्हारी किस्मत पर रश्क* है कि तुम इस कम-उमरी में इस रास्ते पर आ लगे, जो मुझको अब नसीब हो सका है। हजरत की तवज्जह किस्मत वालों को ही नसीब होती है।"

बब्बू ने कहा—"खालू जान और तो खैर कुछ नहीं, मगर आज मुझको यह जरूर महसूस हो रहा है जैसे काफी मुद्दत के बाद कोई नहा-धोकर हल्का फुल्का हो जाए। न वह सिर में दर्द, न वह जमीर की मलामत, न दिल चोर है, न खयालातों में कोई अस्तव्यस्तता। ख्वाब देखने के बाद से तो मुझ पर एक तल्लीनता सी छाई हुई थी और हजरत साहब किबला ने जिस वक्त से गुलामी में कबूल फरमाया है उस वक्त से यह आलम है, जैसे कोई मंजिल पर आकर सन्तोष की साँस ले। मालूम यह होता है कि जैसे सब कुछ मिल गया, सब ही कुछ खालूजान!"

मौलवी साहब ने प्रभावित होकर फरमाया—"इन्सा अल्ला अब तुम्हारी जिन्दगी बागोबहार बनकर रहेगी। मियाँ गुनाह स्वादिष्ट जरूर है, मगर उसका स्वाद सीमित होता है। दिल उसके आनन्द का कभी कायल नहीं होता। हर गुनाह के बाद खुद अपना ही दिल मलामत

* ईर्षा।

करता है। गुनाह की लज्जत की इनतिहा पश्चात्ताप ही होती है, मगर यह आनन्द और ही है। इसका लुत्फ दिल व दिमाग और आत्मा तक महसूस करती है। इसकी न कोई हद है न सीमा। इसलिए इस परिणाम पर पहुँचकर एक ताजा उमंग पैदा होती है और यही उमंग एक नये निर्माण का दरवाजा हमारे सामने खोल देती है। ये दरवाजे एक के बाद दूसरे खुलते जाते हैं। प्रकृति हमारे सामने बेनकाब होती रहती है और हमको दिन प्रतिदिन महसूस होता जाता है कि हम प्रकृति के अपराधियों में से हैं। यह गौरव आत्मा को वह प्रतिभा प्रदान करती है जो गुनाह की हालत में मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। गुनाह नाम है अनुचित साधनों द्वारा प्राप्त की हुई झूठी खुशी का, और पाकबाजी नाम है उस खुशी का जो इन्सान को नख से सिख तक खुशी ही को उसका वातावरण और खुशी ही को उसका स्वभाव बना दे।"

बब्बू मियाँ ने यकायक घबराकर कहा—"नमाज का वक्त आ गया खालूजान।"

मौलवी साहब ने खुश होकर फरमाया—"जिजाकअल्ला, इन्शा-अल्ला अगर इसी तरह तुम कुछ दिन तक पाबन्द रहे तो यही पाबन्दी तुमको आजाद कर देगी, यानी फिर यह तमाम बातें खुदबखुद होती रहेंगी जिनको तुम इस वक्त अपने ऊपर थोपने की कोशिश कर रहे हो। नमाज के वक्त फिलहाल तुम्हें याद रखने पड़ते हैं और कुछ ही दिनों में तुम्हारे स्वभाव में शामिल हो जाएँगे। वजू कर लो तो जमाअत के साथ नमाज अदा कर ली जावेगी।"

वजू करने के बाद जिस वक्त मौलवी साहब और बब्बू मियाँ नमाज पढ़ रहे थे शकील यह तमाशा देखता हुआ उधर से गुजरा और तेज कदम बढ़ाता हुआ नजमा के पास जाकर बोला—"अल्ला अकबर! क्या इन्कलाब है, बब्बू मियां और नमाज?"

नजमा ने मुस्कराकर कहा—"मन खूब भी शनासम पीरान पारसा रा।"*

शकील ने कहा—"मगर यह मामला क्या है ?"

नजमा ने ताज्जुब से कहा—"क्या अब तक आप के यहाँ मिठाई नहीं पहुँची ?"

शकील ने और भी ताज्जुब से कहा—"मिठाई ! कैसी मिठाई ?"

नजमा ने कहा—"वाह वाह ! फिर आप इस नमाज की हकीकत क्या खाक समझेंगे ! अरे साहब बब्बू मियां आज हजरत किबला के मुरीद हुए हैं। रात को ख्वाब में खुदाई प्रेरणा हुई कि मुरीद हो जाओ। अतः सत्तर चूहे खाने के बाद आज यह बिल्ली हज को आई।"

शकील ने बेपरवाही से हँसकर कहा—"खूब खूब, तो गोया अब बब्बू मिया भी हम लोगों के लिए पवित्र हो गये।"

नजमा ने कहा—"पवित्र ही नहीं बल्कि प्रसाद—यह दरअसल कोई चाल चली गई है।"

शकील ने उसी बेपरवाही से कहा—"अजी लाहौल विला कूवत, इस किस्म की ओछी बातों में क्या धरा है। मामूजान अब ऐसे भी नासमझ नहीं कि वह इन बातों को न समझ सकें।"

नजमा ने कहा—"आपका खयाल दुरुस्त नहीं। जिस रुख से उन पर हमला किया गया है वह रुख आजकल उनका बहुत कमजोर है। हजरत साहब किबला के एक इशारे पर वह बड़ी से बड़ी कुर्बानी कर सकते हैं। अगर इस बहरूपिये ने हजरत साहब किबला पर काबू पा लिया तो अब्बा जान के लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि वह हजरत साहब किबला के हुक्म से मुँह मोड़ सकें।"

शकील ने अब भी निहायत इत्मीनान से कहा—"और मेरा खयाल यह है कि खुद हजरत साहब किबला निहायत सूझ-बूझ के माकूल बुजुर्ग

---

* जो लोग पारसा बनते हैं मैं उन्हें खूब जानती हूँ।

हैं । मुझको उनकी यही बात तो पसन्द है कि वह आम व्यापारी किस्म के पीर नहीं है बल्कि एक हद तक सही माइनों में बुजुर्ग हैं । एक तरफ तो उनकी योग्यता और दूसरी तरफ इन हजरत की अयोग्यता से उम्मीद है कि यह चन्द ही दिनों में हजरत साहब क़िबला को भी अपनी हरकतों से उसी नतीजे पर पहुँचा देंगे जिस नतीजे पर दरअसल उनको पहुँचना चाहिए । इस किस्म के ढोंग ज्यादा अर्से तक नहीं चला करते । तुम तो बहुत जल्दी परेशान हो जाया करती हो । जरा तमाशा तो देखो, होता क्या है ? चाल तो यकीनन बहुत अच्छी है, मगर इसके जिए जिस ढंग के अभिनय की जरूरत है वह इस अनाड़ी के बस की बात नहीं ।"

नजमा ने कहा—"मुझे तो आसार अच्छे नजर नहीं आते और आपका इतमीनान और भी मेरी बेचैनी का कारण है ।"

शकील ने खुशी के साथ कहा—"नजमा अगर सदाकत कोई चीज है और हक की फतह की तुम दिल से कायल हो तो जो कुछ हो रहा है उससे जरा भी घबराने की जरूरत नहीं । यह क्षणिक प्रकाश के सिवाय और कुछ नहीं । इस किस्म के बहरूपिये कभी भी टिके हैं ? मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा दिल निश्चिन्त है ।"

नमाज खत्म हो चुकी और नब्बू मियाँ अपने इस इन्कलाब की चर्चा खालाजान को बड़े फखर के साथ सुना रहे थे ।

८

साजिदा और नजमा की मुलाकातें यूँ तो होती रहती थीं मगर आजकल नजमा का ज्यादा वक्त साजिदा ही के यहाँ गुजरता था। इस लिए कि अख्तर और नरगिस की शादी की तारीख करीब थी और इस सिलसिले के इन्तजामात में मदद देने के लिए साजिदा की वालिदा ने नजमा को गोया उनकी वालिदा से मांग रखा था। नजमा के मुतालिक यह सब ही को मालूम था कि उसमें इन्तजामी सलीका असाधारण रूप से अधिक है। चुनाचे सच पूछिये तो इस शादी के तमाम इन्तजामात की इन्चार्ज दरअसल नजमा ही थी। साजिदा की वालिदा ने कुंजियाँ तक उसके सुपुर्द करके सिर्फ़ इतना बता दिया था कि बेटी यह है इस शादी का बजट अब जो तुम्हारा जी चाहे करो। दुल्हन के लिये चौथी के जोड़े से लेकर चढाने के जेवर तक और दूल्हा की बारात से लेकर दावत वलीमा* तक के इन्तजामात इस सुन्दर ढंग से नजमा कर रही थी कि साजिदा की वालिदा के अलावा बाज वक्त तो इस सलीके और अच्छे इन्तजाम पर साजिदा के वालिद भी हैरान होकर रह जाते थे। हर चीज़ अच्छी से अच्छी और हर खर्च कम से कम यही इन्तजाम की खूबी है। हद यह है उसका तो जी चाहता था कि बावर्चियों से भी किसी प्रकार बात करके उनको समझाए

---

* **एक मुस्लिम रस्म।**

कि इस तरह हिसाब लिखवाओ—यह चीज़ इतनी आनी चाहिये। मगर बेचारी मजबूर थी। एक तो पर्दे और बेपर्दे का ख्याल, आवाज तक का पर्दा। लिहाजा बाहर के इन्तजाम की खराबियों की तरफ साजिदा के वालिद की तवज्जह दिला कर रह जाती थी। हालाँकि वह बेचारे इतने सीधे साधे और भोले थे कि उनकी आँखों का सुरमा कोई चुराकर ले जाए तो भी शायद उनको खबर न हो। जब नजमा उनको समझाती कि खालू जान आपने इस इन्तजाम में यह गलती की है और आपका यह इन्तजाम यूं नहीं होना चाहिये था। वो हैरत से आँखें फाड़ कर और मुँह खोलकर रह जाते थे कि—"साहब यह लड़की है या कयामत। इसको तो मर्द बनकर पैदा होना चाहिये था ताकि इन्तजाम उलदोला* का खिताब मिलता।"

इस पर साजिदा की वालिदा कहतीं—"और एक हमारी साहब-जादी हैं कि इन्तजामी शऊर ज़रा भी हों।"

साजिदा बिगड़कर कहती—"तो मैंने कब कहा था कि मुझको साहबजादी बनाइये, नजमा ही को बना लीजिए ना साहबजादी।"

मियां बीवी दोनों हँस देते और नजमा के इन्तजामात जारी रहते। एक दिन नजमा चावल, घी, मेवा, जाफरान वगैरह को तलवाकर अपने सामने रखवा रही थी कि ड्योढ़ी से आवाज आई—"सवारी उतरवा लो।" साजिदा यह समझ कर दौड़ी कि शायद गज़ाला या उसकी कोई और सहेली आई होगी। मगर आई थीं नजमा की वालिदा। साजिदा ने अदब से तसलीम करके उनको अपनी वालिदा के पास पहुँचा दिया। साजिदा की वालिदा गले मिलीं और हँस कर कहा—"वाह बहिन वाह! मैं तो समझी थी कि इस मौके पर मेरा हाथ बंटाओगी मगर आज सूरत दिखाई है। खैर मुझे भी तुम्हारी तो क्या सच पूछो तो खुद अपनी भी जरूरत नहीं। अल्ला रखे नजमा से बढ़कर कोई

---

* प्रबन्ध शिरोमणी।

क्या इन्तजाम करेगा। मेरी आँखों में खाक, ऐसी सुघर लड़कियाँ कम से कम मेरी नजर से तो गुजरी नहीं। सचमुच जो मुझे जरा भी कोई फिक्र हो। हर काम का इन्तजाम उसने अपने हाथ में ले रखा है और जो कुछ कर रही है वही कर रही है।"

नजमा की वालिदा ने कहा—"बड़ी किस्मत वाली हो बहिन! कि तुम्हारे यहाँ आकर नजमा ने हाथ तो हिलाया किसी काम में। घर पर तो क्या मजाल कि नाक पर बैठी मक्खी भी साहबजादी उड़ा लें।"

साजिदा की वालिदा बोलीं—"ना बहिन ना, मुझे तो इस बात का यकीन आ नहीं सकता, जबकि मैं खुद अपनी आँखों से देख रही हूँ। कि उसके सलीके ने अपना कलमा* हरेक से पढ़वा लिया है। तुम्हारे बहनोई तो उसकी इन्तजामी काबलियत देख-देखकर सकते† में आ जाते हैं। जिस घर जाएगी उसको गुलजार बना देगी यह लड़की।"

नजमा की वालिदा ने ठंडी साँस भर कर कहा—"ये सब किस्मत की बातें हैं। बहिन मुझे तो सोते जागते हर वक्त उसकी शादी ही का फिक्र है और बाबाजान हैं कि कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।"

साजिदा की वालिदा ने कहा—"मगर मैंने तो सुना था कि कहीं बातचीत तै हो चुकी है। घर ही का लड़का है।"

नजमा की वालिदा ने मुँह बनाकर कहा—"तै तो सब कुछ है मगर बड़े झगड़े पड़े हुए हैं इसमें। तुम्हारे बहनोई को लड़का पसन्द नहीं है। हालाँकि अल्ला का दिया उसके पास इतना रुपया है अगर दोनों हाथों से लुटाए तो भी जिन्दगी भर कोई तंगी नहीं हो सकती। वो यह कहते हैं कि लड़के में जरा शौकीनियाँ ज्यादा हैं। बात यह है कि बहिन न कोई जिम्मेदारी है न किसी का दबाओ। फिर यह कि रुपया भरा हुआ है घर में। कोई भी हो अपने काबू में नहीं रह सकता।

---

* प्रशंसा। † विस्मय।

आजकल के लड़कों में जो खराबियाँ पैदा हो जाती हैं वे उसमें भी हैं। शादी हो जाएगी तो शाहजादे राह रास्त पर आ जाएंगे।"

साजिदा की वालिदा ने कहा—"और माशा अल्लाह पढ़ा लिखा कहाँ तक है?"

नजमा की माँ बोली—"बस यही तो जरा कमी है। उसने उर्दू मिडिल तक पढ़कर छोड़ छाड़ दिया था। बात यह है कि कोई नौकरी चौकरी तो करनी है ही नहीं उसको। वह खुद सौ पचास को नौकर रख सकता है।"

साजिदा की वालिदा ने संभलकर बैठते हुए कहा—"उर्दू मिडिल और नजमा से शादी! क्या कह रही हो बहिन? हीरे को पत्थर से जोड़ने का इरादा है क्या?"

नजमा की माँ ने कहा—"पढ़ लिखकर करता क्या, यही ना कि नौकरी करता। रुपया कमाता। जब रुपया वैसे ही मौजूद है तो तालीम की कमी में क्या ऐब है। अल्ला न करे उसे किसी की गुलामी तो करना है नहीं।"

साजिदा की माँ ने बदस्तूर हैरत से कहा—"कैसी बातें कर रही हो बहिन। तालीम सिर्फ नौकरी के लिए तो होती नहीं। कम से कम इतनी तालीम तो हो कि बात करने और बात समझने का सलीका तो इन्सान में पाया जा सके। ऐसी तो अल्ला रखे जहीन और समझदार लड़की और उसके लिए लड़का तुम तजवीज़ करती हो मिडिल तक पढ़ा हुआ। ना बहिन ना। बुरा मानो या भला, मुझे तो तुम्हारा इन्तखाब जरा भी पसन्द नहीं। फिर यह कि तुम कहती हो कि साहब जादे शौकीन मिज़ाज भी हैं। इसका मतलब तो यह हुआ कि जान बूझकर लौंडिया को कुए में झौंक रही हो।"

नजमा की वालिदा ने समझाते हुए कहा—"तुम नहीं जानती हो

बहिन ! हमारे खान्दान के बाहर शादियाँ नहीं होती हैं और खानदान में यह हाल है लड़कों का, कि अपने पेट की रोटी तक का सहारा नहीं, शादी किस बिरते पर करेंगे। हाँ पढ़े लिखे लड़के जरूर मिल जाएंगे। मगर क्या तालीम बीवी के लिए बिछाएंगे, उसको उढ़ाएंगे या चटाएंगे, आखिर क्या करेंगे। ज्यादा से ज्यादा यही ना कि दो तीन सौ की नौकरी मर मर कर मिल जाएगी। मगर उसमें तो पूरी पड़ नहीं सकती।"

साजिदा की माँ ने कहा—"मैंने सुना था कि और एक लड़का भी है तुम्हारे धर में। जो माशा अल्ला डिप्टी कलेक्टर चुन लिया गया है। उसमें आखिर क्या ऐब है ?',

नजमा की माँ बोली—"सौ ऐबों का एक ऐब यह कि जाहिरी टीप टाप है। सरकारी वजीफों पर तो साहबजादे की तालीम हुई है। घर में इतना भी तो नहीं कि एक महीना भी बग़ैर नौकरी के चैन से बैठ सकें। नौकरी का क्या है, पराई ग़ुलामी आज है कल नहीं।"

साजिदा की माँ ने कहा—"ग़जब कर रही हो। डिप्टी कलेक्टरी किसको नसीब है। इस वक्त सरकारी वजीफों पर वही लड़का पढ़ता है जो पढ़ने में ऐसा ही तेज हो। और यह उसकी काबलियत ही तो है कि ग़ुर्बत में तालीम हासिल करके मुकाबले के इम्तिहान में बैठा और इतना बड़ा ओहदा सिफारिश से नहीं बल्कि अपने बलबूते पर हासिल कर लिया। ऐसे लड़के तो चिराग़ लेकर ढूँढ़े जायें और न मिलें।"

नजमा की वालिदा इस मामले में चूंकि कोई मजबूत दलील पेश नहीं कर सकतीं। लिहाजा हर जगह जहाँ यह बहस पैदा हो जाती है आखिर में गोल हो जाया करती हैं। चुनाचे इस वक्त भी बात टल गई और शादी के इन्तजामात की तफ़सीलात का जिक्र छेड़कर इस बहस को खत्म कर दिया—"खैर यह बातें तो किसी और वक्त इतमी-

नान से होंगी। जरा मैं भी तो देखूँ कि कैसे जोड़े बने हैं, जेवर क्या क्या बनवाए हैं ?"

साजिदा की वालिदा ने कहा—"मैं क्या जानूं। दूल्हा की बहिन के हाथ में सारा इन्तजाम है। सचमुच बहुत सी बातें तो मुझे मालूम नहीं हैं नजमा ही को मालूम हैं। उसी को बुला कर जो कुछ देखना है देख लो बल्कि आओ जरा उसके इन्तजामी कारखाने की तो सैर कर लो।"

दोनों बेगमात सहन में से उठकर मकान के उस हिस्से में पहुँचीं जहाँ नजमा की हकूमत थी और नजमा देहात से आये हुए घी के कनस्तरों को जोश दिलवा कर और छनवाकर दूसरे साफ पीपों में रखवा रही थी - और साजिदा उसके साथ थी। मां को देखकर नजमा ने कहा—"आइये अम्मी जान मैं आपको दुल्हन दूल्हा के जोड़े, जेवरात के जोड़े वगैरह दिखाऊँ। देखो नसीबन इस घी को जोश देकर अलैदह रखना—मैं आकर पहिले वज़न कराऊँगी, फिर रखा जाएगा।"

यह कह कर वह उठीं और उस बड़े कमरे में पहुँची जिसको उसने अच्छा खासा अजायब खाना बना रखा था। हर चीज अपनी जगह सलीके से सजी हुई थी। चौथी का जोड़ा दिखाते हुए नजमा ने कहा—"कारचोब वाले को इसका डिजायन मैंने खुद दिया था। नरगिस के फूलों का मतलब है नरगिस से जो दुल्हन का नाम है और सितारों का मतलब है अख्तर यानी दूल्हा। इन ही दो चीजों से मिलकर इस साड़ी का तमाम काम बना है।"

साजिदा की वालिदा ने कहा—"ए हे बेटी यह शायरी तो मैं समझी भी नहीं—दुल्हन फूल, सितारा दूल्हा। बात तो बड़ी अच्छी पैदा की है।"

नजमा ने उसी तरह एक एक करके तमाम जोड़े, तमाम जेवर एक

एक चीज़, उनको दिखा दीं और आखिर में उनसे कहा—"अब आप लोग जाएँ मेरे पास इतना काम है कि मैं अब ज्यादा वक्त आपको नहीं दे सकती।"

साजिदा की वालिदा हंसती हुई नजमा की वालिदा के साथ फिर अपनी जगह आकर बैठ रहीं।

बब्बू मियाँ का तकद्दुस[1], अल्ला अकबर, जिस रफ्तार से वह चले हैं। इसका मतलब तो यह है कि गुरु गुड़ ही रह जाएंगे और चेला शक्कर बन जाएगा। हर वक्त वजू[2] और तुहारत[3] का खयाल, औलिया अल्ला के चर्चे, शेख और बुजुर्गों की दास्तानें, ज्यादा से ज्यादा तबियत गुदगुदाई तो कव्वालों को बुला कर उनसे कुछ सुन लिया। कुछ नाच कूद लिये। हर वक्त खालूजान पर अपनी अक्लमन्दी का सिक्का जमाया जा रहा है। आज ख्वाब बयान हो रहा है तो कल बशारत[4] गढ़ी जा रही है। दाढ़ी भी छोड़ दी गई है, और मालूम यह होता है कि—

उग रहा है तेरे रुखसारुपे[5] सब्जा[6] गालिब
तू है सिजदे[7] में तेरे रुख पे बहार आई है

इरादा तो यह भी मालूम होता है कि काकुलें भी कन्धों पर बल खाने लगें। इसलिए कि मुद्दत से बाल तरशवाने का शौक भी तर्क कर रखा है। कभी शाह साहब किबला के दरबार में हाथ जोड़े साक्षात श्रद्धा बने बैठे हैं तो कभी खालू जान की सरकार में अपनी इस श्रद्धा को विस्तार से लीनता के ढंग से बयान हो रही हैं। बात-बात पर अलाल्ला

१ पवित्र। २ हाथ मुँह धोना। ३ सफाई। ४ भविष्य वाणी। ५ चेहरे। ६ घास। ७ भगवान की प्रार्थना।

के नारे, बे बात की बात पर मूर्खता पूर्ण आत्मविस्मृति। शुरु-शुरु में तो मौलवी साहब यही समझते रहे कि साहब जादे सिद्ध हुए हैं ओछे। इस तेज शराब को बरदाश्त नहीं कर सकते। उबली पड़ती है यह शराब। फिर खयाल हुआ कि बेवकूफ तो बेवकूफ, पहिले दुनियादारी में हिमाकत जाहिर थी अब मजहबी सिलसिले में हिमाकत प्रकट हैं। जिस तरह सरकारी किस्म के लोग खिताब हासिल करने के लिए साहबों की खिदमत में डालियाँ लगाते रहते हैं, पार्टियाँ फरमाते रहते हैं। इसी तरह हमारे बब्बू मियाँ आज कल हजरत साहब किबला की दावतों पर दावतें करते रहे। बेचारे सीधे-सादे अल्ला वाले शुरु-शुरु में यही समझे कि वह रुपया जो अब तक मुफ्त खोर मुसाहिबों पर खर्च होता था और बहुत से नाजाइज मौकों पर खर्च किया जाता था, अब इस तरह खर्च हो रहा है तो खैर इसमें कोई मुजाइका नहीं। सर्फ होने दिया जाए। ताकि इस सिलसिले की पाबन्दी इस नये श्रद्धालू को और भी परेशान न कर दे। मगर जब यह सिलसिला बढ़ता ही चला गया तो आखिर एक दिन जब कि मौलवी रजब अली साहब भी हल्के में हाजिर थे। हजरत साहब किबला ने बब्बू मियाँ को सम्बोधित किया :—

"बब्बू मियां मेरी समझ में एक बात नहीं आई कि आखिर तुम रुपये के इस कदर दुश्मन क्यों हो? इसमें शक नहीं कि इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन रुपया ही है। मगर तुम तो इस हकीकत को समझे बगैर रुपये के दुश्मन बन बैठे हो। तुमको अल्ला ताला ने जो रुपया दिया है उसके हजारों नेक मसरफ हैं। उसकी राह में खर्च करना चाहो तो बेशुमार जरिये मिल सकते हैं। मजहबी दृष्टिकोण से दौलत मन्द की दौलत एक अमानत है, और दौलत मन्द उसका खुदा ताला की तरफ से मुंशी। सदव्यय के जरिये तो जिकवातह* वगैरह के हैं, और अगर इन से भी रुपया बच रहे तो बहुत से और ऐसे काम निकल सकते हैं

---

* खैरात।

जिनसे खल्केखुदा[1] को फायदा पहुँचे। मसलन मदरसे खुलवाओ, मदरसों में धार्मिक तालीम का इन्तजाम करो। मुसाफिर खाने तामीर कराओ, कुएँ बनवाओ, मुख्तसर यह कि हजारों फैज इस रुपये से पहुँचा सकते हो। अपने पीर को खिलाने में कोई सवाब नहीं, एक भूखे को खिलाकर तुम ज्यादा सवाब[2] कमा सकते हो।"

बब्बू मियाँ मुरशिद के इरशादात[3] बगौर सुनते रहे और समझे तो सिर्फ यह कि फौरन ऐलान कर दिया—"इरादा है हजूर की खान्काह आलिया में एक समा खाना[4] अपनी तरफ से तामीर करा दूँ। इस सिलसिले में ख्वाब भीं देख चुका हूँ कि जैसे मैं उस जगह बैठा हूँ जहाँ हजूर कव्वाली सुना करते हैं, कि यकायक मूसलाधार बारिश हो गई। मैंने हजूर पर साया करने के लिए छतरी तान ली तो हजूर ने मुस्करा कर फ़रमाया कि बब्बू तेरे खयाल में तो यह भी था कि छतरी के इस आर्जी[5] साए की बजाए मुस्तकिल तौर पर इन्तजाम कर देता, कि सब ही बारिश से बच सकते। चुनाचे मैंने उसी वक्त हजूर से वायदा किया है कि मैं समा खाना तामीर करा दूंगा। हजूर ने हाथ के चन्द इशारों से वहीं पर समा खाना की पूरी इमारत गोया तामीर कर दी है और मुझ से कहा है कि देखो ऐसा नकशा चाहता हूँ। मैंने अर्ज किया कि हजूर यह इमारत बन गई। इरशाद हुआ, यह इमारत नहीं बल्कि उसका खयाल है, बस इसको जहन में रक्खो। इसके बाद ही वह इमारत गायब हो गई और खुला हुआ मैदान रह गया। मगर मेरे जहन में उसका नकशा अब तक मौजूद है। और मैं तै कर चुका हूँ कि यह समा खाना इन्शा अल्ला जरूर तामीर होगा।"

मौलवी रजब अली साहब ने फरमाया—"इन्शा अल्ला।"

हजरत साहब ने फरमाया—"ख्वाब देखा है तो जरूर तामीर

---

१ जनता। २ पुण्य। ३ गुरु प्रवचन। ४ बैठने के लिए मकान। ५ अस्थाई।

कराओ। समा खाना मैं मना नहीं करता, मगर इस जरूरत से कहीं ज्यादा ये जरूरत हैं कि इस मर्तबा बारिश ने बहुत से गरीबों को खानमा बरबाद[1] कर दिया है। बहुत सी बेवाओं के मकानात गिर गये हैं, और बहुत से खुदा के बन्दों को सिर छुपाने के लिए कोई जगह बाकी नहीं है। वह रुपया जो इस समाखाने की तामीर में सर्फ होगा अगर पांच गरीबों के गिरे हुए मकानात को उनके रहने के काबिल बना दे तो इस कार खैर[2] की कीमत इस समा खाने की तामीर से कहीं ज्यादा हो सकती है।"

मुरीदों ने एक आवाज होकर कहा—"सुबहान अल्ला।"

बब्बू मियां ने सिर से पांव तक एतकाद[3] बन कर कहा—"वह भी सही और यह भी सही। हजूर के हुक्म के मुताबिक पांच गुरबा के मकानात की मरम्मत फौरन हो जाएगी।"

मौलवी रजबअली साहब ने फरमाया—"इन्शा अल्ला।"

एक और मुरीद ने कहा—"हजूर हमारे बब्बू मियाँ साहब तो फरमाते हैं कि मेरी तमाम दौलत एक तरफ और इस दर की गुलामी एक तरफ हो तो पल्ला इसी तरफ का भारी रहेगा।"

हजरत साहब ने फरमाया—"इस किस्म की बातें सिर्फ समझी जाएं और कही न जाएं तो ज्यादा ऐहमियत वाली हो सकती हैं। बब्बू मियाँ अभी ताजा शिकारे इश्क हैं। मेरे नजदीक उनका इश्क अभी ऐतबार के काबिल नहीं है। यह दरअसल फिलहाल इस दशा में है। जिसे कश मकश की दशा कहना ज्यादा मुनासिब होगा। विनाश इनकी प्रकृति और इनका मिजाज बन चुकी है, और तामीर इनका अजम[4] है अजमऔर आदत में रस्सा कशी हो रही है। नफस[5] के और जमीर के दरमियान जोर आजमाई का सिलसिला जारी है। अगर इनका इन्कलाब बेलोस

१ बेघरबार। २ शुभकामना। ३ विश्वासपात्र। ४ निश्चय। ५ वासना।

और बेगर्ज है और महज तब्दीली आब व हवा के लिए इस रंग में नहीं आये हैं तो अल्ला ताला इनको अस्तकामत[१] अता फरमाएगा।"

मौलवी रजब अली साहब ने फरमाया—"इन्शा अल्ला।"

बब्बू मियाँ ने आँखें बन्द करके कुछ नर्मी भरे रुन्धे हुए कंठ से कहा—"अब तो हजूर इस गुलाम को इसी दर से वाबस्ता[२] कर दें। मुझ को अगर दुनिया अपनी तरफ खेंचना भी चाहे तो न खेंच सके।"

हजरत पीर साहब ने फरमाया— 'मियाँ इस सिलसिले में पीर की दुवा से ज्यादा खुद अपना इरादा काम करता है। अगर तुम इसी इरादे पर जम जाओ तो तुम को दुनिया अपने मुकाबले में निहायत कमजोर नजर आएगी। मगर इरादा शर्त है, और इरादे की सदाकत असल चीज है।"

एक मुरीद ने कहा—"बेशक।"

हजरत साहब ने उस मुरीद की तरफ देखते हुए कहा—"ऐहसान शाह तुम बेशक क्या कह रहे हो। यह न समझना कि मुझ को तुम्हारे हालात मालूम नहीं हैं। कल रात तक का किस्सा मेरे इल्म में है। खुदावन्द ताला सत्तारा अयूब[३] है। लिहाजा मुझे कोई हक नहीं कि मैं किसी के राज अफशां[४] करूं। मगर तुमको खुद मालूम होगा कि तुम रात कहाँ थे?"

ऐहसान शाह ने घबरा कर कहा—"हजूर मैं तो बब्बू मियाँ के साथ हस्सो के यहां गया था। ताकि उसे समझा बुझाकर राह रास्त पर लाया जा सके। बब्बू मियां ने फरमाया था कि देखने में वह एक बाजारी औरत है मगर उसके सीने में सोज वगदाज[५] से भरा हुआ दिल मौजूद है, और अगर उस तक सदाकत का पैगाम पहुँचाया जाए तो अजब नहीं कि वह गुनाहों की पस्तियों से निकल कर ईमान वाला हो जाए।"

---

१ दृढ़ता। २ बाँधना। ३ सर्वदर्शी। ४ प्रकट। ५ दुःख-दर्द।

हज़रत साहब ने तुर्श लहजे में फरमाया—"खामोश रहो ऐहसान शाह।"

"बब्बू मियाँ तुम खुद अपने को ऐहसान शाह के इस बयान के आईने में देख सकते हो। मैं जानता था और जानता हूँ कि चोर जब चोरी से तोबा कर लेता है तो हेरा फेरी को अपना शगल बना लेता है। हालाँकि अभी तो मुझ को तुम्हारे तोबा करने का यकीन नहीं आता।"

बब्बू मियां ने गिड़गिड़ा कर कहा—"यह न फरमाएँ हजूर ! मेरा इरादा बिल्कुल नेक और मेरी नीयत कतई पाक थी। मैं उस स्याह खाने में गया जरूर था मगर ईमान की रौशनी लेकर।"

हजरत साहब ने मुस्कुराकर फरमाया—"तुम्हारी इस किस्म की बातों से मुझे इतमीनान नहीं होता। आत्मा से गुफ्तगू कम करते हो मन से ज्यादा करते हो। स्याह खाने में ईमान की रौशनी लेकर आप गये थे। अभी तो आप खुद ही रोशनी के जरूरत मन्द हैं। उद्धार क्या करेंगे। साफ क्यों नहीं कहते कि हसरते दीदार की तसल्ली करने के लिए तशरीफ ले गये थे। इस मर्तबा तो मैं इसको माफ करता हूँ, खुदा माफ करे, मगर आइन्दा मैं इसको बर्दाश्त न कर सकूँगा।"

हजरत साहब तो यह चेतावनी देकर हुजरा में तशरीफ ले गये। मगर बब्बू मियाँ का यह हाल—

काटो तो लहू नहीं बदन में

इस भरी महफिल में उनकी कलई खुली थी और यह कम्बख्त ऐहसान शाह पेट का इतना हल्का निकला कि सारा राज़ ही खोलकर रख दिया। मुसीबत यह थी मौलवी रजब अली साहब भी मौजूद थे। क्या कहते होंगे वे अपने दिल में, अब तक की सारी मेहनत और सारी अदाकारी पर इस तरह पानी फिर गया जैसे स्टेज पर कोई कामयाब ऐक्टर निहायत लाजवाब काम कर रहा हो कि यकायक देखने वालों के सामने ही उसकी बनावटी मूँछ गिर पड़े, और देखने वाले साफ देख लें कि सिकन्दरे आजम की बजाए मास्टर नत्थू खड़े झेंप रहे हैं। इस तरह बब्बू मियाँ इस वक्त किसी से आँख चार नहीं कर सकते थे।

नजमा की वालिदा ने जब अपनी जगह पर पूरा इत्मीनान कर लिया कि बब्बू मियां हजरत साहब किबला को शीशे में उतार चुके होंगे तो एक दिन यह भी डोली में बैठकर खानकाह* में हाजिर हो गईं। पीर से पर्दा तो होता ही नहीं, फिर वह भी अपना नहीं बल्कि मियां का। पीर यानी मजाजी खुदा का पीर†। इतला होते ही हजरत साहब किबला ने बेगम साहिबा को जनाना मकान में बुलवा लिया। बेगम साहिबा ने कुछ जरूरत से ज्यादह विश्वास जाहिर करते हुए हजरत के पाँव मुबारक को आँखों से लगाने की कोशिश ही फरमाई थी कि हजरत ने यह कहते हुए मना फरमाया—"यह गलत है। न तो यह इस्लामी तरीका है और न इखलाकी हैसियत से इस किस्म की ताजीम‡ मुनासिब है, जिसमें ताजीम करने वाला खुद अपने को जलील करने की कोशिश करे। जो खुद अपना सम्मान न कर सका वह दूसरे का क्या करेगा।"

बेगम साहिबा एक तरफ सिमटकर बैठ गईं और संभल-संभलकर कहने की कोशिश की---"हुजूर मैं एक अर्ज लेकर आई हूँ और खाली हाथ इस दर से न जाऊँगी।"

हजरत साहब ने मुस्कराकर फरमाया—"आप लोग पीर को खुदा का मर्तबा क्यों दिया करते हैं। इस प्रकार की जिद सिर्फ उसी से की

* पीर फकीरों की रहने की जगह। † खुदा का संदेशवाहक।
‡ आदर।

जा सकती है और वही इस किस्म की जिद पूरी कर सकता है। मेरा काम तो सिर्फ इस कदर है कि जो मेरे नजदीक सही रास्ता है वह उनको भी दिखा दूँ जो मेरी बात सुनना और उस पर अमल करना चाहते हैं। दुआ करना मेरा भी काम है और आपका भी। इसका जानने वाला तो वही है कि किसकी दुआ में किस वक्त क्या असर होता है। पीर का काम यह तो नहीं है कि वह मुरीद* के दिल में अपना विश्वास इस हद तक कायम करे कि मुरीद खुदा को भी भूल जाये। जो मुद्दा लेकर आप मेरे पास आया करते हैं वह आखिर उससे क्यों नहीं कहते जिससे मैं खुद कहा करता हूँ।"

बेगम साहिबा की समझ में यह बातें क्या आतीं जबकि उनका दृष्टिकोण ही दूसरा था। वह न हजरत साहब की विश्वासी, न उनकी बुजुर्गी की कायल, वह तो एक सियासी† चाल चल रही थीं और उनको इस बात का यकीन था कि खुदा तो शायद इनके चक्कर में न आये लेकिन हज़रत साहब इस विश्वास के फ़रेब में आकर मौलवी रजब अली साहब पर जोर डाल सकते हैं। लिहाजा बेगम साहिबा ने कहा—"हुज़ूर की तवज्जह से बहुत कुछ हो सकता है। मुझे आजकल दिन-रात नजमा की शादी की फिक्र है। जवान-जहान लड़की जिस घर में होती है वहाँ मन की शांति और इत्मीनान उस वक्त तक पैदा नहीं हो सकता जब तक लड़की का रिश्ता कहीं हो न जाए।"

हजरत साहब ने फरमाया—"नजमा की शादी? हूँ, तो कोई लड़का जहन में है?"

बेगम साहिबा ने कहा—"होने को तो मेरी बहिन का लड़का मौजूद है बब्बू। जिसको हुज़ूर की गुलामी का शर्फ‡ भी हासिल है।"

हजरत साहब ने चौंककर फरमाया—"बब्बू मियां! नजमा के लिए आखिर क्या बराबरी है दोनों में। बब्बू मियां के मुताल्लिक इस

* श्रद्धालु। † राजनैतिक। ‡ सौभाग्य।

अर्से में जो राय मैंने कायम की है, वह सिर्फ यह है कि न तो उसका दिमागी तवाजन[1] दुरुस्त है और न इखलाकी[2] तवाजन दुरुस्त है। खुद मुझे उस पर भरोसा नहीं। नजमा के मुताल्लिक मुझे मालूम है कि वह निहायत समझदार किस्म की लड़की है। उसकी जहानत, उसकी बलन्द किरदारी,[3] उसकी पाकीजा नफसी,[4] उसकी तालीमी हालात और अक्लमंदी और उसकी बेहद हसास[5] तबियत का खुद मुझे अन्दाजा है। साथ ही साथ बब्बू मियां की हकीकत भी मुझ पर रौशन है। अगर नजमा का मैं इस हद तक दुश्मन होता कि खुदा न खास्ता उसकी मौत का चाहक हो जाता तो बेशक मैं मशवरा दे देता कि जरूर शादी कर दो। मगर इस वक्त तक तो मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि यह खयाल ही आपके जहन में कैसे पैदा हुआ।"

बेगम साहिबा की तमाम उमंगों पर तो उसी तकरीर ने पानी फेर दिया, मगर उम्मीद के सहारे अपनी कोशिश को जारी रखते हुए कहा—"हजूर किस्सा असल में यह है कि घर का लड़का है।"

हजरत मियाँ साहब ने बात काटकर कहा—"क्या वाहियात दलील है। घर का लड़का है। घर में कुँआ भी तो होगा, झोंक दीजिए उसमें लड़की को। घर में तलवार होगी, मार दीजिये उसी से उस बेचारी को। क्या खूब घर का लड़का है!"

बेगम साहिबा ने बदस्तूर अपनी कोशिश जारी रखते हुए कहा—

"हजूर अपने बुरे को अगर हमही न समेटेंगे तो कौन समेटेगा। दूसरे मेरा खयाल यह है कि अब तो जब से उसने हजूर के दर की गुलामी शुरू की है, उसके हालात बिल्कुल बदल चुके है। बब्बू अब वह पहिला सा बब्बू नहीं रहा। हर वक्त यादे खुदा है और वह है।"

हजरत साहब ने फरमाया—"हालात कतई नहीं बदले हैं। कल

---

१ संतुलन। २ चारीत्रिक। ३ उच्च चरित्र। ४ पवित्र आत्मा। ५ भावुक।

ही वह एक बाजारी औरत के पास गया था, जिस पर मैंने झिड़की दी है। आप तो लड़की की मां हैं। आप किस दिल से यह कह रही हैं कि अपने जिगर के टुकड़े को एक ऐसे शख्स के सुपुर्द कर दिया जाए जो उस मोती की कीमत ही नहीं जानता हो। माफ कीजियेगा मेरे नजदीक बब्बू की दौलत आपकी आँखों पर ऐसा परदा डाले हुए है कि बब्बू की कोई खामी आपको खामी नजर नहीं आती। बहरहाल मैं इस सिलसिले में कोई मशवरा अगर दे सकता हूँ तो सिर्फ यह कि बेजबान लड़की का सब्र न समेटिये और ऐसे जवाहर पारे की यह कद्र न कीजिये।"

हजरत साहब तो यह इरशाद फरमाकर और बेगम साहिबा को कतई तौर पर निराश करके बाहर तशरीफ ले गये। मगर बेगम साहिबा ने अब तक शिकस्त कबूल नहीं की, बल्कि अब हजरत की बीवी को प्रभावित करने की कोशिश की। उनको तमाम उतार-चढ़ाव से आगाह किया कि बब्बू मियां के साथ नजमा की शादी क्यों जरूरी है और अगर यह शादी न हुई तो नजमा की बदकिस्मती किस हद तक नाकाबिले इंकार हकीकत बन जायेगी। और खुद बब्बू की दौलत किस बुरी तरह नाजाइज बातों में सर्फ होकर उसको आर्थिक और चारित्रिक हैसियत से तबाह कर देगी। इस हद तक उस बेचारी को प्रभावित किया कि खुद उन्होंने हजरत साहब को बुलवाकर सिफारिश की। मगर हजरत साहब ने उनको भी बब्बू मियां के हालात बताकर इन्कार कर दिया। और अब बेगम साहिबा के लिए सिवाय इसके कोई चारा न रहा कि वहाँ से नाकाम वापिस आएँ। बब्बू मियां उनको अपने साथ लाये थे और जब वापिसी में बेगम साहिबा ने अपनी और हजरत साहब किबला की तमाम गुफ्तगू दोहराई तो बब्बू मियां ने गुस्सा होकर कहा—

"खालाजान इसकी जिम्मेवारी सिर्फ आप पर है कि आपने मेरा रुपया और वक्त दोनों बरबाद किये, वरना मैं तो उस रंगे हुए सियार को पहिले ही से खूब समझता था। बड़ा बना हुआ है यह खबीस भी।"

बेगम साहिबा ने कहा—"ना बेटा बुजुर्गों को ऐसा नहीं कहते। फिर तुम उनके मुरीद भी हो चुके हो।"

बब्बू मियां ने अपनी चारित्रिक उच्चता से काम लेकर कहा—"अजी कैसा पीर और कैसा मुरीद ! कहिये तो तमाम मुरीदों के सामने वह गत बनाऊँ उस मरदूद की, कि तमाम पाक-पवित्रता धरी रह जाय। डाकू है अच्छा-खासा। इतने ही दिनों में जितना मैंने खिलाया है शायद उसके तमाम मुरीदों ने जिन्दगी भर इतना न खिलाया होगा। एक से एक फाकेमस्त फटेचर मुरीद भरा हुआ है। और एहसान शाह को तो खालाजान आप ही के सिर अजीज की कसम कुत्ते की मौत मारूँगा।"

बेगम साहिबा ने कहा—"बुरी बात है बेटा। मैं कहती हूँ कि कब तुमको होश आयेगा। आखिर तू यह क्यों नहीं सोचता कि कुछ खराबियाँ तुझमें भी हैं। उन खराबियों को दूर करने की क्यों नहीं कोशिश करता।"

बब्बू मियां ने कहा—"आपसे मैंने वायदा किया था और बखुदा मैं इस वायदे पर कायम था और कायम हूँ कि शादी के बाद अगर एक शिकायत भी मेरी सुनिये किसी से, तो जो चोर की सजा वह मेरी। अव्वल तो अब भी मैं सब कुछ छोड़े हुए हूँ। आपकी कसम डेढ़ सौ रुपये का एक जोड़ा था कबूतरों का, मैंने इधर-उधर बाँट दिया। आप यकीन जानिये आपका सिर बजाय कुरान के कि नन्हे मिर्जा कल ही हुस्सो का पैगाम लेकर आये थे कि अगर बब्बू मियां अब भी अपनी सूरत नहीं दिखाते तो मैं कुछ खाकर सो रहूँगी। एक इन्सान की जान बचाने के लिए अगर मैं खड़े-खड़े चला गया तो इसमें आखिर ऐसी कौनसी कयामत हो गई कि पहिले तो तमाम मुरीदों और हद यह है कि खालूजान तक के सामने उन आपके सईदी और मौलाई साहब ने मुझको जलील किया और अब आपसे भी जहर उगला। अगर कहिये

तो मैं भेद खोलकर रख दूँ। सारे किस तरह मुरीद औरतों को लिए हुए हुजरे में बैठे रहते हैं। कोई...... ।"

बेगम साहिबा ने बात काटकर कहा—"बस बब्बू बस, खुदा लगती कहूँगी कि हजरत साहब इस किस्म के पीरों में तो हरगिज नहीं हैं। आज ही मैंने उनके पाँव छूना चाहा तो मुझको निहायत सख्ती से मना कर दिया कि यह इस्लामी तरीका नहीं है।"

बब्बू ने कहा—"अजी बड़ा घुटा हुआ है। अब मैं आपसे क्या कहूँ। जरा आप जवान होतीं और पाँव छूने का इरादा करतीं तो हजरत खुद आपके पाँव छूने के लिए तैयार हो जाते।"

बेगम साहिबा—"अरे मैं कहती हूँ कि लौंडे कुछ हवासों में है कि नहीं। लो और सुनो, यह खाला से बात हो रही है। और नाक कटती तेरी ?"

बब्बू ने कहा—"मेरी नाक क्यों कटती। कटती न कटती खालूजान की नाक कटती, जो उस बहरूपिये को खुदा का दर्जा दिये बैठे हैं। खैर अब आप मुझसे न कहियेगा कि मैं उस शख्स के पास कभी जाऊँ, वरना मैं सारी कलई खोलकर रख दूँगा उन हजरत की। बड़ा आया हैं वहाँ से पीर बनकर, चुगद रेगिस्तानी।"

बेगम साहिबा ने कहा—"और तू मैं क्या कहूँ, अल्ला ही तुम्हारे हाल पर रहम करे, जो मुँह में आता है बकते चले जाते हो। यह नहीं कि अपने ढंग दुरुस्त करके कहने वालों का मुँह बन्द कर दें। गुस्सा जो आ रहा है वह आखिर खुद अपने ऊपर क्यों नहीं आता, अपनी हरकतों पर क्यों नहीं आता।"

बब्बू ने झुँझलाकर कहा—"फिर वही हरकतें! खालाजान कसम है अब्बाजान की रूह पाक की, कि अब आपकी इन बातों से दिल आजारी*

* दुःखी

होती है। हजार मर्तबा कह चुका हूँ कि सब कुछ छूट चुका है मुझ से। फिर भी इल्जाम हैं मेरे सिर तो अब इसका क्या इलाज है मेरे पास।"

गाड़ी दरवाजे पर आकर रुकी तो बब्बू मियां भी खामोश हो गये। बेगम साहिबा घर में चली गईं और ये अपने ताश्रो में बाहर ही से सिधार गये।

११

आज अख्तर की शादी थी। नजमा तो उस शादी की आला इन्तजाम करने वाली थी। मगर दो तीन रोज से तो साजिदा के यहाँ वह कचर बचर और शोरोगुल था महमानों का, तोबा ही भली। वह कहिये कि नजमा की खुश इन्तजामी ने उस हंगामे को गदर की सूरत में परिवर्तित न होने दिया वरना इस प्रकार के उत्सवों में तो रोज महशर* का सा आलम होता हैं और साहिबाने खाना † की बदहवासियाँ काबिले दीद हुआ करती हैं। तल्लीनता तो नजमा की भी देखने योग्य थी। मगर क्या मजाल जो त्योरियों पर जरा भी बल पड़ जाए या किसी मेहमान को कोई शिकायत पैदा हो। हरेक के आराम का निहायत माकूल इन्तजाम था। बाहर शकील ने एक अप्टूडेट किस्म की बारात का इन्तजाम अपने हाथ में ले लिया था। चुनाचे पाँच मोटरों की एक कतार दरवाजे के सामने खड़ी थी। सबसे आगे पुलिस बैंड था। उसके पीछे और बुजुर्गों की मोटर, जिन में अख्तर के वालिद भी शामिल थे, मौजूद थे, तीसरा मोटर फूलों से बहुत ही सुन्दर ढंग से सजा हुआ था। उसमें दुल्हा, शकील और कप्तान सैयद के अलावा इश्तियाक मौजूद थे। उसके बाद वाली कारों में दूसरे रिश्तेदार और मेहमान थे। आखिर की तीन परदादार मोटरों में स्त्रियां

---

* कयामत † आतिथेय।

थीं, ये सादा। मगर कारों पर बारात निहायत सही वक्त पर अख्तर के यहाँ से रवाना होकर दुल्हन के यहाँ जा पहुँची। जहाँ रोशन चौकी के तरानों से बरात का स्वागत किया गया। नरगिस के वालिद खान बहादुर इदरीस अहमद साहब दौड़कर अख्तर के वालिद हसन साहब से बगलगीर हुए और निहायत नफ़ासत से सजे हुए सैहन में दुल्हा को मसनद तक पहुँचा दिया गया।

ज़नाना मोटरें ज़नानखाने के दरवाजे से लगा दी गईं और समधिनों की खातिर हिन्दोस्तानी अन्दाज़ के साथ गालियाँ सुनवा सुनवा कर और इस सिलसिले में डोमनियों को इनाम दिलवाकर उतारा गया। और तो सब इधर से उधर बिखर गईं मगर नजमा, साजिदा और रेहाना तीनों दुल्हन बनी हुई नरगिस के पास जा पहुँचीं। वहाँ पहिले ही से कुछ लड़कियाँ और कुछ औरतें दुल्हन को दबोचे बैठी थीं। मगर नजमा ने नरगिस की वालिदा को जाकर समझाया कि इस तरह तो वह बेचारी परेशान होकर रह जाएगी। वहाँ से सबको हटाइये ताकि कमरा बन्द करके उस गरीब को कुछ तो आजादी दी जाए कि वह ज़रा कमर सीधी कर ले। नरगिस की वालिदा ने फौरन वहाँ से सबको हटाकर दुल्हन के कमरे का चार्ज नजमा के सुपुर्द कर दिया। और नजमा ने वाकई पहिले तो दरवाजे बन्द किये इसके बाद दुल्हन के पास आकर बोली—"सुनती हैं आप! दुल्हन बेगम अब आदमियों की तरह मुँह खोलकर बैठिये वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

रेहाना ने घूँघट उलट दिया और साजिदा ने कहा—"मैं आदाब बजा लाती हूँ भाभी जान।"

नजमा ने डाँटा—"चल हट बड़ी आई वहाँ से भाभी की नन्द। हम लोगों में किसी किस्म का कोई रिश्ता नहीं है। हमारा सबसे पक्का रिश्ता वह है जो अब तक था और जो हमेशा रहेगा।"

साजिदा ने कहा—"अगर यह है तो फिर यह हम लोगों के सामने

दुल्हन बनी क्यों बैठी है। अरे भई बोलो मुँह से। जो दिन तुम पर बीत रहे हैं वही देर सबेर हम सब पर भी बीतने वाले हैं।"

दुल्हन को भी इस फिकरे पर हंसी आ गई। रेहाना ने कहा—"जवाब नहीं है साजिदा की बेग़ैरती का।"

साजिदा ने कहा—"सच्चाई का नाम अगर बेग़ैरती है तो खैर, वरना बहिन होगा वही जो कुछ कह रही हूँ।"

नजमा ने कहा—"अरे साजिदा ये दरवाज़े शायद बाहर की तरफ़ खुलते हैं। ज़रा सहन की तो सैर की जाए।"

रेहाना ने कहा—"बहुत दिल बेचैन हो रहा होगा शकील साहब को देखने के लिए ?"

नजमा ने कहा—"और भी कुछ सुना तुमने नरगिस, तुम्हारे भाई जान आज भी तुम्हारे भाई जान न बने, बल्कि अख्तर भाई के दोस्त ही बने रहे। सबके साथ बरातियों में शामिल होकर आये हैं।"

इतनी देर के बाद नरगिस भी बोली—"उनको मालूम था ना कि रेहाना भी आ रही हैं।"

नजमा ने कहा—"जी हाँ—

नाक़ा* जब भागा, तो भाग नज्द† से किबला‡ की सिम्त।
दुम के पीछे क़ैस§ था आगे खुदा का नाम था॥

रेहाना इस बीच में मरदाना की तरफ खुलने वाली खिड़की खोल चुकी थी। बाहर का दृश्य देखते ही एक दम बोलीं—"अरे नजमा, साजिदा देखो बिलकुल सामने ही तो दुल्हा की मसनद है।"

साजिदा ने नरगिस को भी घसीटा और अब सब लड़कियाँ खिड़की के पास जमा हो गईं। रेहाना ने कहा—"आज सैयद भी शुक्र है अपने फौजी लिबास में नहीं हैं। शेरवानी और चूड़ीदार पजामा में तो अच्छे खासे भले आदमी नज़र आते हैं।"

---

* ऊंटनी। † शहर। ‡ काबा। § प्रेमी।

साजिदा ने कहा—"जैसे कुछ भी हैं हाज़िर हैं।"

नजमा ने कहा—"सुन लिया रेहाना ! इस कम्बख्त के क्यों मुँह लगती हो।"

रेहाना ने कहा—"मैं कब मुँह लगती हूँ वह कम्बख्त खुद ही नीलाम पर चढ़ाए हुए है अपने मियाँ को।"

साजिदा ने कहा—"ए, मियाँ बीयां तो कहना नहीं। फिलहाल वो मेरे मंगेतर हैं।"

नजमा ने कहा—"अच्छा अच्छा सुन लिया—वह तेरे मंगेतर हैं। ढोल गले में डाल ले और ढंढोरा पीटती फिर चारों तरफ।"

रेहाना ने कहा—"वकील और गवाह आ रहे हैं। शायद शकील साहब को भी गवाह बनाया गया है क्या ?"

साजिदा ने कहा—"जी हाँ, और दूसरे गवाह का नाम भी तो लीजिये जिनका तखल्लुस जिनाब वाकिया हुई हैं। और यह वकील कौन साहब हैं ?"

नजमा ने कहा—"नरगिस के मामूजान मालूम होते हैं। हाँ वही तो हैं अब्दुल सलाम साहब। चलो नरगिस अब तुम पर धावा होने वाला है सबक़ा। लो दरवाज़े भी भड़भड़ाए जा रहे हैं।"

दुल्हन को बाक़ायदा बिठा कर नजमा ने दरवाजे खोल दिये और दरवाज़ा खुलते ही मालूम यह हुआ कि एक सैलाब रंग व बू कमरे में उमड आया है। तरह-तरह के रेशमों की सरसराहटें, कई किस्म के जेवरों की झंकारों और मुखतलिफ किस्म की खुश्बुओं का एक तूफान सा कमरे में बरपा हो गया। मगर अभी इस क़यामत ने दम भी न लिया था कि घर भर में परदा करो का शोर गूंज उठा। मालूम हुआ कि दुल्हन से पूछने के लिए वकील और गवाह घर में आ रहे हैं। बमुश्किल तमाम पर्दा इस तरह हो सका कि बड़ी-बड़ी परदादार बीवियों ने उसको गवारा कर लिया, कि चाहे बेपर्दगी हो जाए मगर यह गवारा न किया कि मौका वारदात से ज़रा दूर पहुँच जाएं। सबकी सब मूली गाजर की तरह एक होकर

ज़रा से पर्दे में इस तरह छुपने लगीं मानो कोई शायर कुल्हिया में समुद्र को समोने का मजमून बांध रहा है और वह भी एक ही मिसरा में। इस वक़्त किसी को खबर न थी कि ये जो टाँगें हमारे जिस्म में लटकी हुई हैं ये किसकी हैं, और खुद हमारे हाथ किसके जिस्म में फिट कर दिये गये हैं। किसी को यह तो होश जरूर था कि चेहरा खुद हमारा है, मगर किसके सिर पर हमारा धड़ लगा हुआ है इसका जानने वाला इस वक्त सिर्फ वह अल्ला ताला था। मुख्तसर यह कि इस वक्त मालूम होता था गोया निकाह के बहाने से एटम बम का कोई और मुअत्तर रंगीन तजुर्बा किया गया है। वह शोर था कि कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देती थी, और सब आवाजें मिल जुल कर कुछ इस तरह की हो गई थीं—

असगर की जूती, फूफी अम्मा की पानदान की थाली में नसीबन। ए नसीबन, ए वाह बीबी तो क्या कुचल दोगी, मेरा पैर। अल्ला मुबारक करे, चल दूर, लो और सुनो। हाँ बहिन सच कहती हो। अरी ओमना की माँ। दुल्हा आ रहा है, दूध की शीशी लाओ, उसे बुला लो ना। वकील और नसीबन तुम फिर गायब हो गईं। हा हा हा, चैन चाव खी खी खी, भई अल्लाह। ऊई कुचल के रख दिया, निगोड मारा यह रहा लोटा। ऐ बहिन मिला भी मेरा बुर्का, न जाने कैसे हैं तुम्हारे दुल्हा भाई। वे हैं किस अड्डे के कहार ? लो वह आ गये, आग लगे सारा आँचल नोच के रख दिया। अरी जब ही ही ही, उई नोज, इस खिचड़ी की न दालें ठिकाने की न चावलों का कोई ऐतबार। हर बीबी इसका सबूत दे रही थी कि हम भी मुंह में जबान रखते हैं और हर जबान बारह हाथ की साबित हो रही थी। कि इतने में दुल्हन से पूछने वाले आ गये। इन सब के जाते ही नजमा और साजिदा ने फिर कमरा खाली कराके अन्दर से बन्द कर दिया और अब सब मिलकर और दुल्हन को भी जबर्दस्ती घसीट कर बाहर का तमाशा देखने लगीं। जितनी देर में कमरा खाली

कराया गया और ये सब खिड़की तक पहुँच सकीं, निकाह हो चुका था और नरगिस अख्तर दुल्हन बन चुकी थीं।

साजिदा ने कहा—"अच्छा एक मर्तबा मैं भाभी कह लूँ और तुम जवाब दे दो नरगिस।"

नरगिस ने भावनाओं के आवेश में साजिदा के गले में बाहें डाल दीं, और चूंकि साजिदा समझ चुकी थी कि इस वक्त नरगिस रोने ही वाली है लिहाजा उसने फौरन बात टालते हुए कहा—"अरे अरे, मैं हूँ साजिदा, अख्तर नहीं हूँ...भाई के धोखे में बहिन को शर्मिन्दा न करो।"

नजमा ने कहा—"इसको शर्मिन्दा न करोगी, क्या तारीफ की जाए।"

साजिदा ने कहा—"जल्दी में यह मिसरा अर्ज़ कर दिया है।"

आपने पसन्द किया, आप की हिमाक़त है।

निकाह के बाद ही अन्दर और बाहर हर जगह खाने का तूफान बरपा हो चुका था। और इस तूफान से दुल्हन का कमरा भी महफूज न रह सका। नतीजा यह कि इन सहेलियों को फिर रुखसती के वक्त तक आजादी हासिल न हो सकी।

१२

इस शादी ने आग पर तेल का काम किया। नजमा की वालिदा ने फिर मौलवी रजबअली साहब की ज़िन्दगी दूभर करना शुरू कर दी। कि दुनिया जहान की लड़कियों के शादी ब्याह हो रहे हैं लेकिन तुम हो कि इस फर्ज़ से सुबकदोश होना ही नहीं चाहते। मौलवी रजबअली साहब तो भरे हुए बैठे ही थे। जब से हज़रत की ज़बानी यह मालूम हुआ था कि बब्बू मियां ऐहसान शाह के साथ अब तक हस्सो के यहाँ जाता है। उस वक्त से बब्बू मियाँ के उस बहरूप की हक़ीकत उन पर खुल चुकी थी और वह अपनी जगह पर कतई तै कर चुके थे कि अगर बीवी ने अबके नजमा और बब्बू के रिश्ते का जिक्र छेड़ा तो अच्छा न होगा। चुनाचे जैसे ही बेगम साहिबा ने यह जिक्र छेड़ा मौलवी साहब ने इत्मीनान से तस्बीह एक तरफ रखी। दाढ़ी पर हाथ फेरकर अपने सीने पर जो कुछ पढ़ रहे थे उसका दम किया और खंखार कर बोले—"क्या मतलब है यानी नजमा की शादी के सिलसिले में क्या मतलब है ?"

बेगम साहिबा ने कहा—"मतलब यह है कि क्या लड़की को यूंही बिठाए रखोगे हमेशा ?"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शाअल्ला ! वक्त आने पर उसकी भी शादी हो जाएगी। मगर मुझ से यह नामुमकिन है कि अक्ल पर कुफ्ल डालकर और आँखों पर पट्टी बाँधकर लड़की को कुंए में

झोंक दूं। अगर कहो तो दरवाज़े पर जाकर खड़ा हो जाऊं और हरेक राहगीर को देखता रहूँ कि किसके हाथ में लड़की का हाथ दे दूं।"

बीवी ने कहा—"तुम्हारी तो जो बातें हैं दुनिया से निराली हैं। अब स्वर्ग से तो उतरेगा नहीं नजमा के लिए कोई लड़का। जैसे कुछ भी बुरे भले लड़के हैं तुम्हारे ही खान्दान में हैं। मैं कहती हूँ कि आखिर बब्बू के साथ क्यों न कर दी जाए, अल्ला का नाम लेकर ?"

मौलवी साहब ने असाधारण साहस से काम लेकर कहा—"ना मुमकिन, इन्शाअल्ला यह कतई तौर पर नामुमकिन होगा। कि मैं अपनी लड़की उस लड़के के हवाले कर दूँ जो अव्वल दर्जे का बाजारी, बदचलन और निहायत नाकाबिले एतबार है। मैं आज आखरी मर्तबा तुमसे कहता हूँ कि आइन्दा से नजमा के सिलसिले में, बब्बू मियां का नाम तुम्हारी ज़बान से न सुनूं।"

बेगम साहिबा को उम्मीद ही न थी कि इस कदर साफ इन्कार उनको सुनना पड़ेगा। पहिले तो हक्का बक्का रह गईं। उसके बाद मुनासिब यही मालूम हुआ कि इसी वक्त मियां को समझा बुझाकर राम कर लिया जाए। वरना यह वक्त टला तो इसके माइने होंगे कि इनके इस फैसले पर मैंने भी सिर झुका दिया। जरा आगे खिसक कर समझाने के ढंग से बोलीं—"देखो बुरा मानने की बात नहीं, जरा ठंडे दिल से ग़ौर करो कि नजमा मेरी भी औलाद है। नौ महीने मैंने ही इसको पेट में रखा है। अपना खून पिलाकर मैंने ही आज उसको इस क़ाबिल किया है। उसकी शादी का अल्ला रखे जिक्र हो रहा है। इस वक्त मैं उसकी मां हूँ और मैं भी यह नहीं चाह सकती कि अल्ला न करे उसको किसी ऐसे के हवाले कर दिया जाए जिस से तकलीफ हो।"

मौलवी साहब ने जोश में कहा—"जब ही तो तुम चाहती हो बब्बू ऐसे बिगड़े हुए शख्स के सुपुर्द उसकी ज़िन्दगी कर दी जाए। ताकि वह बदचलनियाँ और बदमाशियाँ करता फ़िरे। और यह मासूम

बेज़बान बच्ची घुट घुट कर अपने माँ बाप को दुवाएँ दे। जिन्होंने आँखें रखते हुए और सब कुछ जानते बूझते लड़की को उसके सुपुर्द कर दिया। मैं सब कुछ जानता हूँ कि मुझको राज़ी करने के लिए बब्बू ने यह रंग अख़तियार किया है कि हज़रत साहब किबला के दस्ते मुबारिक पर बइयत* की है। यह नमाज़ यह मज़हबी ढोंग सब मैं जानता हूँ। और मैं तुमको बल्कि उस मरदूद को यह बता देना चाहता हूँ कि मैं हरगिज़ नजमा की शादी उससे न होने दूंगा। इन्शाअल्ला।"

बेगम ने आख़री वार किया—"अच्छा तो यही बता दो कि तुमको बब्बू की तरफ से क्योंकर इत्मीनान हो सकता है?"

मौलवी साहब ने फौरन फरमाया—"बस एक ही सूरत है कि नजमा के साथ उसकी शादी का ज़िक्र न किया जाए। फिर मुझ को इत्मीनान ही इत्मीनान है। मेरी बला से वह हस्सो के यहाँ पड़ा रहे या किमारबाज़ी में मसरूफ रहे या चौक के चक्कर करता फिरे या अदबासों† की सोहबत में उसका वक़्त गुज़रे। मुझको उसकी इन तमाम बातों से कोई विरोध नहीं है। खुदा ने उसको चार पैसे दिये हैं और दौलत के खर्च इसी तरह के हुआ करते हैं मगर मैं अब इतना गुनहगार भी नहीं हूँ कि यह रूपहली सुनहरी अज़ाब‡ मुझ पर नाज़िल§ हो।"

बेगम साहिबा ने अब असल राज़ खोला—"अच्छा तो मैं आज तुमको बताती हूँ कि नजमा की शादी सिर्फ उसी के साथ हो सकती है। इसलिए कि पैदायश के वक़्त ही बज्जो ने उसको मांग लिया था और वह ठीकरे की मंगनी हुई है, बब्बू के साथ।"

मौलवी साहब ने कुरान शरीफ पढ़ने के लहजे में फरमाया—"लाहौल विला कूवत। इस्तगफर अल्ला। यह सब वाहियात। ठीकरा वाहियात और ठीकरे की मंगनी वाहियात। इन्शाअल्ला मेरे जीते जी यह शादी हरगिज़ नहीं होगी।"

* शिष्य बनना। † विलासियों। ‡ मुसीबत। § घूकेद।

बेगम साहिबा ने माथे पर हाथ मारकर कहा—"गजब खुदा का ! अब भी तुम यह कह रहे हो कि रिश्ता नही होगा । कहीं शरीफों में मंगनियाँ भी तोड़ी जाती हैं ?"

मौलवी साहब ने फरमाया—"मंगनी चे खुश* । रजालत और कमीनापन से बचाने के लिए शरीफों के यहाँ तलाक तक हो सकती है तुम मंगनी को लिये फिरती हो । जिसका न कलामे मजीद में जिक्र है न किसी और मजहबी किताब में ।"

बेगम ने निहायत जाहिलाना अन्दाज़ में कहा—"खैर अब यह तो न कहो कि वह रजील है, कमीना है । जो हम सब है वही वह भी है ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्सान शरीफ या गैर शरीफ खान्दानी तौर पर नहीं हुआ करता बल्कि अपने जाती फेलों से हुआ करता है । मुझको एक नेक तरह का जलील से जलील शख्स गवारा हो सकता है मगर आपके बुरी आदत का शरीफ उल नस्ल भानजे साहब गवारा नहीं हैं । और मैं इस हद तक अपने इरादे में पुख्ता हूँ कि नजमा को गोली मार दूँगा मगर यह बात न मानूँगा कि उस शख्स के सुपुर्द कर दूँ ।"

बेगम साहिबा ने फरमाया—"तो अब मैं बिजया के घर भर को क्या मुँह दिखाऊँगी ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"और मैं यह सोच रहा हूँ कि अगर मैंने तुम्हारा कहना मान लिया तो खुदा को क्या मुँह दिखाऊँगा । मैं एक बेजबान लड़की का सब्र नहीं समेट सकता । वह खुदा की दी हुई एक अमानत है और यह मजहबी फर्ज है कि हम उसके मुस्तकबिल† को ईमानदारी के साथ खुशगवार बनाएं ना कि जान बूझकर उसे मौत के मुंह में धकेल दें ।"

बेगम साहिबा गालबन कोई फैसले वाली बात करना चाहती

---

* बहुत खुशी । † भविष्य ।

थीं कि नजमा कमरे में हंसती हुई आई और दौड़कर माँ के गले में बाहें डालते हुए कान में कुछ कहा—"मौलवी साहब को भी बेटी की इस अदा पर प्यार आ गया। मुस्कराकर बोले—"यह क्या मां बेटी में सर गोशियां हो रही हैं ?"

बेगम साहिबा ने कहा—"मुसीबत खड़ी कर दी है मेरे लिए। शादी के बाद पहली मर्तबा नरगिस आई है। अब बताओ मैं इस वक्त क्या करूँ ? पहिले से खबर होती तो वैसा ही इन्तज़ाम करती।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्तज़ाम की बात क्या है। इससे उसके दूल्हा से भी कहलवा दो कि शाम को खाना यहीं खाए।"

बेगम ने कहा—"झगड़ा ही तो है। अच्छा तो तुम चलो अपनी सहेलियों के पास, मैं जाती हूँ अब चूल्हे के पास। मामा भी तो कम्बख्त इस ढंग की नहीं कि खुद से कुछ कर ले।"

नजमा दौड़ती हुई अपनी सहेलियों के पास गई। साजिदा, रेहाना और नरगिस तीनों उसके कमरे पर कब्जा किये हुए थीं। नजमा ने वापस आते ही कहा—"घबराओ नहीं दुल्हन बेगम ! तुम्हारे उनको भी बुलवाए भेजती हूँ। वे बेचारे अलग हुड़क रहे होंगे।"

साजिदा ने कहा—"वहाँ तो इस वक्त ब्रिज हो रहा है। भाई जान हैं, शकील साहब हैं, इश्तियाक साहब हैं।"

रेहाना ने जल्दी से कहा—"और न जाने कहाँ से एक रंगरूट भी आ फंसा है।"

साजिदा ने कहा—"इनके सर्वस्व इश्तयाक का नाम आया और दिमाग में कीड़ा रेंगा।"

नजमा ने कहा—"अच्छा तुम सब लड़ना बाद में, पहिले यह बताओ कि शाम को खाने पर सब को बुला लिया जाए ?"

नरगिस ने कहा—"दिमाग़ ठीक है कि नहीं। शाम को सबके सब

घर ही पर मदू* हैं। और हम लोग तुमको लेने आये हैं कि तुम भी चलो।"

नजमा की वालिदा ने दाखिल होते हुए कहा—"यह ग़लत है। शादी के बाद पहिला तो चाला किया है तुमने। मैं यूँ ही तो जाने न दूंगी। आखिर मेरा भी कोई हक है कि नहीं।"

साजिदा ने कहा—"खालाजान! यह आज सरकारी तौर पर नहीं आई हैं फिर जिस दिन कहिये आजाएँगी। इस वक्त तो नजमा को इजाजत दे दीजिये कि वो हमारे साथ चली जाएँ। लिल्लाह मेरी खालाजान!"

नजमा की वालिदा ने कहा—"ए तो मैं मना कब कर रही हूँ। ले जाओ मगर यह तै रहा कि कल या परसों तुम सब फिर आओगी।"

साजिदा ने सब की तरफ से वायदा किया और जल्दी से जल्दी नजमा को तैयार करा के सब के साथ ले गई।

---

* निमन्त्रित।

१३

नजमा को रास्ते ही में बताया गया था कि यह दावत शकील के नौकरी पर तैनाती के सिलसिले में है। डिप्टी कलेक्टरी के लिए नामज़द तो वह हो ही चुके थे मगर आज ही हुक्म आया था कि उनकी तैनातती हो गई और खुशकिस्मती से फिलहाल वो लखनऊ ही में रखे गये हैं। नजमा को भी अब तक इस हुक्म की खबर न थी। इसलिए कि जिस वक्त शकील को यह खत मिला, अख्तर उनके पास ही बैठे थे और वे फौरन शकील को अपने साथ ले आये, ताकि इस सिलसिले की खुशी पहले इन ही की तरफ से प्रकट हो सके। नजमा को जब यह इत्तला हुई तो उसकी खुशी का क्या ठिकाना था। लाख ज़ब्त किया मगर खुशी के दो आँसू उसकी पलकों पर चमक ही गये। मुसीबत के ज़माने में सबही को खुदा याद आता है मगर नजमा ने साजिदा के यहाँ पहुँचते ही सबसे पहले वज़ू करके नमाज़ पढ़ी और उसके दिल से दुआ निकली—ऐ खुदा! इसका जानने वाला सिर्फ तू ही है कि शकील की इस खुशी को अपनी खुशी समझ रही हूँ। जिस जज़बे ने आज मुझको तेरे हज़ूर में पहुँचाया है उस जज़बे को मैं तेरी अमान* में देती हूँ।"

इधर तो नजमा नमाज व दुआ में मसरूफ थी, उधर शकील को भी इत्तला हो चुकी थी कि नजमा आ गई है। लिहाजा उसने पर्दा

---

* शरण।

कराने के बाद सबसे पहिला यह फर्ज समझा कि सही माइनों में खुशी होने वाली की खुशी देख ले।

साजिदा ने भी शकील को नजमा तक पहुँचाने में मदद दी और ऐन उस वक्त जब कि नजमा के दुआ के लिए उठे हुए हाथ आमीन* कहकर चेहरे पर फिरे हैं। शकील की आवाज पर नजमा चौंक पड़ी—"माफ कीजिएगा मौलाना साहब ! मैं इबादत में मखल† हुआ।"

नजमा ने भर्राई हुई आवाज से जो दिली खुशी से कुछ रुआँसी सी बन गई थी, कहा—"कौन डिप्टी साहब !" करीब था कि वह बेअख्तियार होकर शकील का हाथ पकड़ ले कि एहतियात ने खुद उसका हाथ पकड़ लिया और उसने अपने हाथ को दुपट्टे के आँचल से खेलने में मसरूफ करते हुए कहा—"खुदा मुबारक करे !"

शकील भी अपने को सम्भाल रहा था। उसने सम्भलते हुए कहा—"मैं तो खुद तुमको मुबारकबाद देने आया था। इसलिए कि मैं जानता था कि मेरे लिए इस दुनिया में सिवाय तुम्हारे खुश होने वाला और कोई नहीं है।"

नजमा कहाँ तक ज़ब्त करती मुँह से निकल ही गया—"शकील !"

शकील ने जिन्दगी में पहली मर्तबा अपना नाम बगैर भाई की मिलावट के इस बेसाख्तगी के साथ नजमा की जबान से सुना था। इसमें शक नहीं की नजमा की निगाहों ने कई बार यूँ ही उसको मुखातिब किया था। नजमा की खामोशी ने कई बार यही नारा बलन्द किया था। मगर आज तो यह हकीकत प्रकट भी हो गई थी। उसने भी गैर-इरादी तौर पर कहा—"मेरी नजमा !" और फिर दोनों खामोश हो गये। अब सन्नाटे में दो दिल देर तक धड़कते रहे। बमुश्किल तमाम शकील ने फिर अपने ऊपर काबू हासिल करते हुए कहा—"शुक्र है कि तैनाती लखनऊ में ही हुई है।"

* ईश्वर हमारी रक्षा करे। † बाधक।

नजमा ने कहा—"आपको चाहिए था कि फौरन अब्बाजान और अम्मीजान के पास जाते।"

शकील ने कहा—"कैसे जाता। इस कम्बख्त ने गिरफ्तार जो कर रखा है। वरना सबसे पहले तो मैं तुम्हारे ही पास आता। मगर इन लोगों ने तै यह किया है कि मैं कल तुम्हारे यहाँ आकर यह झूठ बोलूँ कि गोया मुझे यह इत्तला अभी इसी वक्त हुई है।"

नजमा ने कहा—"अच्छा अब आप तशरीफ ले जाएं। क्या फायदा कि खुद बाहर ही से तकाजा किया जाए।"

शकील ने कहा—"नजमा इस वक्त मुझको अपना एक वायदा याद आ रहा है। तुमको भी शायद याद हो कि तुमने मुझसे कहा था कि जब आप नौकर हो जाएँगे तो मुझको क्या दीजिएगा? मैंने कहा था इनाम।"

नजमा ने हँसकर कहा—"जी हाँ याद है, तो लाइये इनाम।"

शकील ने कहा—"वही इनाम देने आया हूँ, लो।"

नजमा ने हैरत से देखा कि दे कुछ नहीं रहे हैं और कहते हैं लो।

शकील ने फिर कहा—"मैं वायदा पूरा कर रहा हूँ अपना इनाम ले लो ना।"

नजमा ने कहा—"दे भी रहे हैं आप कुछ?"

शकील ने भर्राई हुई आवाज से कहा—"मैं खुद अपने को तुम्हारे हवाले कर रहा हूँ। खुद अपनी जात और अपने जज़बात से ज्यादह कीमती और कोई चीज मेरे पास नहीं है। मैं हमेशा से तुम्हारा और तुम्हारा ही रहूँगा। मगर आज तक अपने को सुपुर्दगी के लिए पेश नहीं किया था और आज······।"

नजमा ने बात काटकर कमरे से जाते हुए कहा—"इसको फारसी में कहते हैं "अताए तू बकाए तू"*

---

* सब कुछ तू ही है।

शकील इस वाक्य की मिठास से लुत्फ उठाता ही रह गया और नजमा बिजली की तरह कौंदकर कमरे से बाहर चली गई। नजमा के बाहर निकलते ही साजिदा, रेहाना और नरगिस ने उसको घेर लिया। साजिदा ने फौरन उसकी नब्ज़ टटोलते हुए कहा—"मरीजा पर किसी फौरी कैफियत का असर है। हाथ ठंडे हैं, दिल की हरकत तेज़ है, साँस फूल रही है। वेदमुश्क का इस्तेमाल मुफीद होगा।"

रेहाना ने कहा—"जी चाहता है पूछने को कि क्या गुजरीं ? मगर क्यों बताने लगीं हमको यह।"

नरगिस ने कहा—"मैं बताऊँ ?"

साजिदा ने कहा—"खुदा के लिए तुम रहम करो। न जाने क्या क्या बता जाओ। तुम्हारे तजुर्बे तो बहुत लम्बे-चौड़े हो चुके हैं।"

नरगिस ने डाँटा—"शामत तो नहीं आई है तेरी !"

साजिदा ने गोया अदब से कहा—"भावज के आने को अगर शामत का आना कहते हैं तो बेशक आई है, वरना छोटा मुँह बड़ी बात मैं कह ही क्या सकती हूँ।"

साजिदा की वालिदा ने कमरे में दाखिल होते हुए कहा—"लो और सुनो। तुम सब तो यहाँ कान्फ्रेन्स करोगी, फिर मुझे कौन बताएगा कि मैं क्या करूँ। चाय का इन्तजाम तो तुम्हारे भैया ने किसी अंग्रेजी होटल से कराया है। उनके दो-एक अंग्रेज दोस्त भी आ रहे हैं।"

साजिदा ने कहा—"अम्मी जान ! दोस्त नहीं आ रहे हैं बल्कि शकील भाई को आज डिप्टी कमिश्नर ने अपने यहाँ चाय पर बुलाना चाहा था। भाई जान ने लिख भेजा था कि वह मेरे यहाँ निमन्त्रित हैं। आप खुद उनके साथ मेरे यहाँ चाय पर आ जाइये।"

उनकी वालिदा बोलीं—"खैर तो यही सही। मेरा मतलब यह है कि चाय का इन्तजाम तो होटल से हो रहा है, मगर रात के खाने

के लिए कुछ तुम लोग भी तो मशवरा दो। खानसामा को मैंने मुर्ग, मछली, मलाई ऐंड़िंग कबाब, कोरमा, बिरयानी और शीरमाल का इन्तज़ाम करने को कह दिया है और जो कुछ कहो कह दूँ।"

रेहाना ने कहा—"और खालाजान तरकारी ?"

तरकारी के नाम पर साजिदा ने इस तरह गर्दन झुकाई जैसे यह उनके दुल्हा का तखल्लुस ही तो हैं। साजिदा की वालिदा ने कहा—"ऐ हे, यह बात मैं हमेशा भूल जाया करती हूँ कि सैयद सिर्फ तरकारी खाते हैं।"

नजमा ने कहा—"खालाजान ! उनके लिए तरकारी तो घर ही में बहुत है। डिनर के वक्त उनको लान पर छुड़वा दीजियेगा।"

साजिदा की वालिदा ने हँसकर कहा—"घास खाने के लिए क्या लड़कियाँ कम हैं। अच्छी तरकारियाँ दो एक बढ़वाए देती हूँ। बाकी सब ठीक है।"

सबने उनको टालने के लिए कह दिया—"जी हाँ ! ठीक है।" और वो कमरे से बाहर चली गईं। अब तो साजिदा ने नजमा को कहर आलूदा निगाहों से देखते हुए कहा—"हूँ तो लान पर छोड़ दिया जाए मेरे उनको, चरने के लिए। बड़ी आई हैं वहाँ से डिप्टी बनकर।"

नरगिस ने कहा—"इस बात पर तो मैं भी बुरा मान सकती हूँ कि नन्दोई को गधा कहा गया है।"

नजमा ने कहा—

गलती हाय मज़ामीन मत पूछो,
इनके उनको भी गधा बांधते हैं।

बाहर से आवाज़ आई—"सुबहान अल्ला !" सब चौंक पड़े। गोया नजमा ही के शेर की दाद दी गई है। मगर बाद में मालूम हुआ कि बाहर कलेक्ट्री के एक क्लर्क साहब जो खैर से शायर वाकिया हुए थे, नये

'डिप्टी साहब की शान में कुछ शेर कहकर तशरीफ लाये। वही सुनाए जा रहे थे और यह उस पर दाद दी गई थी। थोड़ी देर में बाहर चाय का दौर शुरू हो गया और अन्दर डिनर की तैयारियाँ होने लगीं। बीच-बीच में जब मौका मिल जाता तो ये लड़कियाँ बाहर की सैर भी कर लिया करती थीं। जहाँ हर एक की उम्मीद का एक-एक केन्द्र मौजूद था।

१४

बब्बू मियाँ का बहुरूप खत्म हो चुका था। हज़रत साहब की तरफ से तमाम श्रद्धा तो उसी दिन खत्म हो गई थी जब उनको अपनी खालाजान से यह मालूम हुआ था कि हज़रत साहब का अकीदा खुद उनके मुतालिक क्या है? मगर अब तो वह खुल्लमखुल्ला हज़रत साहब के विरोधी हो चुके थे। और उनके प्रिय मनोरंजनों में से एक मनोरंजन यह भी था कि मित्रों में बैठ कर हज़रत साहब की शान में गुस्ताखियाँ किया करते थे। उन पर कौन सा इल्ज़ाम था जो आपने नहीं लगाया। तरह-तरह के बदचलनियों के इल्ज़ाम उन पर थे। डकैतियों के इल्ज़ाम उन पर थे। और फिर रोना इसका था कि अक़्ल के अंधे उसी सिर से पाँव तक फरेब की श्रद्धा में मुबतिला थे हैं। मित्रों का क्षेत्र तो जिस कद्र पाक़ीज़ा था उसका अन्दाज़ा इसी से हो सकता है कि जुम्मन पहलवान और बन्ने साहब ज़रदोज़* तक उसमें शामिल थे। जिनसे गालम गलौच तक का मज़ाक होता था। इन लोगों ने और भी हज़रत साहब पर गन्दा उछाला। कि अजी वह तो छटा हुआ बदमाश है। किसी औरत को भगा लाने के सिलसिले में मुक़दमा चल गया था तो मुँह छिपा कर घर में बैठ रहा। और फिर जो बाहर निकला तो इस रूप में कि गोया वली अल्ला हो गया है। सारांश यह है कि कोई इल्ज़ाम नहीं

---

* सल्मे के कारीगर।

था ऐसा जो हजरत साहब पर न थोपा गया हो। अब तक हजरत साहब से कुछ उम्मीद बंधी हुई थी तो हस्सो के यहाँ के हाज़री के सिलसिले में एहतियात बरती जाती थी। मगर अब फिर बगैर किसी झिझक के आमदोरफ्त शुरू हो गई। उसके यहां मित्रों का जमाव होता था और वक्त का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा उसी के साथ गुजरता था। ताश हो रहे हैं। जीतने वाले आंखों में धूल झोंक कर जीत रहे हैं। पीने वाले रुपये को मुफ्त का माल समझ कर पी रहे हैं। रुपये को खर्च कराने के नित नये बहाने ढूंढे जा रहे हैं। और उनको अच्छे खासे रईस का दर्जा देकर दिमाग को सबने मिल कर खराब कर रखा है। इसमें शक नहीं कि दौलत का कोई अन्दाजा ही न था। अगर ढंग के साथ यह सब कुछ भी होता रहता तो भी रुपया इतना था कि उनकी जिन्दगी के लिए काफी था। मगर वहां तो सिर्फ इसी बात की जल्दी थी कि किसी तरह रुपया जल्दी से जल्दी खत्म हो। घुड़दौड़ को इसके लिए मुनासिब जरिया समझ कर मित्रों ने उसका मज़ा चखा दिया। और यह शौक देखते ही देखते इतना बढ़ा कि खुद आपके घोड़े दौड़ने लगे। आज मेरठ में रेस है और हमारा रईस मये अपने स्टाफ के जिसमें हस्सो से लेकर घोड़े तक सब ही शामिल होते थे, मेरठ में मौजूद हैं। आज पूना में हैं तो कल कलकत्ता में। सादगी का यह आलम कि घोड़े की दुम तक नहीं पहिचान सकते और जुर्रत यह कि बड़ा दाव हो या छोटा सब के लिए तैयार। आज हिसाब लगाया तो पता चला कि पूना की रेस साठ हज़ार ले गई। किस्सा सिर्फ यह था कि रुपये के पर लग चुके थे और वह बराबर उड़ रहा था। एक तो उन हज़रत का यह हाल था। इधर तो हज़रत साहब किबला साफ इंकार कर चुके थे कि मेरे सामने अब नजमा और बब्बू मियां की शादी का ज़िक्र भी न किया जाए। खुद मौलवी साहब कह चुके थे कि इन्शाअल्ला विवाह नहीं होने दूंगा। नतीजा इन तमाम बातों का सिर्फ यह हुआ कि नजमा की वालिदा जो असर लेते लेते बीमार पड़ीं तो बिस्तर से लगकर रह गईं।

बुखार ने जड़ पकड़ ली और कमजोरी रोज बढ़ती चली गई। शुरू-शुरू में परवाह भी न हुई। मगर आखिर शकील ने उनकी तरफ तवज्जह की। इलाज की तमाम जिम्मेवारी खुद लेकर बाकायदा दौड़धूप शुरू की। उसकी तीमारदारी का सबसे पहिला नतीजा तो यह हुआ कि वक्त पर दवा और गिजा पहुँचने लगी। इलाज का एक ढंग पैदा हो गया। मगर इसका क्या इलाज कि खुद उनको शकील से नफरत थी। उसकी इन खिदमत को भी वह निहायत नागवारी के साथ कबूल कर रही थीं और चाहती थीं कि किसी तरह कलकत्ते से बब्बू मियाँ आ जाएँ तो वे अपनी मर्जी से इलाज शुरू करायें और देख भाल अपने हाथ में ले लें। आखिर खुदा खुदा करके बब्बू मियां हारे हुए जुवारी की तरह चिड़चिड़े और तंग मिजाज कलकत्ते से वापस आये। खाला की बीमारी की उनको खबर तो पहिले ही थी फिर भी जानकर बे खबर बने हुए थे। अब जो सुना कि पानी सिर से ऊँचा हो चुका है और हालत वाकई नाजुक, तो बमुश्किल वक्त निकाल कर खाला को देखने गये। वहां न जाने क्या-क्या इच्छायें थीं। भानजे को देखते ही खाला ने इत्मीनान कर लिया कि अब इलाज ठीक तरह हो सकेगा। बब्बू मियाँ ने जहाँ तक ज़बानी जमा खर्च का ताल्लुक था खाला की हर मुमकिन दिलदेही की। मगर जाते-जाते यह भी सुना गये कि मसरूफियत बहुत है और कल ही मेरठ के लिए रवाना होना है। और कोई खाला होती तो उसकी आकाँक्षाएँ उसी वक्त खत्म होना चाहिये। मगर अब तक इन खाला को उम्मीद थी कि बब्बू मियाँ को उनकी बीमारी के कारण मुश्किल ही से करार आ सकेगा। शकील बदस्तूर उनकी तीमारदारी में मसरूफ रहा। और बब्बू मियां दूसरी मर्तबा आये बगैर मेरठ रवाना हो गये। इस बीमारी के सिलसिले में शकील और नजमा का ज्यादहतर साथ रहता था। शकील ने रात को भी चची की देख भाल के लिए यहीं रहना शुरू कर दिया था। और रातों को जाग-जाग कर तीमारदारी

कर रहा था। दिन भर कचहरी और बाक़ी तमाम वक्त तीमारदारी। मकसद यह न था कि चची की खुशनूदी हासिल की जाए बल्कि वह इसको नजमा की प्रसन्नता के लिए कर रहा था। मगर मर्ज बढ़ता ही गया। आखिरकार एक रोज़ डाक्टर ने साफ कह दिया कि मरज़ी पर किसी दवा का असर इसलिए नहीं हो रहा है कि खून बिल्कुल पैदा नहीं होता, बल्कि इनकी ज़िन्दगी खतरे में है। अगर इनके जिस्म में ताज़ा इन्सानी खून की काफी मिकदार न पहुँचाई गई तो यह खतरे से बाहर नहीं आ सकतीं। इस सिलसिले में सबसे पहिले नजमा ने अपने को पेश किया। मगर शकील ने डाक्टर को मना कर दिया और खुद अपना हाथ बढ़ाते हुए अपने खून की प्यासी चची की प्यास इस तरह बुझा दी। डाक्टर ने शकील के जिस्म से काफी मात्रा में खून लेकर चची के जिस्म में पहुँचाया। शकील कोई असाधारण तन्दुरुस्त आदमी न था कि इतने खून के निकल जाने के बाद भी उस पर असर न होता। डाक्टर ने उसको आराम करने का मशवरा दिया। और मुश्किल से तीसरे दिन वह इस काबिल हो सका कि बिस्तर से उठ सके। मगर उसकी यह क़ुर्बानी रंग लाए बग़ैर न रह सकी। चची की आंखें अब खुल चुकी थीं और उनको अब अपनी गलती का एहसास हो रहा था कि जिस शकील से उन्होंने अब तक इतनी नफरत की थी वह दरअसल कितना कीमती इन्सान है। तीसरे रोज़ जब शकील अपने बिस्तर से उठ कर चची की मिज़ाज पुरसी के लिए उनके करीब आया तो मौलवी साहब भी करीब ही बैठे वजीफा पढ़ रहे थे। शकील को देखते ही शुक्रिया का एक आंसू उनकी पलकों पर आ चमका और चची ने भी हाथ बढ़ा कर शकील का हाथ पकड़ते हुए कहा—"कैसी तबियत है बेटा ?"

शकील ने हँस कर जवाब दिया—"लीजिये बीमार आप हैं और हाल मेरा पूछ रही हैं ? मैं तो खुद आपका मिज़ाज पूछने आया हूं।"

चची की आंखों में उस वक्त आंसू थे—"बेटा तुमने वह किया है

जो अपनी औलाद भी नहीं करती। मैं क्या जानती थी कि मुझको तुम इस तरह शर्मिन्दा करोगे। मैंने तुम्हारे साथ बहुत ज्यादतियाँ की हैं।"

मौलवी साहब ने वजीफा मुल्तवी करते हुए तस्बीह के घुमाव को रोक दिया और फरमाया—"इन्शाअल्ला यह बहस तुम्हारी से हतयाबी के बाद छिड़ेगी। फिलहाल तन्दुरुस्त होने की कोशिश करो।"

बेगम साहिबा ने कहा—"अब मैं तन्दुरुस्त हो जाऊँगी। अब मेरा दिल खुद तन्दुरुस्त होने को चाहता है। अब मैं अपनी नजमा और अपने शकील की शादी देखने के लिए जिन्दा रहना चाहती हूँ।"

शकील ने सिर झुका लिया। नजमा वहाँ से टल गई और मौलवी साहब ने नारा बुलन्द किया—"इन्शाअल्ला।"

बेगम साहिबा ने कहा—"बेटा! अब कमज़ोरी तो नहीं है? कैसा चेहरा एक दम उतर कर रह गया है। न जाने कितना खून निकाल लिया डाक्टर ने।"

शकील ने हँस कर कहा—"कुछ भी नहीं चची जान! न मैं कमजोर हूँ न कुछ। आप अच्छी हो जाइये बस यही इस खून की कीमत है।"

मौलवी साहब ने फिर नारा बुलन्द किया—"इन्शाअल्ला। इन्शा अल्ला।"

बेगम साहिबा ने मौलवी साहब की तरफ ध्यान देते हुए कहा—"हज़रत साहब ने कैसी सच्ची बात मुझ से कही थी कि यह बब्बू खुद अपना दोस्त नहीं है, यह तुम्हारा या किसी का क्योंकर हो सकता है। और जब तुम्हारा नहीं हो सकता तो खुदा का क्या होगा।"

मौलवी साहब ने झूम कर फरमाया—"सुबहान अल्ला। हज़ूर ने जब मियां शकील के मुतालिक यह सुना कि वह महीनों से इस किस्म की तीमारदारी कर रहे हैं और अब चची के लिए अपना खून भी दिया है काफी मिकदार में। तो मुस्कुराकर फरमाया कि उसको यकीनन यही करना चाहिये था। इसलिए कि वह बब्बू नहीं है। कल हज़रत साहब

ही ने तो मुझ को यह इतला दी है कि बब्बू मियां ने तमाम नकद रुपया घुड़दौड़ और उस बिन्तो शैतान* पर सर्फ कर चुकने के बाद अलाहाबाद वाली कोठी तीस हज़ार में फरोख्त कर डाली। और अब लखनऊ की जायदाद का भी खुदा हाफिज़ है।"

बेगम साहिबा ने कहा—"हाय कम्बख्त नंग खानदान! सच कहती हूँ कि मैंने सबके साथ बे इन्साफियाँ कर करके उसकी हमेशा तरफदारी की। उसके हर ऐब को छुपाया और उसको इतना चाहा कि शायद उसकी मुहब्बत में नजमा को भी कुर्बान कर देती। मगर यह हज़रत साहब की दुवा थी कि नजमा उस कम्बख्त से महफूज रही।"

शकील ने कहा—"चची जान आप ज्यादह गुफ्तगू न करें, थक जायेंगी। यखनी† का वक्त आ गया है थोड़ी सी यखनी पी लीजिये।"

बेगम साहिबा ने कहा—"लाओ मियां! खुदा तुमको सलामत रखे। जवानी का सुख देखो। अब मैं अच्छी हो जाऊँगी। तुमने मुझको फिर से जिन्दगी दे दी।"

मौलवी साहब ने काँपकर कहा—"नऊज़ बा अल्ला। जिन्दगी खुदा अता करता है। इन्शाअल्ला जरूर हासिल होगी। इसलिए कि तुम्हारा असल मर्ज बब्बू था। शुक्र है कि अपने उस मर्ज की छानबीन तुमने खुद कर ली।"

शकील ने यखनी देते हुए कहा—"लीजिये आज आपने बहुत बातें की हैं अब पीकर सोने की कोशिश कीजिये। नींद आ जाने से थकान दूर हो जाएगी।"

मौलवी साहब ने उठते हुए कहा—"इन्शाअल्ला।" यखनी पिलाकर शकील भी कमरे से हट गया, ताकि चची को नींद आ जाए।

---

* वेश्या। † हड्डियों का उबला हुआ पानी।

१५

नजमा की तमाम सहेलियां उसकी मां की बीमारी के दौरान में इबादत* के लिए बराबर आती रहती थीं। चुनांचे आज भी साजिदा और नरगिस आई हुई थीं और आज उनको पहली मर्तबा मरीजा तो मरीजा खुद नजमा के चेहरे पर वह प्रफुल्लता और चमक महसूस हुई जो एक जमाने में नजमा को सर्वोपरी किये हुए थी। मगर अब कुछ दिनों से गायब थी। संभवतः वह नजमा से इसकी वजह दरियाफ्त करतीं मगर इसकी नौबत ही न आने पाई। शकील जब चची को दवा पिलाकर बाहर चला गया और परदा हो गया तो ये दोनों नजमा के साथ स्वास्थ्य का हाल मालूम करने के लिए पहुँचीं। और उनको यह देखकर ताज्जुब हुआ कि आज मरीजा के चेहरे पर सेहत के तमाम आसार मौजूद थे। आँखों में जिन्दगी की चमक, चेहरे पर एक वापस आने वाली ताजगी और आवाज में स्वस्थ होने का दृढ़ निश्चय। उन लड़कियों को दुवा देते हुए कहा—"अब देखो मुझको कितना फर्क है। आज डाक्टर ने भी देखकर कह दिया है कि बस अब दस पन्द्रह रोज में चलने फिरने की इजाजत मिल जाएगी। थोड़ी देर बैठने की इजाजत तो आज ही दे दी है।"

---

* हाल मालूम करना।

नजमा ने खुश होकर कहा—"दे दी इजाजत तो फिरिये, बिठाऊँ आपको ?"

मां ने कहा—"बैठी तो थी ही, अभी शकील ने लिटाया है और मना किया है कि अब न बैठना।"

साजिदा ने कहा—"खालाजान ! वाकई अब तो आपकी हालत बहुत अच्छी है। क्या इलाज बदल दिया है ?"

नजमा की वालिदा ने हँसकर कहा—"हाँ ! अब डाक्टर शकील का इलाज है।"

साजिदा धोका खा गई—"डाक्टर शकील ? डाक्टर शकील कौन खालाजान ?"

नजमा की मां ने कहा—"बेटी तुम नहीं जानतीं डाक्टर शकील को ? मेरा शकील ! यही डिप्टी साहब जो कहलाता है। बेटी उसने मेरे साथ वह सलूक किया है कि मैं तो तुमसे सच कहती हूँ कि नजमा शायद नहीं कर सकती। उसने रातों की नींद हराम करके मेरी तीमारदारी की। दिन के आराम को तज दिया। फिर डाक्टर ने मेरे जिस्म में खून पहुँचाने के लिए उसके जिस्म से ढेरों खून निकाल लिया। यहाँ तक कि वह ग़रीब बिस्तर से लग गया और आखिर यह सेहत के आसार उसी की खिदमतों का नतीजा है। मैंने उसके साथ हमेशा बेइन्साफी की, जिसके बदले में। खुदा उसको रहती दुनिया तक खुश रखे। इलाही वह अपनी जवानी का सुख देखे। उसने मुझे बचा लिया।"

साजिदा ने कहा—"खालबजान ! मैं छोटी हूँ बड़ों से मैं क्या जबान लड़ा सकती हूँ। इतना तो मैं भी हमेशा से जानती थी कि शकील भाई कितने बलन्द और कितने अच्छे आदमी हैं।"

नजमा की मां ने कहा—"आदमी नहीं बेटा, वह तो फरिश्ता है। मेरी आंखों पर न जाने कैसे पड़े पडे हुए थे कि मैं उसको देख न सकी।

हो न हो मेरा तो यही खयाल है कि दब्बू ने मुझ पर जादू कर दिया था।"

सब लड़कियाँ हँस दीं। साजिदा ने कहा—"जादू वह बेचारे क्या करेंगे? बन्दर की जैसी खोपड़ी तो खुद उनके लगी हुई है। मगर वाकई ताज्जुब की बात जरूर है कि आपने इतने दिनों तक शकील भाई को समझा क्यों नहीं?"

नजमा की मां ने कहा—"अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे और क्या कह सकती हूँ। अब तो मुझे उसी वक्त इत्मीनान होगा जब तुम्हारे शकील भाई दूल्हा बन कर आएं और नजमा को ले जाएँ दुल्हन बना कर।"

नजमा शरमा कर रह गई। बाहर से मौलवी रजबअली साहब की आवाज़ आई—"इन्शा अल्ला।"

नजमा ने पुकारकर कहा—"अब्बाजान पर्दा है। इधर न आइयेगा।"

मौलवी साहब वापस लौट गये और उधर लड़कियाँ भी हट गईं ताकि वह आ सकें। नजमा के कमरे में पहुँच कर साजिदा ने उसको दबोचते हुए कहा—"अरी यह क्या जादू कर दिया तेरे जादूगर ने?"

नजमा ने उलझ कर कहा—"छोड़ तो सही मुझको।"

नरगिस ने कहा—"सचमुच खालाजान तो जैसे अब शकील भाई का कलमा* पढ़ने लगी हैं।"

नजमा ने कहा—"अब भी न पढ़ें कलमा तो अन्धेर है। मैं तो हजार मर्तबा मरकर जिन्दा हो सकूँ तो मुझसे यह खिदमत नहीं हो सकती, जो उन्होंने की है। दूसरा महीना है कि रात को बमुश्किल एक डेढ़ घंटा सोते हों।"

साजिदा ने कहा—"अल्लाह तेरी बेग़ैरती। यह मियां की तारीफ हो रही है।"

---

* प्रशंसा।

नजमा ने कहा—"क्यों न करूँ तारीफ। तुम जो हर वक्त अपने रंगरूट का कसीदा पढ़ा करती हो।"

साजिदा ने कहा—"तारीफ उस खुदा की, जिसने मियां बनाया।"

दूसरा मिसरा जाने क्या पढ़ती कि शकील की आवाज़ आई—"नजम! अजी मैंने कहा मौलाना नज़मउद्दीन।"

साजिदा ने अन्दर ही से—"कहो बहिन शकीला।"

शकील ने आवाज़ पहिचान कर कहा—"यह कौन साजिदा? अच्छा साजिदा वग़ैरह आई हुई हैं।"

नरगिस ने कहा—"क्यों शकील भाई, अब मैं वगैरह हो गई।"

शकील ने दरवाज़े के पास आकर कहा—"खुदा आपको वगैरह की बजाए वगैरह वगैरह करे। मगर अभी इसकी कोशिश न कीजियेगा। भई प्रोग्राम ऐसा बनाइये कि शादी के चार साल बाद साहबजादे तशरीफ लाएं। और वह कहाँ है रेहाना बेगम?"

नजमा ने कहा—"वह आज नहीं आईं। आप क्यों पुकार रहे थे मुझे?"

शकील ने कहा—"पुकार इस लिए रहा था कि चची जान को अब आराम नहीं मिलता। आध घंटे से चचाजान बैठे हुए इन्शाअल्ला, इन्शा अल्ला कर रहे हैं और इनको बकवा रहे हैं।"

नजमा ने कहा—"वह खुद भी खामोश लेटना नहीं चाहतीं, फिर आखिर क्या किया जाए।"

साजिदा ने कहा—"शकील भाई मीठा खिलवाइये। आपने तो खालाजान पर वह जादू किया है कि उनका बस चले तो अभी आप को दामाद बना डालें।"

शकील ने कहा—"इस दामाद बना डालें की भी क्या तारीफ हो सकती है? यह उनकी इनायत है और जो सलूक पहिले था वह भी उनकी बुजुर्गी थी।"

साजिदा ने कहा—"आप मिठाई वाली बात टाल गये।"

शकील ने कहा—"गोया बीमार हुई थीं चचीजान और गुस्ल सेहत हुआ है मेरा। रह गई मिठाई, वह उनसे खाओ। अपनी सहेली बूझ पहेली से।"

नरगिस ने कहा—"बूझेंगे तो उनको खैर आप।"

शकील ने जल्दी से कहा—"इन्शाअल्ला कहो इन्शाअल्ला! इस घर में इन्शाअल्ला कहे बगैर बात करना मना है।"

नरगिस ने कहा—"अच्छा खैर। इन्शाअल्ला पूछेंगे तो उनको आप, मगर उस गरीब का क्या होगा बब्बू मियाँ का।"

शकील ने कहा—"यह फिक्र खुद मुझको भी है। नजमा को मुझसे ज्यादा फिक्र है।"

नजमा ने जलकर कहा—"मुझको फिक्र क्यों होती? उस ईंट के गुलमट्टे की। मेरी तरफ से पहिले भी चूल्हे में था, अब भी भाड़ में जाए वह।"

साजिदा ने कहा—"मेरी राय में तो उसको एक बकरा और दो बन्दर खरीद दिये जाएँ।"

शकील ने कहा—"एक बन्दर तो कप्तान सैयद हुए।"

साजिदा ने ठिनक कर कहा—"वाह शकील भाई, आप भी मज़ाक करते हैं हालाँकि बहिन बना चुके हैं।"

शकील ने कहा—"तुमको बहिन बनाया है, सैयद को तो बहिन नहीं बनाया।"

नरगिस ने कहा—"यह चोर की दाढ़ी में तिनके का सबूत हमेशा देती रहती हैं।"

नजमा ने कहा—"अच्छा सुनिये! मेहरबानी फरमाकर अमामन बूवा से कह दीजिये कि हम लोगों को चाए पिलवा दें जरा।"

शकील ने कहा—"जो हुक्म हो सरकार······का। मगर अमामन

बूवा के पास मेरा बार बार जाना मुनासिब नहीं है। वो यूँही अब दो मर्तबा कंघी करने लगी हैं। और आज तो मेरी आँखों में खाक़ वह दंबाला और सुर्मा लगाया है कि पूरी बरेली आँखों में आबाद नज़र आती है।"

नजमा ने कहा—"अच्छा खैर आप कह दीजिये ज़रा।"

शकील हँसते हुए बावर्चीखाने की तरफ चले गये।

साजिदा ने कहा—"ए नजमा यह तुम्हारा मर्दुवा कुछ बदहवास तो नहीं हो गया है? मुंह से कहता है बहिन और करता है मुझसे मज़ाक।"

नजमा ने कहा—"तो सैयद की आप ठेकेदार हैं, थोक फरोश हैं। आखिर माजरा क्या है?"

नरगिस ने कहा—"यह उनकी मालिका हैं। जिनाब आप समझती क्या हैं। और अब तो तारीख भी तै हो चुकी है। कल इनका उनका सामना भी हो गया।"

नजमा ने कहा—"सच! कैसे, अरे क्या हुआ?"

साजिदा ने क़हा—"होता क्या मैं किताब लेने गई थी भाई जान के कमरे में, वो चले आये। मैं भागी वहाँ से। बस और क्या होता।"

शकील ने आवाज़ दी—"नजमा चाए तैयार है खाने के कमरे में पहुँचो।"

वो यह कहते हुए निकल गये और ये सब खाने के कमरे में जा पहुँचीं।

१६

मौलवी रजबअली साहब बीवी की बीमारी से जितने चिन्तित थे उससे कहीं ज्यादा अब उनकी जिस्मानी और जिस्मानी से ज्यादह दिमग़ी सेहत की उनको प्रसन्नता थी। दरअसल नजमा और बब्बू मियाँ की शादी के मुतालिक बीवी की जिद उनके लिए एक मुस्तकिल अज़ाब* थी और उनको इस सिलसिले में बीवी की सूरत से वहशत† होते होते नफरत तक होने लगी थी। मगर वह आभारी थे उस बीमारी के जिसने उनके दिमाग़ को दुरुस्त कर दिया। वह तो हजरत साहब क़िबला को जब यह मालूम हुआ कि मौलवी रजबअली साहब की बीवी अब शकील के साथ नजमा की शादी करना चाहती हैं तो उनको भी खुशी हुई और इस रिश्ते की फौरन इजाजत दे दी। मगर बब्बू मियां भी इस सिलसिले में गाफिल न थे। उनको मेरठ से वापस आ जाने के बाद यह तो मालूम हो चुका था कि खालाजान ने भी शकील को पसन्द करके इनको ठुकरा दिया है। मगर वह अब तक खालाजान की तरफ से बिल्कुल निराश न हुए थे। चुनाचे जब उनको पूरी तरह यकीन हो चुका कि अब खालाजान के पास जाने में तीमारदारी करने या इलाज मालजा की कोई जिम्मेवारी लेने का खतरा नहीं है। तो एक दिन अपनी तमाम खबासतों‡ से सुसज्जित होकर खालाजान की खिदमत में

---

* मुसीबत। † भय। ‡ दुष्टता।

हाज़िर हो गये। और पहुँचते ही निहायत अफसोस प्रकट करते हुए फरमाया—"क्या बताऊँ खालाजान मेरी किस्मत में यह भी न था कि आपकी बीमारी में आपकी कुछ खिदमत कर सकता। मेरठ जाकर ऐसी मुसीबतों में गिरफ्तार हुआ कि क्या अर्ज़ करूँ। जाते ही हनीमून बीमार हो गया। कीमती जानवर, रेस की सारी उम्मीदों का इसी पर दारो-मदार। मगर साईस ने रिश्वत लेकर उसको न जाने क्या खिला दिया कि खुदा ही ने उसकी जान बचाई। इसी सिलसिले की दौड़धूप में एक रोज़ मोटर लड़ गया एक ताँगे से। अब मुकदमा बाज़ी शुरू हुई। क्या अर्ज़ करूँ कि यह ज़माना कैसा गुज़रा है।"

बेगम साहिबा ने कहा—"हाँ तो मैं शिकायत कब कर रही हूँ। शिकायत तो उससे की जाती है जिससे कोइ उम्मीद हो। खाला की बीमारी गई चूल्हे में। जब ऐसा कीमती जानवर बीमार पड़ा हुआ था तो तुम बेचारे वाकई क्या करते।"

बब्बू मियाँ ने कहा—"इसका मतलब तो यह है कि आप गोया नाराज़ हैं, हालाँकि मैंने आपका हुक्म कभी नहीं टाला। अगर आप इस वक्त कह दें कि घुड़दौड़ छोड़ दे, तो मरदूद हो वह, फिर रेस की तरफ थूके भी।"

बेगम साहिबा ने कहा—"ए तो मैं क्यों कहने लगी कि तुम वह छोड़ दो, वह अखत्यार कर लो।" सामने से मामा गुज़रती हुई नज़र आई तो बेगम साहिबा ने आवाज़ देकर कहा—"अमामन बूबा ज़रा खानसामा से कह दो कि शकील मियाँ के आने का वक्त आ गया है चाए दम कर दें।"

बब्बू मियाँ ने कहा—"खानसामा क्या कोई नया रखा है ?"

बेगम साहिबा ने कहा—"शकील मियाँ का खानसामा है।"

बब्बू मियाँ ने कहा—"खूब ! खूब !! इतनी महदूद तन्खवाह में खानसामाँ वग़ैरह रखेंगे तो बचेगा क्या ?"

बेगम साहिबा—"मैं उससे कह दूंगी कि अगर कुछ भी न बचे तो भी वह तुमसे कर्ज़ मांगने न जाए।"

बब्बू मियाँ ने घबरा कर कहा—"ना, ना, ना, गालबन आप बुरा मान गईं। मेरा मतलब तो यह था कि नई-नई मुलाज़मत है अभी से ये गैर ज़रूरी ठाठ कुछ मुनासिब नहीं हैं।"

बेगम साहिबा ने कहा—"वह आता होगा, उसी को यह मशवरा देना ताकि वह इस हमदर्दी का शुक्रिया अदा करे।"

बब्बू मियाँ ने कहा—"मगर खालाजान मैं तो कुछ नक्शा ही बदला हुआ देख रहा हूँ। आप तो उनकी ऐसी तरफदारी कर रही हैं कि वही हैं जो कुछ हैं।"

बेगम साहिबा ने आँखें चार करते हुए कहा—"बेशक हैं और क्यों ना होते। जिसने अपनी जान तक मेरी बीमारी में लगा दी। जिसने अपने खून से मेरी जिन्दगी को सींचा। मैं उसको नहीं तो किसको सब कुछ समझूँगी।"

बब्बू मियाँ ने कहा—"वाकई खुशामद से तो खुदा भी राजी हो जाता है। काश आप सच्ची मुहब्बत को देखतीं।"

बेगम साहिबा ने गुस्से से मुँह फेर कर कहा—"बस, बब्बू मियाँ बस। अब मेरा मुँह न खुलवाओ। मैं तुमसे कोई शिकायत करना नहीं चाहती। सच्चाई तो तुम्हारी मुहब्बत की उस वक्त देख ली थी जब खाला को मौत के मुँह में छोड़कर रेस खेलने मेरठ गये थे और खैरियत पूछने को तुम्हें खत भेजने की तौफीक* नहीं हुई।"

बब्बू मियां ने कहा—"तुम्हारे सिर की कसम खाला जान, हनीमून सख्त बीमार था। चालीस हज़ार का घोड़ा जिससे लाखों की उम्मीद थी। वाकई मौत के मुँह में था और अब तक उसका यह हाल है कि देख लीजियेगा बहुत जल्दी मर जाएगा।"

* सामर्थ्य।

मौलवी साहब ने आते हुए कहा—"इन्शा अल्ला। यानी वह मेरा मतलब यह कि माशाअल्ला आज तो बब्बू मियाँ सल्माए तश्राई* नज़र आ रहे हैं। और यह अजीब इत्तफाक है कि मैं इन ही के मुतालिक कुछ बातें करने आ रहा था। अभी मुझे इत्तला मिली है कि लखनऊ की आखरी कोठियों को बेचने का इरादा तुमने कर लिया है, क्या यह सच है?"

बेगम साहिबा ने कहा—"इरादा किया हो या न किया हो, तुमसे क्या मतलब?"

मौलवी साहब—"मतलब तो न था, न इन्शाअल्ला होगा। मगर तस्दीक† चाहता था इस इत्तला की।"

बब्बू मियाँ ने कहा—"खालूजान बात यह है कि मेरा इरादा हज बयत अल्ला शरीफ का है।"

मौलाना साहब ने हँसकर फरमाया—"इन्शाअल्ला, मगर मियाँ :—

तोकार जमीं रानको साख्ती
के बाआस्माँ नीज परवाख्ती‡

बब्बू मियाँ ने कहा—"जी हाँ! बस इरादा यही है कि अब इस फर्ज को भी अदा कर ही डालूं।"

मौलवी साहब ने कहा—"इन्शाअल्ला! मगर इसके लिए तो तुम्हारे पास काफी नकद होना चाहिये। आखिर इस कदर नक़द रुपया था फिर अलाहाबाद की जायदाद खत्म की? लखनऊ की तमाम जायदाद खत्म हुई, अब तो सिर्फ ये दो कोठियां रह गई थीं?"

बेगम साहिबा ने कहा—"तोबा है तुम इनके वली§ हो, सरपरस्त हो, खुदाई फौजदार हो, आखिर क्या हो? तुम से क्या वह खुद आकिल बालिग़ हैं। तुम बोलने वाले आखिर कौन हो?"

---

* विराजमान। † निर्णय। ‡ तुम्हें तो दुनिया के लिए बनाया है, अब तुम आस्मान की बातें करने लगे। § संरक्षक।

बब्बू मियाँ ने खुशामद के लहजे में कहा—"खालाजान बस अब माफ भी कर दीजिये, खुदा तक बन्दों को माफ कर देता है। अगर हनीमून बीमार न होता तो भला मेरी यह मजाल थी कि मैं आपकी खबर न लेता।"

मौलवी साहब ने पूछा—"ये हनीमून कौन बुजुर्ग हैं ?"

बेगम साहिबा ने कहा—"आपके घोड़े का इस्म शरीफ* है।"

मौलवी साहब ने कहकहा लगाते हुए कहा—"भई माशाअल्ला, सुबहान अल्ला, जज़ाक अल्ला, खाला की बीमारी और घोड़े की बीमारी का मुकाबला और अब भी खालाजान हैं कि हिनहिनाती नहीं।"

इतने में चरमर चरमर करते हुए शकील ने दाखिल होकर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कहा—"अख्खाह ! बब्बू भाई हैं। आदाब अर्ज़।"

बब्बू मियाँ ने खुश्क मुंह से कहा—"आदाब अर्ज डिप्टी साहब ! अब तो शहर के हुक्काम में से हैं आप।"

बेगम साहिबा ने बात काट कर कहा—"अल्ला रखे हैं ही, इसमें भी कोई कहने सुनने की बात है।"

शकील ने बात टालते हुए कहा—"मिज़ाज तो अच्छे हैं आपके ? बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई।"

बब्बू ने व्यंग से कहा—"हमारी आपकी मुलाक़ात ही क्या। आप हाकिम हम रिआया। खुदा आपके मर्तबे को और बढ़ाए।"

मौलवी साहब को मौका मिला—"इन्शाअल्ला।"

शकील ने कहा—"कहाँ रहे इन दिनों आप ?"

बब्बू मियाँ ने कहा—"उसी झोंपड़ी में जिसका रास्ता हाकिम होने से पहिले जनाब को भी मालूम था।"

शकील ने कहा—"नहीं मेरा मतलब यह है कि इस तरफ आपका आना नहीं हुआ ?"

---

* नाम।

बब्बू मियाँ ने कहा—"मैं समझा कि अब डिप्टी साहब का चपरासी घर में न घुसने दे।"

बेगम साहिबा से ज़ब्त न हो सका—"यह इसका डिप्टी होना आखिर क्यों खटक रहा है ?"

शकील ने हँस कर कहा—"अरे नहीं चचीजान बब्बू भाई तो यूं ही कह रहे हैं मज़ाक में। आईये बब्बू भाई चलिये चाए पीयें।"

बब्बू ने कहा—"माफी, माफी चाहता हूँ और खालाजान आपसे भी इजाजत चाहता हूँ। मुझ को नहीं पता था कि आपको मेरा आना इस कदर नागवार होगा।"

शकील ने कहा—"क्या बात हुई आखिर बब्बू भाई! मेरी तरफ से तो कोई ग़लतफहमी नहीं हुई आपको ?"

बेगम साहिबा ने कहा—"तुम जाकर पीओ चाए तुम से कोई मतलब नहीं।"

शकील खामोशी के साथ वहां से टल गया और कमरे में जैसे ही दाखिल हुआ कि नजमा ने उसको रोक कर कहा—"आपके इखलाक़ के मारे और नाक में दम है। बब्बू भाई, बब्बू भाई, और उस कम्बख्त का मिजाज ही नहीं मिलता। खबरदार जो आपने उसको मुँह लगाया कभी।"

शकील ने कहा—"और आप यहां छुपी क्यों खड़ी हैं ?"

नजमा ने कहा—"अम्माजान ने परदा कराया है। अच्छा चलिये आप चाए पीजिये।"

नजमा शकील को लेकर चाए की मेज़ पर आ गईं। खुदा जाने बब्बू किस वक्त दफान हुए।

१७

साजिदा और रेहाना यानी कप्तान सैयद और इश्तियाक की शादियों की तारीखें ऐसी रखी गई थीं कि सिर्फ दो दिन का दरमियान में वक्त मिलता था। पहिले इस मंजिल से साजिदा और कप्तान सैयद को गुजरना था। लिहाज़ा नजमा और उनकी वालिदा के अलावा शकील का भी ज्यादह वक्त अख्तर के यहाँ गुजरता था। अख्तर के यहाँ आज कल दरअसल दुहरे दुहरे इन्तज़ाम थे। एक तो साजिदा के दहेज की तरतीब, दूसरे कप्तान सैयद की तरफ से उन्हीं लोगों को तमाम इन्तज़ाम करना था। उनका कोई अज़ीज़ शादी में शरीक नहीं हो रहा था। इसलिए कि कप्तान साहब की सगाई खान्दान ही की एक लड़की से ठहरी हुई थी। जिससे वह खुद शादी करना नहीं चाहते थे। लिहाज़ा तमाम खान्दान ने इनका बाईकाट कर रखा था। कप्तान सैयद अख्तर के हम जमाअत भी थे और बाद में भी इस तालबे इल्माना दोस्ती को बढ़ाते ही रहे। चुनाचे मैदाने जंग से वापस आने के बाद बहुत दिनों तक अख्तर के पास ठहरे। इसी अरसे में साजिदा की एक आध झलक देखकर और उसकी एक आध बात सुनकर उनकी यह ख्वाहिश हुई कि यह दोस्ती रिश्तेदारी में तब्दील हो जाए। अख्तर को भी इन पर भरोसा था। और थोड़ा सा बेवकूफ समझने के अलावा वह भी कप्तान सैयद में और कोई ऐब न देखते थे। लिहाज़ा यह सगाई तै हो गई। यहाँ तक

कि जब सैयद ने अख्तर को अपने खान्दानी बाईकाट के तमाम हालात साफ साफ बता दिये तो अख्तर ने पहिले तो सैयद को यही मशवरा दिया कि वह उन हालात के मातहत अपने इरादे पर दृष्टिपात करे। मगर जब सैयद के निश्चय को पुख्ता देखा तो उनकी तरफ से भी तमाम इन्तजामात अपने जिम्मे ले लिये। साजिदा की वालिदा को यह रिश्ता और भी पसन्द था। इसलिए कि उनको घर दामाद मिल रहा था और साजिदा के रुखसत होने का फिलहाल कोई खयाल न था। चुनाचे आज कल इश्तियाक और शकील तो सैयद की तरफ से इश्तियाक के यहाँ इन्तजाम कर रहे थे और सैयद खुद इश्तियाक की शादी के इन्तजामात में लगे हुए थे। नजमा की सरगमियों का पूछना क्या। उसकी सबसे चहेती सहेली की शादी थी। साजिदा की माँ वैसे ही नजमा की इन्तजामी काबलियत का लोहा अख्तर और नरगिस की शादी में मान चुकी थीं। चुनाचे इस मर्तबा भी इस खूबी के साथ जहेज को संजोया है कि हरेक झूम झूम उठता था। हर चीज की एक अलग फहरिस्त, फरनीचर अलग, बर्तन अलग, कपड़े अलग, जेवर अलग, सारांश यह कि उसने जहेज को एक अजायबखाना बना रखा था। और एक तरफ कारखाना सा खुला हुआ था। जिसमें कहीं फर्नीचर पर पोलिश हो रही है, कहीं जेवरों की जरूरी मरम्मत का काम जारी है। एक तरफ दर्जीखाना है, एक तरफ कलीगर अपने काम में तल्लीन है। और इनमें से हर काम में नजमा ऐसी होशियार कि काम करने वाले उसकी सूझ बूझ से प्रभावित थे कि जरा सी बेईमानी का मौका नहीं। बाहर के इन्तजामात में शकील का असर बड़ी हद तक काम कर रहा था। डिप्टी साहब के यहां के उत्सव में कौन है जो हाथ न बटाएगा।

आखिर सतरह अप्रैल भी आ गई। साजिदा को दुल्हन बनाकर नजमा ने तैयार कर दिया और इधर घर को सजाकर दुल्हन बना दिया। शाम को शकील और इश्तियाक के संरक्षण में सैयद की बरात

आई। और उन ही दोनों की शहादत और अख्तर की वकालत में सैयद और साजिदा का गठबन्धन हो गया। रुखसती भी उसी हद तक हुई कि एक कमरे से उठाकर दूसरे कमरे में पहुँचा दिया गया। दुल्हन के कमरे में नजमा और नरगिस के अलावा दो दिन बाद दुल्हन बनने वाली रेहाना भी मौजूद थी। हालाँकि वह खुद माँझे की दुल्हन थी। जब निकाह के हंगामे से सब को फुर्सत मिली और साजिदा की वालिदा ने बीवियों को दुल्हन के कमरे से निकाल कर दुल्हन का चार्ज उसकी उन खास सहेलियों के सुपुर्द कर दिया तो साजिदा ने नरगिस से चुपके से कहा—"मेरे तमाम जिस्म में दर्द हो रहा है। मुझे थोड़ी देर के लिए लिटा दो।"

नजमा ने तकिया आगे बढ़ाकर लिटाते हुए कहा—"बस तमाम तेज़ी हिरन हो गई। यूं तो बड़ी बर्क बला* बनती थीं हजूर, अब मारे शर्म के बुरा हाल है।"

साजिदा ने जरा आवाज़ खोलकर कहा—"बात यह है कि शादी है ना, इसलिए शर्माने की कोशिश कर रहे हैं।"

रेहाना ने कहा—"हाय बेग़ैरत।"

साजिदा ने कहा—"लीजिये वह मुसतकबिल† करीब की दुल्हन भी बोलीं।"

नरगिस ने कहा—"मगर तुम्हारी तरह अपनी शादी के मामले में तो नहीं बोली।"

नजमा ने कहा—"अह पहिले की बनी हुई दुल्हन अपनी होने वाली भावज की तरफदारी कर रही हैं।"

रेहाना ने कहा—"साजिदा तुमने दुल्हा को आज देखा होता तो महफिल ही में फाँद पड़तीं। सचमुच बड़े अच्छे मालूम पड़ते हैं दुल्हा बने हुए।"

---

* छलावा। † भावी पत्नी।

साजिदा ने कहा—"ऐ तेरी आँखों में खाक, माशाअल्ला भी नहीं कहती।"

नजमा ने कहा—"हाय तेरी जोजता।"

रेहाना ने हंसकर कहा—"यह जोजता क्या बला है ?"

नजमा ने कहा—"यह मामता की तरह एक चीज है। मां मुहब्बत में गड़बड़ाए तो मामता करने लगती है। बीवी यानी ज़ोजा मुहब्बत में बौखलाए तो उसको ज़ोजता कहते हैं।"

नरगिस ने कहा—"मगर मुझे तो रह रह कर उस बेचारी लड़की का खयाल आ रहा है जो सैयद भाई की मंगेतर थी, कि अब उसका क्या होगा।"

साजिदा ने कहा—"हाँ बहिन सच कहती हो। मुझे खुद यह बात कुछ खुदगर्जी सी मालूम हो रही है। खैर अगर मौका मिला तो मैं उनसे कहूँगी कि लो बहिन तुम्हारी अमानत तुम्हारे हवाले है।"

रेहाना ने कहा—"ऐसे ही तो जनाब फैयाज* हैं। उस वक्त खयाल न आया जब पराए मंगेतर को जल्वे दिखा कर अपना रही थीं।"

साजिदा ने कहा—"ए तुझे खुदा की मार, मैंने कब जल्वे दिखाए। और जल्वे मेरे पास थे ही कहाँ जो दिखाती।"

नरगिस ने कहा—"खैर यह तो आपकी खाकसारी है। जल्वे तो आप के पास इस कदर हैं कि इस कन्ट्रोल के जमाने में अगर राशनिंग वालों को खबर हो जाए तो होरडिंग के सिलसिले में चालान कर दें।"

रेहाना ने कहा—"और फरमाती हैं कि जल्वे कब, बताऊँ मैं कब दिखाए थे जल्वे ? सबसे पहिले तो ड्राइंग रूम में जिनाब से उनका टकराव हुआ था। फिर मोटर का जिस दिन परदा गिरा है और वो अगली सीट पर बैठे थे। इसके बाद जब आपकी तस्वीर कमरे से चोरी

---

* उदार हृदय।

गई है और आप उनके सूटकेस से निकालने गई थीं और खुद ही पकड़ी गई थीं।"

साजिदा ने उसका मुँह बन्द करते हुए कहा—"अल्ला की मार तुझ पर। आखिर उन्होंने तस्वीर क्यों चुराई थी ?"

रेहाना ने कहा—"आप उनका दिल चुरा लें तो कोई बात नहीं, वह बेचारे तस्वीर भी न चुराते, क्यों ?"

नजमा ने कहा—"भई तुम सब की सब हो बड़ी आफत की परकाला।"

नरगिस ने कहा—"बात यह है कि इन बेचारियों के मंगेतर इनसे छुपाए जाते हैं। शकील भाई, शकील भाई कहकर ये सामने नहीं आतीं।"

नजमा ने कहा—"अच्छा अब मुझ पर इनायत हुई है। क्या यह सच नहीं है कि वह फिलहाल मेरे भाई हैं ?"

साजिदा ने कहा—"इस लफ्ज़ में फिलहाल इस शेर की रूह है:—क्या खूब कहा, मुकर्रर इरशाद*।"

नजमा ने कहा—"कौन कह सकता है कि ये अभी ब्याही हुई दुल्हन है। खैरियत यह हुई कि सास ननदें नहीं आई हैं वरना भागतीं सिर पर पैर रख कर, कि दुल्हन क्या है बलाए बेदर माँ† है।"

साजिदा ने मुँह बनाकर कहा—"भई बस यह बात न कहा करो, मेरा दिल भर आता है, कि न मेरी सास आई है न ननदें। और मुझे तो यह भी फिक्र है कि आखिर रुखसती के वक्त रोने का क्या बहाना निकाला जाएगा। घर से जाना तो है ही नहीं कहीं। न कोई मुझ से मिलकर रोएगा, न मैं किसी से मिल कर रोऊँगी। भला यह भी कोई शादी में शादी है।"

यकायक घर में शोर उठा कि दुल्हा आता है। नजमा ने दुल्हन को

---

* फिर कहिये। † आफत।

बाक़ायदगी से बिठा कर कमरे का दरवाज़ा खोल दिया और खुद कार्टेन के पीछे सब लड़कियाँ छुप गईं। घर की बड़ी बूढ़ियों ने दुल्हन को आकर घेर लिया और साजिदा की वालिदा दुल्हा को साथ लेकर उसी कमरे में आ गईं। और हँस कर बोलीं--"भई मैं तो दुल्हा की मां हूँ, दुल्हन की मां नजमा की मां को समझो। मेरे लड़के से ज्यादह रस्में बस्में न कराना, वह यूं ही हलाकान हो रहा है।"

डोमनियों ने बनड़े गाने शुरू कर दिये और बड़ी बूढ़ियों ने आखिर कुछ न कुछ रस्मों की बिना डाल ही दी। लन्दन की सैर किये हुए दुल्हा को डोमनियों ने अपने इशारों पर चलाना शुरू कर दिया। कि कहो मियाँ बीवी के साथ चलूंगा, पापोशें* हाथ में लूंगा। बीवी आंखें खोलो तुम्हारा ग़ुलाम हूँ। और बेचारे दुल्हा को सब ही कुछ कहना पड़ा। इन सबसे छुट्टी पाकर बमुश्किल तमाम दुल्हा को आज़ाद किया गया। चूंकि रुखसती भी उसी जगह होने वाली थी लिहाज़ा सलाम कराई की वसूलियाँ भी शुरू कर दी गईं। और जब दुल्हा मियाँ रुपये तथा दुआएं बटोर कर बाहर चले गये तो खाने का हड़बोंग रात के बारह बजे तक होता रहा। बारह बजे के बाद साजिदा की असाधारण बुद्धिमता सैयद के हाथों का खिलौना बनी हुई थी। और चहकने वाली चिड़िया इस तरह चुप थी जैसे सैयाद† ने उसकी आवाज भी छीन ली हैं।

---

* जूते। † पक्षी पकड़ने वाला

१८

वहाँ तो शादियों की चहल पहल थी। साजिदा और सैयद की शादी के बाद ही इश्तियाक और रेहाना की शादी की सरगर्मियां शुरू हो गईं। ऐन उस वक्त जबकि उस दूसरे उत्सव के मौके पर दस्तर खान चुना जा रहा था। मौलवी रजबअली साहब को इत्तला मिली कि बब्बू मियां को हस्सो के कमरे पर किमारबाजी के सिलसिले में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। लाख गैर सही, मगर फिर भी रिश्तेदारी का मामला था। बदनामी सिर्फ उस नंग खान्दान ही की नहीं खान्दान भर की थी। मौलवी साहब सटपटा कर रह गये। पहिले तो कुछ समझ ही में न आया। इसके बाद सबसे पहिले शकील से बुलाकर कहा यह वाक़िया हो गया है। शकील ने उनको तसल्ली दिलाकर फौरन एक गाड़ी की और कोतवाली आ मौजूद हुआ। डिप्टी सुपरिटेन्डेन्ट पुलिस से कुछ व्यक्तिगत परिचय, कुछ बराबर के ओहदे का असर उसने तमाम विवरण बताकर मशवरा दिया कि अब इस सिलसिलाए जमानत वगैरह की कोशिश करने की बजाए अगर यह कोशिश करें कि मुकदमा आप ही के इजलास में आ जाए तो ज्यादा मुफीद होगा। चुनान्चे वह फौरन कलेक्टर के पास पहुँचा और तमाम मामलात तै करने के बाद मौलवी रजबअली साहब को आकर विश्वास दिलाया कि बब्बू मियां के लिए ज्यादा मुफीद यह होगा कि मैं जमानम वगैरह के झगड़ों

में न पड़ूँ, बल्कि उनका मुकदमा अपने ही इजलास पर लाने की कोशिश करूँ। हालाँकि नई नई नौकरी और बब्बू मियाँ से रिश्तेदारी। चीजें ऐसी हैं कि खुद मेरे लिए नुकसान पहुँचाने वाली हैं। मगर मैं उनको बचाने के लिए इसकी परवाह न करूँगा। मौलवी साहब नें बेगम साहिबा और नजमा को जल्दी से जल्दी उस उत्सव से छुट्टी दिलाई और शकील को साथ लेकर सीधे घर पहुँचे। बेगम साहिबा को जब यह इत्तला मिली कि उनके होनहार भानजे ने उनका नाम इस तरह रौशन किया है तो उनकी अजीब हालत हो गई। एक तरफ तो गुस्से में दिल चाहा कि कोई भी उस कम्बख्त की खबर न ले और जैसा किया है वैसा ही भरे, और दूसरी तरफ खून का जोश। खुद शकील ने कहा—

"खालाजान जो कुछ होना था वह तो हो ही गया। मगर अब सवाल यह है कि क्या किया जाए? जमानत करना इसलिए खतरनाक है कि बब्बू मियां की तरफ से मुझे इत्मीनान नहीं।"

बेगम साहिबा ने बात काट कर कहा—"बेटा तुम इस मामले में न पड़ो, अपनी इज्जत अपने हाथ। अल्ला ने तुमको इज्जत दी है। तुम को तो यह कहते हुए भी शर्म आएगी कि यह कम्बख्त जुवारी जो रंडी के कोठे पर तम्बोली और न्यारिये के साथ गिरफ्तार हुआ है तुम्हारा रिश्तेदार है।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"बेशक! यकीनन, मेरा मशवरा भी यही है कि शकील मियां इस सिलसिले में बिल्कुल अलग रहें। मैं खुद इसको मुनासिब नहीं समझता कि उसके साथ इनकी भी रुसवाई हो।'

शकील ने कहा—"खैर बरी तो वह हो जाएँगे। इसलिए कि मुकदमा मेरे ही इजलास में आ रहा है।"

मौलवी साहब ने कहा—"ग़लत, कतई ग़लत। तुम्हारे लिए यह भी नामुनासिब है कि उसका मुकदमा तुम करो। फौरन यह खबर उड़ जाएगी कि डिप्टी साहब रिश्तेदारी का खयाल कर गये। मगर सवाल यह है कि फिर आखिर क्या हो?"

बेगम साहिबा ने कहा—"उस कम्बख्त ने नाक काटली है सबकी, आज तक खान्दान में ऐसा कभी न हुआ होगा।"

मौलवी साहब ने कहा—"अब तुम ही कहो कि उस कम्बख्त को तुम आस्तीन का साँप बनाना चाहती थीं। अगर खुदानख्वास्ता मैं तुम्हारे कहने में आकर नजमा की शादी उस कम्बख्त से कर देता तो आज सिवाय खुदकशी के और मेरे लिए कोई चारा न था।"

शकील लिबास तब्दील करने के लिए अपने कमरे की तरफ चला ही था कि नजमा ने उसे रास्ते में रोक कर कहा—"ज़रा एक बात मेरी सुन लीजिये।"

शकील ने नजमा के कमरे की तरफ जाते हुए कहा—"एक नहीं हज़ार बातें सुनूँगा।"

मैं सुनने के लिए पैदा हुआ हूँ,
वो जो चाहें कहें उनकी ज़बाँ है।

नजमा ने कमरे में पहुँच कर कहा—"मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि उस गन्दगी से आप अपना दामन बचाए रखें तो अच्छा है। आप अपनी आदत से मजबूर हैं। मदद ज़रूर करेंगे चाहे कोई कितना ही मना करे। मगर खुदा के लिए अपने वास्ते कोई बदनामी उन हज़रत की वजह से न खरीद लीजियेगा।"

शकील ने मुस्कराकर कहा—"मेरा तो इरादा यह है कि जिस तरह हो बाइज्ज़त तरीके पर उन हज़रत को बरी करा दिया जाए ताकि डिप्टी कलेक्टरी के वह चन्द दिन पहले मुझको ताने दिये गये हैं वो ही डिप्टी कलेक्टरी उनको शर्मिन्दा कर सके।"

नजमा ने कहा—"बाइज्ज़त रिहाई, चे खुश। इज्जत को भी आप उनके लिए बेइज्ज़त करेंगे। जो शरीफाना जवाब आप उनको देना चाहते हैं वह उसके लायक ही नहीं। आज आप उनको रिहा करा देंगे, कल वह किसी और जुर्म में गिरफ्तार होंगे। मुझे तो उनका मुस्तक़बिल

हमेशा मुजरिमाना नज़र आता है। और मेरा यह खयाल बिल्कुल सही निकला।"

शकील ने कहा—"बुरी बात है। नजमा अगर वह बुरे हैं तो उनसे ज्यादह हमारे अच्छे सलूक का कोई और जरूरतमन्द नहीं हो सकता। मगर तुम बेफिक्र रहो, मैं हाथ पैर बचाकर काम करूँगा।"

शकील बातें कर ही रहा था कि बाहर से अख्तर की आवाज़ आई और नजमा ने आवाज़ पहचान कर कहा—"अख्तर भाई मालूम होते हैं। "शकील फौरन बाहर आ गया। अख्तर ने उसको देखते ही चिन्ता के साथ पूछा—"खैरियत तो है। आखिर बात क्या है ? तुम सबके सब एक दम वहाँ से चले आये। वहाँ तरह-तरह के खयाल पैदा हो रहे हैं। अगर किसी से कोई शिकायत पैदा हुई है तो भी तुम को कम से कम वही हक़ हासिल था जो अपने घर पर मुझको है। आखिर बात क्या है ?"

शकील ने अख्तर और सैयद को अलग बिठाकर तमाम विस्तार के साथ वर्णन किया कि क्या दुर्घटना हो गई है। और कहा कि इस किस्से को मशहूर करने की बजाए मुनासिब यही मालूम हुआ कि हम लोग फौरन घर वापस आ जाएँ और यहाँ इत्मीनान से बैठकर उनके मुतालिक कुछ गौर कर सकें। इसके बाद अपनी तमाम कोशिशों का विवरण और अपने इरादे से उनको अवगत कराया।

अख्तर ने सब कुछ सुनकर कहा—"जी नहीं। आपके लिए जमानत देना भी मुनासिब नहीं और यह भी गलत है कि आपके इजलास में यह मुकदमा आये। इसकी तरकीब दूसरी है। मैं अभी जाकर जमानत करता हूँ। और कोशिश इस बात की करता हूँ कि मुकदमा तिवारी जी के इजलास में आ जाए। वो सैयद के दोस्त भी हैं। फिर तुम्हारा भी खयाल करेंगे और एक जानिबदार की हैसियत से बब्बू को रिहा कर देंगे तो किसी की नज़र तुम पर नहीं पड़ सकेगी।"

सैयद ने भी इस तजवीज़ की ताईद की। अतः अख्तर फौरन कोतवाली पहुँचे और ज़मानत पर बब्बू मियां को रिहा कराके अपने साथ ही ले आये।

बब्बू मियाँ की जगह अगर कोई और होता तो शायद खाला और खालू को मुँह दिखाने की बजाए मर जाना पसन्द करता। मगर उन हज़रत के दमखम वही थे। आते ही शकील से कहा—"शकील साहब आपने बेकार यह दौड़-धूप की। मैं तो यह तै कर चुका हूँ कि इस सिल सिले में पुलिस पर मुकदमा चलाकर रहूँगा कि आखिर ताश खेलना कौन सा जुर्म है जिस पर पुलिस ने मेरी इज्ज़त पर हाथ डाला।"

शकील ने कहा—"ताश खेलना तो जुर्म नहीं है बब्बू मियां! बशर्ते कि उसको जुर्म बना न दिया जाए। अगर यही ताश आप क्लब में बैठकर खेल रहे होते और बाज़ियाँ उससे भी बढ़कर लग रहीं होतीं तो भी कोई मुज़ाइका न था। मगर जिस जगह आप खेल रहे थे और जिन लोगों के साथ आप खेल रहे थे वह तफरीह के तौर पर ताश नहीं खेलते, बल्कि यह उनका पेशा है।"

रूदाद* यह प्रकट हुई कि मुसम्मात हुस्नो के यहाँ बाक़ायदा जूवा खिलवाया जाता है। और उसके कमरे को ग़ैर कानूनी क़िमारखाना† की हैसियत हासिल है। नाल निकाली जाती है। मुखबिर खुद उस जमाअत का मेम्बर है। जिसने तमाम रुपया हार जाने के बाद कर्ज़ से खेलना चाहा। मगर जब आप लोग राज़ी नहीं हुए तो उसने मुखबिरी करके आप लोगों को खेलते हुए और नाल निकालते हुए गिरफ्तार करा दिया। अब आप ही बताइये कि यह जुर्म हुआ या नहीं?"

अख्तर ने कहा—"अब आप पुलिस पर मुकदमा चलाने का खयाल फिलहाल ज़हन से निकाल कर खुद अपने लिए सफाई के नुक्तों पर

---

* असलियत। † जुवाघर।

गौर करें। पुलिस ने मुकदमे को निहायत मजबूत बना दिया है यह मालूम रहे।"

सैयद ने कहा—"और मुसम्मात हस्सो का बयान निहायत खतरनाक है। उसने साफ साफ लिखवा दिया है कि वाकई नाल निकाली जाती थी और मेरे भाई हशमत और बब्बू मियाँ का उसमें साझा था।"

बब्बू मियाँ ने खड़े होकर कहा—"हरामजादी।"

शकील ने उनको समझाते हुए कहा—"यह गुस्से का वक्त नहीं बल्कि सबक हासिल करने का है। बहरहाल आप इत्मीनान से बैठिये हम लोग अपनी कोशिश में जाते हैं।" यह कहकर शकील अख्तर और सैयद के साथ चले गये।

१६

साजिदा और नरगिस के अलावा रेहाना भी अब शादीशुदा थी और सिर्फ नजमा बाकी रह गई थी। मगर उसकी तरफ से भी सबको एक किस्म का इत्मीनान था। कम से कम अब वह आशा निराशा की स्थिति न थी जो बब्बू मियां की बदौलत कुछ दिन पहले थी। नजमा की चिन्ता भी अब प्रफुल्लता में परिवर्तित हो चुकी थी और चूँकि यह कतई तौर पर तै था कि अब अनकरीब शकील से उसका जीवन भर के लिए गठबन्धन कर दिया जाएगा। लिहाजा खुद उसके घर पर शकील के साथ वही सलूक हो रहा था जो दामाद के साथ होना चाहिए। मौलवी साहब को शकील पर बेहद भरोसा था। और वह शकील की बलन्दी को समझते हुए इसकी कतन जरूरत न समझते थे कि नजमा को उनसे छुपाया जाए। बेगम साहिबा की तरफ से यूं ही दुआओं की बारिश से सराबोर रहा करते थे। वे फिर भी औरत थीं। अपने दिल को लाख इत्मीनान सही मगर दुनिया का डर उनको मारे डालता था कि कहने वालों की जबान को किस तरह रोकेंगे। गालिबन इसी वजह से शकील को समझा दिया था कि मैं न तो नजमा को पर्दा कराती हूँ और न तुमको मना करती हूँ कि तुम उसको कहीं अपने साथ न ले जाओ, मगर बेटा यह दुनिया है। जितने मुँह हैं उतनी ही जबानें हैं। हर एक अपने आइने में सबकी सूरत देखता है। इसलिए अच्छा यही है कि तुम खुद ज़रा दुनिया को दिखाने के लिए अलग-अलग रहा करो। शकील इस

एतबारी नज़ाकत को समझता था। यही वजह है कि जब उन शादी-शुदा जोड़ों ने तै किया कि पिकनिक की जाए और शहर से दूर चलकर किसी बाग़ में तमाम दिन हुल्लड़ मचाया जाए तो बजाए इसके कि शकील और नजमा साथ जाते, नज़मा पहिले ही साजिदा के साथ रवाना हो गई। शकील ने प्रोग्राम यह रखा कि थोड़ी देर कचहरी का काम करके सीधे बाग़ पहुँच जायेंगे। शादियों के बाद नौबत यहाँ तक तो पहुँच ही चुकी थी कि परदा उठा दिया गया। साजिदा को सैयद ने तमाम दोस्तों के सामने कर दिया था। रेहाना के सिलसिले में इश्तियाक ने भी यही किया था। नरगिस को अख़्तर शकील के सामने तो पहिले ही लाते थे, अब सैयद के साथ रिश्ता ही बेपर्दगी का क़ायम हो चुका था और इश्तियाक तो भाई ठहरे। सिर्फ बेचारी नजमा अभी तक खटाई में पड़ी हुई थी। उसको पर्दा उठाने की इजाज़त देने वाला कोई न था। लिहाज़ा तै हुआ कि पिकनिक पर पहुंचकर नजमा बुर्के में रहेगी। हर-चन्द नजमा ने इस तरह पिकनिक पर जाना मुनासिब न समझा और लाख-लाख साजिदा से इजाज़त चाही। मगर खुद नजमा की वालिदा ने कहा कि बेटी यहाँ से तुम बुर्के में चली जाओ वहाँ अगर शकील चाहेंगे तो बुर्का उठवा देंगे। मैं खुद उन लोगों से तुमको पर्दा कराना नहीं चाहती। जो अपने बन चुके हैं। अब हमारे अज़ीज़ हैं तो वे, और दुख-दर्द के शरीक हैं तो वे। उनसे पर्दा कैसा? तुम्हारे अब्बा ने ज़बर्दस्ती मुझको सैयद व अख़्तर और इश्तियाक के सामने किया है।"

नजमा और साजिदा को बड़ी बी की इस रोशन ख़याली पर वाकई ताज्जुब था। चुनाचे रास्ते ही में साजिदा ने नजमा से कहा—"अब तो सचमुच मैं इसकी कायल होती जाती हूँ कि शकील भाई ने ख़ाला-जान पर ज़रूर जादू किया है। कौन कह सकता है कि यह वही ख़ाला-जान हैं जो अब से कुछ दिन पहिले थीं।"

नजमा ने कहा—"अब तो हाल यह है कि जिस भतीजे की सूरत

तक से नफरत थी उसके लिए परवाना बनी रहती हैं। और ईमान की बात यह है कि वह भी ऐसा खयाल रखते हैं कि क्या कोई अपनी मां का खयाल रखेगा। कचहरी से आकर जिस वक्त चची की गोद में डिप्टी कलेक्टर साहब छटूले बनकर लेट जाते हैं कि चचीजान थक गया हूँ, थपक-थपक कर सुला दीजिए। उस वक्त होता है देखने वाला मन्जर। कभी कभी तो मारे खुशी के आँसू निकल आते हैं अम्माजान के।"

साजिदा ने कहा—"वह तो वो मेरे आँसू तो यह सुनकर ही निकल आये।"

जिस वक्त उन सबकी मोटरें बाग़ में पहुँची हैं। दरख़्तों के एक कुंज में चारों तरफ कुर्सियाँ बिछी हुई थीं और उनसे ज़रा हटकर दरख़्तों की आड़ में नजमा के लिए भी इन्तज़ाम था। इसलिए कि वह बेचारी अभी उस बिरादरी से बाहर थी। उन सबके पहुंचने के थोड़ी ही देर के बाद शकील भी उछलते-कूदते आ मौजूद हुए। अख्तर ने उनको देखते ही कहा—"मुक़दमात की पेशियाँ बढ़ाने के अलावा और तो शायद कोई काम न किया होगा?"

शकील ने कहा—"लैमन्ड वग़ैरह भी साथ है।"

"मगर वग़ैरह बेचारी उधर बैठी हैं पर्दे में।" साजिदा ने कहा।

शकील ने कहा—"साजिदा पकड़ ला ना उनको। यह क्या वाहियात बात है कि यहाँ भी पर्दा!"

साजिदा ने कहा—"क्या खूब! यह भी गोया आपकी कचहरी है और गोया मैं आपकी पेशकार हूँ कि हुक्म दे दिया पकड़ लाओ।"

अख्तर ने कहा—"मगर वाकई यह तो बहुत बुरा मालूम होता है कि वह बेचारी हम सबसे अलग-अलग एक कोने में बैठी है।"

इश्तियाक ने कहा—"और पर्दा भी वो कि चिलमन तक गायब है यानी न साफ छुपने की उम्मीद, न सामने आने का अन्देशा! शकील क्या तुमको इतना भी हक़ नहीं है कि तुम अपने ज़ाति अख्तियारात से काम लेकर इस रस्मी पर्दे को उठवा दो।"

शकील ने कहा—"हक़ तो खैर मुझको बिल्कुल नहीं है। आप सबकी तरह गुजारिश मैं भी कर सकता हूँ।"

साजिदा ने कहा—"तो फिर रहने दीजिए इसको। इस कदर बेगाना बनकर देखना यह है कि कब तक आप रहते हैं।"

शकील ने कहा—"बेगानगी का सवाल नहीं है। जबकि वाक़ई मुझको क्या हक़ है ?"

रेहाना ने कहा—"हिन्दोस्तान का पैदायशी हक़ था आज़ादी ! जो मौत के वक्त उसको याद आया है।"

अख्तर ने नारा बुलन्द किया—"इन्क़लाब ज़िन्दाबाद ! बोलो श्रीमती रेहाना देवी की जय !"

सैयद ने कहा—"भाई सुनो, इनमें से किसी से पर्दा करने का उनको कोई हक़ नहीं है। अख्तर की वह बहिन, मेरी हमशीरा निस्बती।"

इश्तियाक ने कहा—"और मेरी बीवी की बहिन है। हमशीरा रिश्ते से कहना ज़रा मुनासिब नहीं समझता।"

सैयद ने कहा—"अब रह गये शकील, उनसे अलबत्ता सिवाय इस रिश्ते के जो वालदेन की तरफ से क़ायम हुआ होगा, उनका सीधा कोई रिश्ता नहीं है। लिहाज़ा यह सिर्फ शकील से पर्दा कर सकती हैं। यह मेरा फतवा* है।

शकील ने कहा—"हज़रत मौलाना के इस फतवे के बाद मैं एतकादी† तौर पर इसके लिए तैयार हूँ कि अगर नजमा सबके सामने आने को तैयार हो जाएं तो मैं उस गोशे‡ में बैठने को तैयार हूँ जिसमें वह मौजूद हैं।"

साजिदा ने कहा—"आखिर आप खुद एतमादी§ से काम लेकर नजमा का पर्दा नखूद क्यों नहीं उठा देते ?"

---

* धर्म शास्त्री की आज्ञा। † विश्वासनीय ‡ कोना।
§ आत्म विश्वास।

शकील ने कहा—"और जो नजमा ने पूछा कि जनाब कौन ?"

साजिदा ने कहा—"तो जवाब हम देंगे, आपके होने वाले सब कुछ।"

शकील ने कहा—"बहतर है मैं अर्ज़ करता हूँ।"

रेहाना ने कहा—"अर्ज़ न कीजिये, फरमाइये।"

शकील टहलते हुए नजमा की तरफ गये। थोड़ी देर तक न जाने क्या-क्या बातें कीं और इसके बाद नजमा का हाथ पकड़े हुए सबके सामने ले आये।

अख्तर ने प्यार से कहा—"आओ बहिन आओ।"

सैयद ने कहा—"ए आम्दनत बाइसे आबादी*।"

इश्तियाक और रेहाना एक बन्दर को भगाने में मसरूफ थे। इश्तियाक ने एक ढेला मारते हुए कहा—"न। महर्रम कहीं का, जानता नहीं कि एक पर्दानशीन बराफगन्दा नकाब आ रहा है।"

नजमा ने कहा—"अच्छा अब बनाने को तो रहने दीजिये। बड़ी शायरी आ गई है तो बन्दर की बजाए अपना मुखातिब रेहाना को बनाइये।"

शकील ने कहा—"अच्छा हजरत अब जरा चाय का दौर चल जाए, ताकि हम सब एक दूसरे का जामे सेहत तजवीज कर सकें।"

साजिदा ने दूर से कहा—"शकील भाई मैं पहिले से ही समझ चुकी थी कि आपको चाय याद आने वाली है। अभी लाई चाय।"

इश्तियाक ने कहा—"अच्छा साहब एक बात है कि मेरी बीवी इस मुकाबलाए हुस्न में गोया सबसे बाज़ी ले गई।"

रेहाना ने शरमा कर कहा—"अब बनाना शुरू किया है आपने, या कोई गर्ज़ अटकी होगी पान वग़ैरह की।"

इश्तियाक ने कहा—"आप शखुन फहम† मालूम होती हैं। ग़ालिब

---

* आना आबादी का कारण। † काव्य को समझाने वाली।

की तरफदार हरगिज नहीं है। पान की जरूरत तो खैर है ही, मगर जो अर्ज किया है वह भी सच है।"

सैयद ने कहा—"और मेरी बीवी खुदा की कसम अगर नस्ब[1] से काम न लो और जानिबदारी[2] न करो, तो मेरी बीवी भी इस कहत उलरजाल[3] में गनीमत साबित होगी।"

अख्तर ने कहा—"इस ऐतबार से तो मेरी बीवी भी मौजूदा इक्तसादी मुश्किलात[4] स्यासी[5] मद्दोनजर और मुआशरती इन्तशार[6] को देखते हुए बाइसे सद इफ्तखार[7] है मेरे लिए।"

शकील और नजमा को कानाफूसी में मसरूफ देखकर अख्तर ने पुकार कर कहा—"यह क्या हो रहा है?"

शकील ने कहा—"मैं यह पूछ रहा हूँ कि मैं क्या कहूँ।"

सब खिलखिला कर हंस दिये। साजिदा ने चाय के बर्तन फैला दिये और सबने हँस खेलकर चाय और नाश्ता की तरफ तवज्जह की।

---

१ जिद। २ पक्षपात। ३ सुन्दरियों की कमी। ४ आर्थिक कठिनाई। ५ राजनैतिक उतार-चढ़ाव। ६ पेचीदा दैनिक जीवन। ७ सैंकड़ों गौरव का कारण।

२०

मौलवी रजबअली साहब ने फिर एक मर्तबा हज बयत अल्ला रीफश का इरादा प्रकट किया। मगर इस बार बेगम साहिबा की तरफ से कोई विरोध न हुआ बल्कि उनकी तरफ से भी एक तमन्ना थी कि मुझ को भी इस पुण्य कार्य में पीछे न रहने दो। मौलवी साहब को भला क्या इन्कार हो सकता था। वो तो खुद चाहते थे कि उनकी शरीके जिन्दगी* इस मुबारक सफर में भी उनकी शरीक रहे। हज़रत साहब किबला से इजाज़त हासिल करने गये तो मालूम हुआ कि खुद हज़रत साहब का इरादा भी इस साल हज का हो रहा है। लिहाज़ा यह तै हो गया कि इस साल इस फर्ज़ को अदा कर ही दिया जाए। तमाम इन्तज़ामात शुरू हो गये। सामान दो तरह के थे। एक तो नजमा और शकील की शादी के इन्तज़ामात, दूसरे इसके फौरन ही बाद हज के इन्तज़ामात। नजमा और शकील की शादी के इन्तज़ामात में कोई दिक्कत न थी। एक ही लड़की थी। सब ही कुछ उसका था। दूसरे बेगम साहिबा ने नजमा के बचपन ही से उसका दहेज बटोरना शुरू कर दिया था। हद यह है कि परजा के जोड़े तक न जाने कब से तैयार रखे हुए थे। हज़रत साहब किबला की तरफ से निहायत सख्ती के साथ हिदायत थी कि शादी निहायत सादगी के साथ होगी। और धूम-धाम की बजाए उस

* जीवन संगिनी।

उत्सव के मौके पर खैर खैरात का ज्यादह खयाल रखा जाएगा। लिहाजा उस उत्सव में और भी आसानियाँ पैदा हो गई थीं। अलबत्ता सिर्फ एक रुकावट थी कि बब्बू मियाँ का मुकदमा अब तक चल रहा था और उसमें कुछ ऐसी पेचीदगी पैदा हो गई थी कि कुछ नहीं कहा जा सकता था कि कब तक यह मुकदमा तूल खेंचेगा। हरचन्द के मौलवी साहब के अलावा बेगम साहिबा भी ग़ैर मुतालिक बनी हुई थीं। मगर फिर भी अपने अजीज का मामला था। आखिर एक दिन शकील ने खुशी से बदहवास कचहरी से वापस आकर यह खुशखबरी सबको सुनाई कि बब्बू मियाँ बाइज्जत तरीके पर बरी कर दिये गये। उम्मीद है कि अब वह अपने को उन गिरावटों में न गिरायेंगे।"

मौलवी साहब ने कहा—"इन्शाअल्ला।"

बेगम साहिबा ने कहा—"चलो हटो, वह भला मानने वाला है। जो बिगड़ चुका है वह मुश्किल ही से संभल सकता है। मुझे तो उम्मीद नहीं।"

शकील ने कहा—"नहीं चची जान! यह बहुत बड़ी ठोकर खाई है और वाकई अब भी न संभले तो खुदा ही हाफिज है।"

मौलवी साहब ने कहा—"अब संभले या न संभले वहाँ रहा ही क्या है। तमाम नकद रुपया ग़ारत हो चुका, तमाम जायदाद पर पानी फिर गया। जिस कोठी में आज कल रहते हैं बस वह रह गई है।"

शकील ने कहा—"जी नहीं, उस पर भी कर्ज का भार है।"

बेगम साहिबा ने कहा—"ऊंह! हमारी बला से जैसा करेंगे वैसा भरेंगे। मगर भैया मैं तुम से कहती हूँ कान खोलकर सुन लो कि हम लोग तो होंगे हज में।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शाअल्ला।"

बेगम साहिबा ने कहा—"तोबा है, बात भी तो भुला दी। मैं समझती थी कुछ कह रहे हो, न जाने क्या कह रही थी मैं?"

मौलवी साहब ने फरमाया—"तुमने यह क्या कहा था कि हम लोग तो होंगे हज में। इन्शा अल्ला।"

बेगम साहिबा ने कहा—"हाँ! और तुम होगे अकेले। उस वक्त ज़रा उन साहबज़ादे के हत्कंडों से होशियार रहना। लपका पड़ चुका है उनको बुरी बातों का। रुपया अब पास न होगा, मुमकिन है कि मूंडने की कोशिश करें।"

मुलाज़िमा ने बाहर से लाकर एक लिफाफा मौलवी साहब के हाथ में दिया। मौलवी साहब ने चश्मे की तलाश में नाकाम रह कर शकील को लिफाफा दिया कि ज़रा पढ़ो तो किसका है? शकील ने पढ़ना शुरू किया:—

मोहतरिम व मुअज्ज़म[1]

जिनाब खालू साहब किबला दाम ज़ुलेकम[2]।

बाद आदाब के गुज़ारिश यह है कि मुकदमे के फैसले के मुतालिक आपको इत्तला होगी कि मेजिस्ट्रेट ने मेरी गिरफ्तारी के सिलसिले में किस कदर आजिज़ी के साथ पुलिस और हकूमत की ग़लती को तस्लीम करके मेरे चाल चलन की बुलन्दी का इकरार करते हुए मुझे बाइज्ज़त तरीके पर रिहा किया है। मुझ पर इल्ज़ामात लगाये गये थे वे अज़सर तापा[3] ग़लत और बे बुनियाद साबित हुए। बहरे सूरत खुदा के फ़ज़ल से खान्दान की इज्जत व आबरू पर कोई हर्फ न आ सका। बल्कि इस बहाने से एक अदालत ने हमारे खान्दान की इज्जत को गोया दस्तावेज़ी सबूत फराहम[4] कर दिया। इसमें शक नहीं कि इस ठोकर ने मुझ को संभाल दिया है। और मेरी एक आखिरी ख्वाहिश यह है कि मैं हर तरफ से किनाराकश[5] होकर अपनी जिन्दगी निहायत पाकबाज़ी और शराफत के साथ बसर करूं। मेरे इस इरादे को आपकी इमदाद तकमील[6]

---

१ आदरणीय। २ नमस्कार। ३ शुरू से आखीर तक। ४ प्रदान। ५ हट कर। ६ पूर्णतया।

तक पहुंचा सकती है। और मैं अपने लिए आपकी आगोशे शफक्कत[१] में पनाह[२] ढूँढ रहा हूँ। मैंने सुना है कि आपने हज बयत अल्ला का पक्का इरादा कर लिया है। और इरादे से कब्ल[३] आप नजमा की शादी के फर्ज से सबकदोश होना चाहते हैं। इस सिलसिले में सिर्फ इस कदर मैं भी अर्ज करूंगा कि यह मेरा हक है। मुझ को अपनी गुलामी में कबूल करने का इरादा जिनाब पहिले भी रखते थे और.........."

मौलवी साहब ने गुस्से से कहा—"बकवास, गलत। इफतराक उलअज़ाब उलऐन[४] इन्शाअल्ला यह न हुआ है न होगा।"

बेगम साहिबा ने कहा—"तोबा है। सुनने तो दो बका क्या क्या है इस खत में ?"

शकील ने फिर खत पढ़ना शुरू किया—"मुझ को अपनी गुलामी में कबूल करने का इरादा जिनाब पहले भी रखते थे। अगर पश वपेश[५] था तो सिर्फ इस कदर कि मेरी आदत और अतवार की तरफ से आप मुतमैयन[६] न थे। मगर अब जब कि मैं खुद यह तै कर चुका हूँ कि जिन्दगी के बाकी दिन हर गलत रास्ते से कतराने में गुजार दूँगा। गालबन जनाब को भी कोई उजर न होगा। मोहतिरमा[७] खालाजान साहिबा की तो दिली तमन्ना है कि वह अपनी मरहूमा[८] बहिन की रूह को खुश कर सकें।

बेगम साहिबा ने कहा—"हाँ और क्या। आग लगे तेरी सूरत को और झाडू फिरे तेरी खालाजान पर।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शाअल्ला। वह जवाब दूंगा इस ख़त का कि तबियत साफ हो जाए इस मरदूद अजली की। इस ने समझा क्या है अपने आपको। नंग खान्दान, शोहदा, बदमाश।"

शकील ने बाकी सतरें पढ़ डालीं—"रूह को खुश कर सकें और

---

१ छत्र छाया। २ आश्रय। ३ पहिले। ४ बाहेतान। ५ हील हुज्जत। ६ सन्तुष्ट। ७ आदरणीय। ८ स्वर्गीय।

उनसे जो वायदा किया था उसे पूरा करें। उम्मीद है कि आप इस सिलसिले में जल्द फैसला करके तारीख का तश्रायव* फरमावेंगे।"

आपका कफ्श बरदार†
सरदार हुसैन उर्फ बब्बू मियाँ
साकिन झवाई टोला

मौलवी साहब ने गुस्से से कहा—"बदमाश। लाओ तो ज़रा क़लम दवात वग़ैरह।"

शकील ने कहा—"चचा जान अभी आप कुछ न लिखिये, इत्मीनान से ग़ौर फरमाकर जवाब दीजियेगा।"

मौलवी साहब ने गुस्से में काँप कर कहा—"इन्शा अल्ला ग़ौर किये बग़ैर वह जवाब लिखूंगा कि छटी का दूध याद आ जाए साहबज़ादे को। जवाब यह है सिर्फ कि पचास जूते।"

बेगम साहिबा ने कहा—"ऐ हटो! जूता भी नापाक होगा। इस खत को फाड़कर वापस कर दो। सबसे अच्छा जवाब यही है।"

शकील ने कहा—"मेरा कहना मानिये। यह कुछ न कीजिये, बल्कि अब मैं क्या कहूँ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शाअल्ला वही होगा जो तुम कहोगे। फौरन कहो।"

बेगम साहिबा ने शकील का सिर सहलाते हुए—"हाँ हाँक हो ना।"

शकील ने कहा—"जवाब सिर्फ यह है कि शादी के कार्ड तो छपकर आ ही गये हैं। उन ही में से एक भेज दिया जाए।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"हां मगर नहीं, इन्शाअल्ला इस कदर शरीफाना जवाब न दिया जाएगा उस कमीने को। और न अपनी महफिल में बुलाना चाहता हूँ।"

---

* निश्चय। † चरण रज।

बेगम ने कहा—"हाँ बुलाने की तो मेरी भी राए नहीं है। छोटे गांव से नाता ही क्या। बस यह जवाब लिख दो कि खबरदार जो आइन्दा से हमको खत लिखा।"

मौलवी साहब ने ऐनक ढूंढ़ली और कड़ककर कहा—"इन्शा अल्ला! तुम ठहरो तो वह जवाब देता हूँ कि तुम भी फड़क उठो, और अज़ीज़ेमन तुम भी।"

मौलवी साहब जवाब लिखने लगे और शकील अपने कमरे में कपड़े बदलने चला आया।

२१

बब्बू ने मायूस हो जाने के बाद खिस्यानी बिल्ली की तरह खम्बा नोचने का शगल शुरू करते हुए तै किया कि अब कुछ कीचड़ नजमा पर उछाली जाए। और अगर मौलवी साहब और उनकी बेगम साहिबा तैयार नहीं होतीं तो शकील ही को बदजन* किया जाय। यह तो तै था कि अब नजमा की शादी उसके साथ न हो सकती थी। मगर वह कोशिश तो कर ही सकता था कि शकील के साथ भी शादी न होने दे। चुनाचे उसने सबसे पहिले अख्तर से मिल कर कहा—"कि अपने तमाम जान पहिचान वालों को जमा कर लें और शकील साहब को भी बुला लें। मैं उनके एहसान का बदला चुकाना चाहता हूँ, जो मेरे मुकदमे के सिल-सिले में उन्होंने किया है।" अख्तर ने इनको मना भी किया कि शकील किसी किस्म का कोई बदला नहीं चाहता। मगर जब वह बहुत ही जिद करने लगा तो अख्तर ने सबको चाय पर बुला लिया और ऐन उस वक्त जबकि सब चाय की मेज पर पहुँच कर दिलचस्प गुफ्तगू में मसरूफ थे बब्बू मियाँ ने इस जिक्र को छेड़ा—

"अख्तर भाई चाहता हूँ कि आज अपनी पोजीशन साफ कर लूं। और चूंकि शकील भाई ने मेरे साथ वह ऐहसान किया है जो मेरा

---

* भ्रम में डालना।

हक़ीक़ी भाई भी न कर सकता था। लिहाजा मैं उनसे कोई बात छुपा नहीं सकता।"

शकील ने सादगी से कहा—"आप भी क्या बातें करते हैं बब्बू भाई ! अपनों पर कौन ऐहसान करता है। मैंने जो कुछ किया मेरा फर्ज़ था।"

बब्बू ने कहा—"और यह मेरा फर्ज़ है कि मैं आप को अंधेरे में न रखूं। आपके सिर की कसम यह राज़ मैं किसी को मरते मरते न बताता मगर आप की शराफत ने मुझ को खरीद लिया है। लिहाज़ा मैं आपको एक धोके में रखना नहीं चाहता। किस्सा दरअसल यह है कि नजमा के शादी करने के लिए जो इसरार मेरी तरफ से अब तक हुआ उसकी वजह सिर्फ यह है कि मैं नजमा से वायदा कर चुका था और वह मुझसे वायदा ले चुकी है कि अपनी जिन्दगी में उसको किसी और का न होने दूंगा।"

शकील ने गुस्से में आकर कहा..."खामोश रहो, गालबन तुम मेरी शराफत से नाजाइज़ फायदा उठा कर अब उस पवित्र और मासूम लड़की की इज्ज़त पर भी गन्दगी उछालना चाहते हो।"

बब्बू ने हाथ जोड़ कर कहा—"खुदा के वास्ते मेरा पूरा बयान सुन लो, शकील भाई।"

सैयद ने कहा—"कैसे सुन लें तुम्हारा बयान। यह तो इसी हद तक कह रहे हैं कि अगर इनकी जगह मैं होता तो गुद्दी से ज़बान खेंच लेता तुम्हारी।"

बब्बू मियां ने इस पर भी बहुत ठंडे दिल से कहा—"मैं इन तमाम बातों को सुनने के लिए तैयार होकर आया हूँ। मगर जब आप पूरी बात सुन लेंगे तो मेरी नेक नीयती का अन्दाज़ा होगा।"

अख्तर ने कहा—"अच्छा आप फरमा लीजिये जो कुछ आप को फरमाना है।"

बब्बू ने कहा—"किस्सा दरअसल यह है कि खालाजान के दिल में हमेशा से यह ख्वाहिश थी कि नजमा की शादी मुझ से करेंगी, और इस ख्वाहिश से नजमा भी बाखबर थी। लड़की अपने खयालों में जिसको अपना शोहर बना लेती है उसकी पूजा भी शुरू कर देती है। चुनाचे जब नजमा को इसका यकीन हो गया कि उसकी शादी मेरे ही साथ होगी तो उसने मुझको अपनेपन की नज़रों से देखना शुरू कर दिया। खालाजान ने दानिस्ता* हम दोनों को तबादलाये खयालात† के मौके दिये और आखिर एक दिन हम दोनों में यह ऐहदो पैमान‡ हो गया कि हम एक दूसरे के होकर रहेंगे। मगर मैं कम्बख्त आवारगी में मुब्तिला होकर उस पवित्र एहद को याद न रख सका। चुनाचे जब पहली मर्तबा नजमा को इतला हुई कि मैं हुस्नो के यहाँ जाने लगा हूँ तो उसने मुझको एक पर्चा लिखा जिस पर सिर्फ एक मिसरा लिखा हुआ था—

ओ भूलने वाले यही पैमाने वफा था।

शकील ने काँपते हुए कहा—"नजमा ने लिखा तुमको?"

बब्बू मियाँ ने कहा—"गुस्सा न करो शकील भाई। मैं तुम्हारे ही फायदे के लिए कह रहा हूँ। यह देखो वह परचा मेरे पास अब तक मौजूद है।" यह कहकर उसने एक पर्चा शकील की तरफ बढ़ा दिया। जिस पर सिर्फ यह मिसरा लिखा हुआ था और वाकई नजमा के हाथ का लिखा हुआ था। अब तो शकील के पाँव तले की ज़मीन निकल गई।

बब्बू मियाँ ने कहा—"मगर जब इस पर्चे के बाद भी मेरी आँखें न खुलीं तो उसने फिर एक दिन कागज़ की एक गोली मेरी तरफ उछाली। जिस पर लिखा था—

---

* जानते हुए। † विचार विनिमय। ‡ एक दूसरे को वचन देना।

दिल ऐसी चीज़ को ठुकरा दिया नखूत परस्तों[1] ने
बहुत मजबूर होकर हमने आइने वफा[2] बदला
यह देखिये वह पर्चा यह है।

शकील ने यह पर्चा भी लेकर देखा। यह भी नजमा की लिखावट थी। उसकी आंखों के सामने अंधेरा था और अब वह लाजवाब[3] था।

अख्तर ने भी दोनों पर्चे देखे और शकील की तरफ माइनीखेज़[4] नजरों से देखकर कहा—"साहब अगर ये पर्चे दुरुस्त भी हों, अगर यह लिखावट वाकई उन ही हालात के मातहत नजमा ने लिखी हो, तो भी मैं कसम खाने को तैयार हूँ कि नजमा को आप से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता था, और न हो सकता है।"

सैयद ने कहा—"आप ये पर्चे दिखा रहे हैं और हम जनाब का हेवला देख रहे हैं। तावक्त के नजमा का दिमाग़ खराब न हुआ हो। और उस पर माऊफ उल दिमागी[5] का कोई दौरा न पड़ा हो, वह हरगिज़ आपकी तरफ तवज्जह नहीं दे सकती।"

इश्तियाक ने कहा—"बब्बू मियाँ क्या आप बता सकते हैं कि आपने इन पर्चों के क्या जवाब दिये थे?"

बब्बू ने गड़बड़ा कर कहा—"जी हाँ! मुझे यानी मुझ को गोया तमाम जवाब तो याद नहीं हैं मगर जवाब दिये जरूर थे।"

इश्तियाक ने कहा—"साफ बात यह है कि आप नजमा की जो तौहीन इस वक्त कर रहे हैं यह मामला अब इसी हद तक नहीं रहेगा। इसकी पूरी तहक़ीक़ात की जाएगी। और यह भी सुन लीजिये कि आप की इन बातों से प्रभावित होकर शकील और नजमा की शादी भी मुल्तवी न होगी। मगर चूंकि आपने ये पर्चे पेश करके कुछ काँटे जरूर बो दिये हैं। लिहाजा सबूत का भार आप ही के जिम्मे है कि ये पर्चे

---

१ अभिमानी। २ वफा का रास्ता ३ निरुत्तर। ४ अर्थ पूर्ण। ५ बेहोशी।

नजमा ने आप ही को लिखे थे। मुमकिन है कि ये पर्चे उसने शकील को लिखे हों और आपके हाथ लग गये हों।"

बब्बू ने कहा—"नहीं साहब! बखुदा यानी आप पर हैरत है कि यकीन क्यों नहीं करते। मेरा मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि मैं शादी में कोई रुकावट पैदा करूं या खुदा न ख़ास्ता नजमा पर कोई इल्ज़ाम लगाऊं बल्कि असल वाक़िया जो है वह मैंने इसलिए बयान कर दिया कि मैं शकील का दरअसल हरीफ* नहीं बल्कि वाकियात ने मुझको मजबूर कर दिया था।"

सैयद ने फिर कहा—"तो गोया आप से इश्क था नजमा को।"

बब्बू ने कहा—"यह तो मैं नहीं जानता मगर इन पर्चों से आपको क्या मालूम होता है?"

सैयद ने संभल कर बैठते हुए कहा—"देखो जी, मैं ठहरा फौजी आदमी। इन लोगों की तरह महज्जबां† नहीं हूँ कि चुप हो रहूँ। अब तुमको बताना पड़ेगा कि इन पर्चों की असलियत क्या है? और तुम्हारा इन पर्चों के पेश करने से क्या मकसद है। बताओ यह पर्चे तुमको कहाँ से मिले?"

इश्तियाक ने सैयद को समझाते हुए कहा—"सैयद सुनो तो सही।"

सैयद ने गरज कर कहा—"ठहरिये साहब मैं इससे अभी पूछता हूँ। सूरत से जराइम पेशा‡ मालूम होता है। कोई औरत इसके मुँह पर थूकना भी पसन्द न करेगी। और आया है वहाँ से झूठा पर्चा लेकर, उस गरीब फरिश्ता लड़की पर इल्ज़ाम लगाने। मैं इससे पूछकर रहूँगा वरना यह यहां से ज़िन्दा वापस नहीं जा सकता। बोल।"

बब्बू ने घबराते हुए कहा—"यानी, अरे साहब मैंने तो अपनी सफ़ाई पेश करना चाही थी। अगर इसका बदला यह है तो वापस कर दीजिये यह पर्चे, मैं इजाज़त चाहता हूँ।"

---

* प्रतिद्वन्दी। † सभ्य। ‡ अपराधी।

शकील ने कहा—"सैयद तुम ठहरो ! देखो बब्बू मियाँ पर्चे तो अब वापस न होंगे, और यह शादी भी अब उस वक्त तक न होगी जब तक कि इन पर्चों की असलियत मालूम न हो जाए। मगर आपको यह साबित करना होगा कि ये पर्चे असली हैं और जो बयान आपने पर्चों के सिल-सिले में दिया है वह भी दुरुस्त है।"

बब्बू ने कहा—" गले गले पानी में हर सबूत के लिए तैयार हूँ, बशर्ते कि आप लोग ठंडे दिल से काम लें। मैं यहां मुजरिम की हैसियत से नहीं आया हूँ। मेरी नेक नीयती का अगर फल यह है जो सैयद साहब ने अभी दिया, तो मैं अपने इरादे पर पशेमान* हूँ। वरना बहतर सूरत तो यह है कि आप इन पर्चों को अपने पास रखिये और खुद नजमा से दरियाफ्त कीजिये। मैं तो इस सिलसिले में नजमा से मुँह दर मुँह बात करने के लिए भी हाज़िर हूँ।"

अख्तर ने कहा—"यह मुनासिब है कि बजाए उनसे पूछने के तुम अलैदह तहक़ीक़ात क्यों न कर लो।"

शकील ने कहा—"बहुत अच्छा ! अब मैं तहक़ीक़ात कर लूं, इसके बाद तै कर सकूंगा कि आप मेरे दोस्त हैं या खुद अपनी जान के भी दुश्मन। इसमें शक नहीं कि ये पर्चे हैं जरूर नजमा के लिखे हुए, मगर समझ में नहीं आता क्यों लिखे थे उसने।"

सब ने मिलकर यह तै किया कि इस वक्त इस जिक्र को यहीं खत्म कर दिया जाए और अब नजमा को अपनी सफ़ाई पेश करने का मौका दिया जाए। अगर वाक़ई नजमा ने शकील को धोका दिया है तो फिर इस शादी को मुल्तवी क्या खत्म ही होना पड़ेगा। बब्बू को रुखसत करने के बाद देर तक इसी पर बहस होती रही और शकील वहाँ से इस तरह उठा गोया अपना सब कुछ खोकर उठा हो।

---

* शर्मिन्दा।

शकील की समझ में कुछ न आता था कि नजमा से कहे तो क्यों कर और तहक़ीक़ात करे तो किस तरह ? बात जितनी छोटी थी उतनी ही बलन्दी उसके पेश नजर थी। जो नजमा में उसको नजर आ रही थी। बार-बार वह उन पर्चों को देखता था, जो बब्बू मियाँ ने दिये थे। और यह हक़ीक़त उस पर रौशन हो चुकी थी कि लिखे हुए हैं ये नजमा ही के हाथ के। नजमा उसकी उम्मीदों का मरकज* थी। और जब मरकज़ ही अपनी जगह से हटा हुआ नजर आ रहा था तो वह किस सहारे पर अपने होश व हवाश को क़ायम रख सकता था। नतीजा यह कि वह खुद ही सोचता और घुलता रहा। आखिर बीमार पड़ गया। अच्छा खासा कचहरी गया था। कचहरी से इतला आई कि डिप्टी [illegible] पर दिल का दौरा पड़ा है। जिस घर में शादी की तैयारियाँ हो रही [illegible]थीं वहाँ खलबली मच गई। सब तो सब नजमा की बदहवासी का [illegible] आलम कुछ न पूछिये। तमाम शर्म व हया को बालाए ताक़ रखकर उसने [illegible] खुद ही कचहरी पहुँचने की कोशिश की। मगर मौलवी रजबअली साह[illegible] ने उसको बमुश्किल तमाम रोका, और सीधे कचहरी पहुँचे। जहां [illegible] दौरा तो खत्म हो चुका था मगर मरीज़ की हालत इत्मीनान के क़ाबि[illegible]ल न थी। डाक्टर ने अपने साथ ही कार पर उनको घर पहुंचाया

---

* केन्द्र बिन्दु।

ग्रौर सबको हिदायत कर दी कि उनको काफी ग्राराम ग्रौर निहायत बशाश फिज़ाग्रों* की जरूरत है । किसी वक्ती सदमे ने उसको प्रभावित किया है ग्रौर दिल की हालत क़ाबिले इत्मीनान नहीं है ।"

शकील को बाग़ की तरफ़ निहायत हवादार कमरे में पहुँचा दिया गया । ग्रौर बावजूद ऐहतियात के देखने वालों का बराबर तांता बंधा रहा । हुक्काम शहर से लेकर कचहरी के लोग सब ही तो मकान घेरे हुए थे । डिप्टी कमिश्नर साहब खुद बड़ी देर तक शकील के पास बैठे रहे ग्रौर इधर उधर की बातों से दिल बहलाते रहे । नजमा ने ग्रलबत्ता उनके पास जाने के बजाए नमाज़ें पढ़ पढ़ कर दुवाएँ माँगना शुरू करदीं । इधर माँ सर बसिजदा† थीं ग्रौर मौलवी रजबग्रली साहब तो बात बात पर हर एक से यही कहते थे ।

"इन्शाग्रल्ला जो होगा बहतर ही होगा । इन्शाग्रल्ला सेहत कली ग्रौर शफाए कामिल‡ हासिल होगी ।"

हजरत साहब किबला को जब इतला मिली तो खुद तशरीफ लाए ग्रौर देर तक न जाने कितनी दुवाएँ पढ़ पढ़कर दम कीं । ग्रौर जाने के वक्त मौलवी साहब को बताया कि मुझको यह सहर ज़दा§ मालूम होते हैं । ग्रौर इस ग्रर्से में ग्रगर बब्बू मियाँ ग्राने की कोशिश करें तो उनको इजाज़त न दी जाए ।"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शाग्रल्ला वह इस घर में ... ही न रखेगा, ग्रौर ग्रगर ग्राया तो इन्शाग्रल्ला हुजूर के हु... तामील की जाएगी ।"

ग्रख्तर सैयद ग्रौर इश्तियाक को मालूम था कि शकील की ... क्या है । मगर मौका इसका न था कि वे किसी से कुछ कहते ... किस्से को फिर शुरू करते । बात यह थी कि उस रोज़ के बाद से ...

* सुखद वातावरण । † भगवान की प्रार्थना में । ‡ स्वा...
§ जादू टोने से पीड़ित ।

इनमें से किसी को न मिला। अव्वल तो तबियत कुछ उचाट सी थी, दूसरे शर्म के मारे उसका दिल न चाहता था कि किसी का सामना करे। अख्तर ने इरादा भी किया कि डाक्टर को ज़रूर बता दिया जाए कि मर्ज़ की वजह क्या है? मगर सैयद ने मना कर दिया—"क्या फायदा होगा डाक्टर से कहने में। डाक्टर इस नतीजे पर तो पहुँच ही चुका है कि किसी फौरी सदमे का यह असर है। अब अगर तुमने यह बात डाक्टर को बताई और डाक्टर ने घर वालों से यह बात कह दी तो इसका नतीजा सिर्फ यह होगा कि खुद शकील को इतला हो जाएगी और मुमकिन है इससे और भी उसको सदमा हो।"

इश्तियाक ने कहा—"मेरे नज़दीक भी कहना मुनासिब नहीं है। डाक्टर का खयाल यह है कि हालत रोज़ बरोज़ सुधार पर ही है। कुछ दिन में इस सदमे का असर बिल्कुल जाता रहेगा।"

अख्तर ने कहा—"सदमे का असर जा कैसे सकता है। डाक्टर को क्या मालूम कि किस किस्म का सदमा है। मेरे खयाल में तो डाक्टर को बता देना ही मुनासिब है।"

इश्तियाक ने कहा—"मैं अभी इस राए से मुत्तफिक* नहीं हूँ। अगर ऐसा ही खयाल है तो हालात कुछ और संभल जाने दो। मुमकिन है कि मौजूदा हालत में राज़ के खुल जाने का झटका उनके लिए और मुज़िर† हो।

आखिरकार सबने मिलकर तै कर लिया कि डाक्टर से तो कुछ न कहा जाए लेकिन शकील के पास बैठ कर इस बात पर जोर दिया जाए कि बब्बू मियाँ ने खुद यह जाल फैलाया है और यह इल्ज़ाम यकीनन ग़लत है। शकील पर अब बज़ाहिर मर्ज़ का कोई असर न था। वह बातें भी करता था, हँसता भी, सोता भी था, मगर थोड़ी थोड़ी देर के बाद कुछ खो सा जाता था। नजमा एक तो अपना काम कर रहीं

---

* सहमत। † हानिप्रद।

थी यानी उसको जो कुछ कहना था खुदा से कह रही थी। दूसरी बात यह थी कि शादी क़रीब हो जाने की वजह से दूर और क़रीब के सब रिश्तेदार तो आ चुके थे और इसके लिए यह मुमकिन न था कि सबकी आँखों में धूल झोंक कर वह शकील के पास बराबर जाती रहती। रस्म व रिवाज के मुताबिक अब उसको शकील से पर्दा करा दिया गया था। फिर भी वह इस अर्से में दो तीन मर्तबा शकील के पास हो ही आई। यह और बात है कि शकील ने उससे उस शगुफ़्तगी(*) के साथ बात न की जो शकील का मिजाज था। मगर अफसर्दगी(†) को नजमा ने बीमारी की वजह समझकर कोई ख़ास तवज्जह न की और बदस्तूर अपनी दुआओं में मसरूफ रही। साजिदा नरगिस और रेहाना को भी खबर न थी कि घटना क्या है। ये तीनों तकरीबन रोज आती थीं और देखकर चली जाती थीं। दो रोज तक यही कार्यक्रम रहा। आखिर तीसरे रोज शकील ने अख्तर से कहा—"अख्तर भाई मैं बड़ा परेशान हूँ।"

अख्तर ने बात काट दी—"आप बड़े परेशान नहीं बड़े गधे हैं। हम लोगों ने जिस कदर इस बात की अपनी अपनी जगह तहक़ीक़ात की है वह बात उतनी ही लचर और लगू(‡) साबित हो रही है और आपने अपना यह हाल बना रखा है। बेवकूफ कहीं के।"

शकील ने कहा—"नहीं परेशान मैं इसलिए हूँ कि शादी की तारीख सिर पर आ गई है। तमाम अजीज एक एक करके इधर से उधर चले आ रहे हैं। अब मुझे बताओ कि मैं किस तरह चचाजान और चचीजान से कहूँ कि मैं फिलहाल शादी नहीं कर सकता।"

इश्तियाक ने कहा—"वाकई शकील तुमको खुदा जाने किसने डिप्टी कलेक्टर बना दिया। एक थर्ड क्लास इन्सान ने तुमको एक ही चकमे में इस तरह मुतासिर(§) कर दिया। ग़ौर करने की बात यह है कि नजमा का दिमाग़ खराब है, अक्ल पर पत्थर पड़ गये हैं, आँखों में

---

* प्रसन्नता। † दिलगीरी। ‡ बेकार। § प्रभावित।

कोई नुक्स है ; आखिर किसी बीमारी की वजह से उसने बब्बू ऐसे गधे से पैमाने वफा बांधा होगा। और आपके और उनके पास क्या सबूत है कि यह पर्चे वाकई नजमा के लिखे हुए हैं ?"

शकील ने कहा—"सबूत की कोई जरूरत नहीं, नजमा का खत मैं पहचानता हूँ। और इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि ये लिखे हुए उसी के हैं।"

सैयद ने कहा—"ज़रा इस बात पर भी ग़ौर कीजिये कि यह एक मिसरा और दूसरे पर्चे वाला शेर किसी और ज़रूरत से भी लिखा जा सकता है। और फर्ज़ करलो कि नजमा ने वाकई इस ज़रूरत से लिखा हो और वाकई बब्बू को दिया हो तो भी एक हज़ार एक सबब हो सकते हैं। मसलन यह कि चंचल तो हैं ही ये सब की सब, बेबकूफ बनाया हो बब्बू को। अरे भई खुद मेरी बीवी ने मुझे अपने इश्क की दास्तान सुनाई है कि एक अजीज़ हैं उनके कोई खालिद साहब। उनको मुद्दतों से हमारी बेगम साहिबा यकीन दिलाती रहीं कि बस आज जान देती हूँ और कल। वह बेचारे खुद बिल्कुल आमादाह थे इन्तकाल फरमाने के लिए और शायद इन्तकाल फरमा भी जाते, कि उनको रहम आ गया उनकी हालत पर और उनको समझा दिया कि हम तो आपको महज़ बेवकूफ बना रहे थे, कहीं सचमुच नहीं मरजाईयेगा।"

शकील ने बावजूद इस हालत के हँसकर कहा—"क्या वाकई ?"

अख्तर ने कहा—"अरे भई तुमने तो देखा होगा खालिद को वह कच्ची सी दाढ़ी रखे हुए—सटपटाते हुए से बुजुर्ग खालाज़ाद भाई होते हैं हम लोगों के। उनको वाकई यह ग़लत फहमी हो गई थी कि सजिदा उनके सिवाय अपने लिए मरने का इरादा और बहाना नहीं ढूँढ सकती। उनको यकीन ही दिलाया गया था कुछ इस तरह।"

शकील ने बदस्तूर हँसते हुए कहा—"क़यामत हैं क़यामत ये

लड़कियाँ। मगर ऐसा कोई किस्सा होता तो नजमा मुझ से जरूर कहती।"

सैयद ने कहा—"वह क्यों, अभी वह आपकी जोजियत में नहीं आई। अभी वह आपसे इस कदर बेतकल्लुफ नहीं। आखिर वह इस किस्म की बातें कैसे कह सकती है। मुमकिन है कि इस किस्म का कोई किस्सा न हो, बल्कि कोई और ही बात निकले। मगर यह तय है कि बब्बू ने जो कुछ कहा है वह यकीनन ग़लत है।"

देर तक इसी किस्म की बातें होती रहीं और इन बातों का निहायत खुशगवार असर शकील पर पड़ा। यानी जिस वक्त ये लोग रुखसत हुए वह सकून की नींद सो गया।

२३

शकील का इलाज बदस्तूर हो रहा था। मगर शकील को खुद यह मालूम था कि ये तमाम दवाएँ बेकार हैं :—

जिसे दर्दे दिल की खबर भी नहीं है
वही दर्दे दिल की दवा जानता है

उसे मालूम था कि उसको अगर आराम हो सकता है तो नजमा के एक हर्फ तसल्ली से। अगर यह वाक़िया सच निकला तो वह खुद अच्छा होना न चाहता था। आखिर एक रोज़ जब कि सुबह की नमाज पढ़कर नजमा ने घर भर की नींद से फ़ायदा उठाकर शकील के कमरे में कदम रखा तो वह इस तरह जाग रहा था जैसे उसी की इन्तज़ार में हो। उसने नजमा को देखते ही कहा—"सुबह बखैर नजमा।"

नजमा ने करीब जाकर कहा—"कैसी तबियत रही आपकी ?"

शकील ने कहा—"कुर्सी करीब लेकर बैठ जाओ। आज मैं या तो सेहतयाब* होना चाहता हूँ, वरना मुझे सेहत की कोई जरूरत ही न रहेगी। मैं अपनी बीमारी की तफसील† सुना कर तुमसे दवा माँगूँगा।"

यह कहकर उसने शुरू से आखीर तक तमाम अफसाना सुनाया। कि किस तरह बब्बू मियाँ ने अख्तर के यहां सबको जमा किया और क्यों कर अपने और तुम्हारे मुआशिके‡ का किस्सा बयान करके यह दो

---

* स्वस्थ। † विवरण। ‡ प्रेम।

पर्चे सबको दिखाए। और वह क्यों कर इसके लिए आमादाह हो गया कि नजमा से मुँह दर मुँह गुफ्तगू करने को तैयार हूँ। नजमा का आलम इस वक्त यह था कि चेहरा जर्द था, आँखें डबडबाई हुई थीं और पतले पतले होंठ काँप रहे थे। आखिर शकील जब सब कुछ कह चुका तो नजमा ने कहा—"अब मुझको सिर्फ यह पूछना है कि आप मुझसे कुछ पूछना चाहते हैं या बगैर मुझसे पूछे हुए कुछ समझना चाहते हैं ?"

शकील ने कहा—"मुझको माफ करना नजमा कि मैं इस कदर घटिया और गिरी हुई बात कर रहा हूँ। कि में तुम ही से कुछ पूछना चाहता हूँ, खुद कुछ समझने की ताक़त और सलाहियत* इस किस्से ने मुझमें बाकी नहीं रहने दी है।"

नजमा ने कहा—"शकील मैं सिर्फ इस कदर कह सकती हूँ कि इस सिलसिले में सिवाय इसके मुझे और कुछ नहीं मालूम कि जहाँ तक मेरा ताल्लुक है मेरे दिल के किसी गोशे से वह नफरत किसी वक्त भी न हट सकी जो बब्बू के लिए हमेशा से मेरे दिल में मौजूद है, और जिसको मैं अपनी खुश मजाकी† शराफत और बलन्दी की निशानी समझती हूँ।"

शकील ने कहा—"इसका तो मुझे यकीन है मगर इसका भी यकीन है कि ये पर्चे तुम्हारे हाथ के लिखे हुए हैं।"

नजमा ने दो मोती अपनी आँखों से गिराते हुए कहा—"हाँ मेरे हाथ के हैं।"

शकील ने कहा—"ये तुमने बब्बू को दिये थे या नहीं ?"

नजमा—"क्या मुझको यह कहने की जरूरत है कि मैंने नहीं दिये थे। शकील तुम मुझको इतना गिरा हुआ समझते हो ?"

शकील ने कहा—"मैं कैसे समझाऊँ नजमा कि मैं तुमको कितना बलन्द समझता हूँ। मगर तुम मेरी इस कमज़ोरी को तो सहारा दो कि मेरे सामने यह तहरीरी‡ सबूत पेश किया गया है। एक अफसाने के

* योग्यता। † सुरुचि। ‡ लिखित।

साथ अफसाना तो ग़लत हो सकता है मगर यह तहरीर मैं क्यों कर ग़लत मान लूँ ।"

नजमा ने कुछ सोचते हुए कहा—"हाय कम्बख्त ! मुझको तो यह भी याद नहीं कि मैंने कब और क्यों ये शेर लिखे थे । मालूम होता है कि कभी मैंने ये शेर लिखकर फाड़ डाले हैं और रद्दी की टोकरी से ये दो टुकड़े उस कम्बख्त के हाथ लग गये हैं । ज़रा देना तो सही मुझको ।"

शकील ने दोनों पर्चे बढ़ा दिये । नजमा उनको ग़ौर से देख कर एक मर्तबा उछली—"अच्छा ठहरो, बल्कि नहीं तुम घंटी बजाओ ।"

शकील ने कहा—"क्या बात है कुछ बताओ तो सही ?"

नजमा ने खुद घंटी बजाते हुए कहा—"अभी पता चल जाएगा ।"

शकील का खानसामा कमरे में दाख़िल हुआ तो नजमा ने कहा—"देखो शकूर मेरी मेज़ पर एक नोटबुक रखी है, स्याह रंग की । ज़रा उसे उठा लाना ।"

खान्सामा के जाने के बाद शकील ने कहा—"आख़िर बात क्या है ?"

नजमा ने कहा—"अभी मालूम हो जाती है बात, इस कदर बेचैनी की क्या ज़रूरत है । खुदा करे मेरा शक सही हो ।"

खान्सामा ने नोटबुक लाकर नजमा के हवाले कर दी । उसने जल्दी जल्दी नोटबुक के सफे उलट कर एक मर्तबा फिर उछल कर कहा—"या अल्ला तेरा शुक्र है । यह लीजिये, ये दोनों पुर्ज़े इस सफे से फाड़े गये हैं । मिला लीजिये सतर से सतर, रोशनाई से रोशनाई ।"

शकील ने बैठ कर हैरत से नोटबुक और उन पर्चों को देखा । वाकई में दोनों पुर्ज़े इसी नोटबुक के इसी सफे से फाड़े गये हैं । वही कागज़ वही करीब करीब खिचीं हुई सतरें और वही रोशनाई । शकील

ने हर तरह इत्मीनान करने के बाद कहा—"यक़ीनन यह इसी नोटबुक से फाड़े गये हैं।"

नजमा ने कहा—"यही नहीं बल्कि किसी को भेजकर साजिदा और नरगिस की नोटबुक भी मँगवा लीजिये। उम्मीद है कि ये अशआर उनमें भी मौजूद होंगे।"

शकील ने कहा—"क्या मतलब ?"

नजमा ने कहा—"अन्जुमन मऐयन उल अदब* के सालाना मुशायरे में साजिदा और नरगिस के साथ मैं भी गई थी। और वहीं जो अशआर हम लोगों को पसन्द आये थे वो अपनी अपनी नोटबुक में लिखते रहे थे। मेरा खयाल है कि :—

दिल ऐसी चीज को ठुकरा दिया नखवत परस्तों ने।

बहुत मजबूर होकर हमने आईन वफा बदला।

यह शेर तो सब ही ने लिखा है। खुदा के लिए आप किसी को भेजकर साजिदा और नरगिस की नोटबुक मंगवा लीजिये।"

शकील ने कहा—"अब मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं। सारा किस्सा आईने की तरह मेरे सामनें है। उस कम्बख्त बब्बू ने तुम्हारी नोटबुक से ये पुर्जे इसी गर्ज से फाड़े थे कि जरूरत पड़ने पर इसी किस्म का फिसाद पैदा करेगा। चुनाचे वह अपनी तरकीब में कामयाब हो गया। उसने मुझको कामयाब धोखा दिया और मैं ऐसा बेवकूफ कि मुझे उसने इस हद तक मुतासिर† कर लिया कि मैंने तुम्हारे सिर इस जलील इल्जाम को गोया मंढ़ ही दिया। नजमा मैं किस मुँह से अपनी गिरी हुई हरकत के लिए तुमसे माफी माँगूँ। मैंने क्यों तुम पर शक की नजर डाली। तुम्हारे मुतालिक यह गुमान ही मेरे जहन‡ में क्यों पैदा हुआ। मैं यकीनन इस काबिल नहीं हूँ कि तुम मुझ को माफ करो।"

---

* साहित्य सभा। † प्रभावित। ‡ बुद्धि।

यह कहते कहते शकील ने निढाल होकर अपना सिर तकिये पर डाल दिया और नजमा का कलेजा धक से हो गया। कि कहीं इन पर फिर दिल का दौरा न पड़ जाए! उसने दिलदेही करते हुए कहा—"कमाल करते हैं आप! अगर आप इस सिलसिले में बदगुमान न हो जाते तो मुझको शिकायत पैदा होती। जाहिर है आपकी यह बदगुमानी आपकी वाबस्तगी* को मुस्तहकिम† साबित कर रही है। जिस कदर ज्यादा ताल्लुक खातिर होगा उसी कदर शक की हिस‡ भी तेज़ होगी।"

शकील ने कहा—"यह सिर्फ तसल्ली है नजमा। मेरा दिल इस वक्त मुझको खुद मलामत कर रहा है। मैं तुमसे आँख चार करने के क़ाबिल नहीं।"

नजमा ने कहा—"और मैं इस वक्त फूली नहीं समाती कि आपको मुझसे इस हद तक वाबस्तगी है कि आप इस शक के मातहत अपनी जान से दूर ज़ान की बाजी तक लगा चुके थे। अच्छा खैर अब आप इस नागवार बहस को खत्म और खुदा के लिए अब अपनी सेहत का खयाल कीजिये। खुदा समझे उस कम्बख्त से, जिसने जान ही ले ली होती।"

शकील ने नजमा का हाथ पकड़ कर कहा—"मेरी नजमा! क्या वाकई तुम इस कदर बलन्द हो? कि मुझे इतना पस्ती में गिरा हुआ देखकर भी माफ करने के लिए तैयार हो।"

नजमा ने हँसकर कहा—"आपका तो दिमाग़ है खराब। हाँ मैं इसी शर्त पर माफ कर सकती हूँ कि आप जल्दी से जल्दी तन्दुरुस्त होने की कोशिश कीजिये। बड़े अच्छे मालूम होते हैं बेचारे। इतना भी कोई किसी बात का असर लेता है? और जो दुश्मनों की हालत ज्यादा खराब हो जाती तो?"

---

* घनिष्ठता। † दृढ़। ‡ गति।

शकील ने कहा—"अब मैं बिल्कुल अच्छा हूँ। मेरा इलाज तुमने कर दिया। मेरे मर्ज को तुमने पहिचान लिया और मुझको मेरे मर्ज़ की दवा तुमने इसी ब्याज * से निकाल कर दी।"

दूर से मौलवी साहब की आवाज़ आई—"इन्शाअल्ला।"

शकील से नजमा ने हाथ छुड़ाते हुए कहा—"अब कल सुबह मैं देखने आऊँगी। आप मुझको बिल्कुल तन्दुरुस्त मिलें।"

शकील ने हँसकर कहा—"इन्शाअल्ला।"

नजमा ने नोटबुक ले जानी चाही मगर शकील ने छीन ली। मौलवी साहब के इन्शाअल्ला की आवाज़ अब बिल्कुल करीब थी लिहाजा नजमा एक झपाके के साथ यह जा और वह जा।

* नोटबुक।

२४

नजमा के जाने के बाद ही शकील ने कागज उठा कर पर्चा लिखा :—

"अख्तर सैयद और इश्तियाक बेचैनी से मुन्तजिर* हूँ। जिस आलम में हो चले आओ।

तुम्हारा शकील

और खान्सामा को बुलाकर बाईसिकल पर अख्तर के यहाँ भेज दिया। बस इतनी देर लगी होगी कि अख्तर ने इश्तियाक को उनके यहां से बुयाया। इसके बाद बगैर शेव किये बगैर गुस्ल† किये, जिस तरह बैठे थे तीनों उस पर्चे के जवाब में खुद आ मौजूद हुए। बल्कि उस पर्चे से थोड़ी सी परेशानी भी हुई कि आखिर किस्सा क्या है? चुनाये साजिदा और नरगिस भी रेहाना के यहाँ यह कहलवा कर रवाना हो गई कि फौरन नजमा के यहाँ पहुँचो। अख्तर और सैयद वगैरह के पहुँचने के बाद शकील ने बिस्तर से एक छलांग लगाकर अपने को एक आराम कुर्सी पर गिराते हुए कहा—"अख्तर मैं अच्छा हो गया। सैयद मैं बीमार नहीं हूँ। इश्तियाक मैं तन्दुरुस्त हो गया। बच गया, बचा लिया गया।"

सैयद ने कहा—"या वहशत। आखिर बदहवास क्यों हुए जाते हो।"

---

* प्रतीक्षा में। † स्नान।

अख्तर ने चुपके से कहा—"दिमाग़ पर असर मालूम होता है।"

इश्तियाक ने जरा ऊँची आवाज से कहा—"लेट जाओ शकील, बैठने को मना किया है डाक्टर साहब ने।"

शकील ने हँसकर कहा—"गधे हैं आप। गोया किसी पागल से बात कर रहे हैं जनाब। इधर आओ मेरे करीब। ये देखो ये वही पुर्जे हैं ना ?"

अख्तर ने कहा—"हाँ वही हैं, फिर ?"

शकील ने नोटबुक का वही सफा खोलकर कहा—"यह देखो यह इसी सफे से ये पुर्जे फ़ाड़े गये हैं ना। सतर से सतर मिला लो। वही क़ागज है, वही रोशनाई है, वही तहरीर* है।"

इश्तियाक ने कहा—"वाकई यह तो इसी सफे से फाड़े गये हैं।"

सैयद ने ग़ौर से पुर्जो और नोटबुक को देखते हुए कहा—"यह किस्सा क्या है आखिर ?"

शकील ने कहा—"किस्सा सिर्फ यह है कि डूब मरना चाहिये। सबसे पहिले मुझको इसके बाद तुम सबको। कि इस हिमाक़त मुजस्सिम† ने हम सबको बेवकूफ बना दिया। किस्सा असल में यह है कि नजमा साजिदा और नरगिस अन्जुमन मऐयन उल अदब के मुशायरे में गई थी। औरतों को तो आदत होती है कि मुशायरे के इशआर टांक लिया करती हैं। चुनाचे इन तीनों ने भी अपनी अपनी नोटबुक पर अपनी पसन्द के इशआर लिख लिये थे। नजमा की नोटबुक मेज पर रखी थी। आपने इसमें यानी मेरी मुराद बब्बू मियाँ से है कि उन हजरत की नजर पड़ी होगी उस ब्याज‡ पर। आपने उस में से ये इशआर अपनी हराम-जदगी के मुफीद मतलब समझकर निकाल लिये होंगे। सबसे पहिले तो इन इशाआरों से काम लिया गया होगा हस्सो के यहाँ। उसको दिखाने के लिए

* लिखावट। † साक्षात मूर्खता। ‡ नोटबुक।

कि देखो मैं ऐसा बुततन्नाज[१] हूँ कि लड़कियाँ मेरे इश्क में मर रही हैं। इसके बाद उसने हमको बहकाने के लिए यह जहर फैलाया।"

अख्तर ने कहा—"लानत है आप पर। यह जनाब ही की ज़ात सतोदह सफात[२] हैं कि इस थर्ड क्लास साजिश का शिकार हो गए।"

सैयद ने कहा—"भई यह ग़लत है। उस कम्बख्त ने कहा ही कुछ इस अन्दाज़ से था कि ईमान की बात यह है कि मेरे दिल में भी कुछ शकूक पैदा हो गये थे।"

इश्तियाक ने कहा—"दूसरे यह कि इन बेचारे को तो बदगुमान होने का हक़ भी था। यके इश्क व सद बदगुमानी[३]।"

सैयद ने कहा—"मैं तो खुदा की कसम उस रोज़ इतना मुशतअल[४] हुआ था कि उन हज़रत को बगैर मारे न छोड़ता।"

दरवाजे का पर्दा हिला और साजिदा ने कहा—"हम लोग हाज़िर हो सकते हैं ?"

शकील ने कहा—"बसरो चश्म[५]। यानी आप लोग भी मौजूद हैं।"

रेहाना ने कहा—"जी हाँ ? पर्चा भेजकर सबको परेशान कर दिया।"

मैंने तो कहा कि इलाही खैर हो, न जाने शकील भाई कैसे हैं। वह तो कहिये कि फौरन अक्ल से काम लेकर यह ग़ौर किया कि पर्चा खुद आप ही ने लिखा है लिहाज़ा तन्दुरुस्त तो यकीनन हैं। मगर जो बात भी हो ज़रूरी है। लिहाज़ा भागी फौरन।"

नरगिस ने कहा—"मगर शकील भाई क्या कहना है आपका। नाकिस उल अक्ल[६] खिताब है औरतों का, और अक्ल के पुतले अक्ल के ऐसे नीलाम कुनन्दह होते हैं कि खुदा ही बचाए। चरका दिया भी तो किसने, जिसके जिस्म से हिमाक़त के ज़रासीम[७] उड़ा करते हैं और

---

१ काबिल। २ अच्छी खूबियाँ। ३ एक प्रेम और सैंकड़ों शक। ४ क्रुद्ध। ५ सिर आँखों पर। ६ मूर्खा। ७ कीटाणु।

"जिसके चेहरे पर लख्ती लटक रही है। मैं नजीब उल तर्फीन* ऐहमक हूँ।"

अख्तर ने कहा—"अरी वाहरी मेरी बीवी। जय हो तुम्हारी। नजब उल तरफीन एहमक का कुछ जवाब ही नहीं।"

नरगिस ने कहा—"खैर जनाब से तो बाद में दरियाफ्त किया जायगा कि आखिर इस तमाम किस्से की इतला मुझको क्यों न हुई? और जो इस राज़दारी की बदौलत अल्लाह न करे शकील भाई की जान पर बन जाती तो?"

रेहाना ने कहा—"और न कुछ इन्होंने कहा मुझसे।"

साजिदा बोली—"हमारे साहब बहादुर तो साबित ही हुए हैं अटेंनशन। यह खयाल डबल मार्च कर गया होगा वरना दावा तो यह है कि मैं हर बात आकर घर में कह दिया करता हूँ।"

अख्तर ने कहा—"क्या कहते हम लोग। कौन सी खुशगवार बात थी। कहते हुए भी तो शर्म आती थी।"

नरगिस ने हाथ मटकाते हुए कहा—"अल्ला रे आपकी शर्म देख ली। इस शर्म का नतीजा कि शकील भाई खुदा के घर से लौटे हैं।"

इश्तियाक ने कहा—"मेरा इरादा तो हो ही रहा था कि अपनी हमजादं† को आज बता दूँ।"

रेहाना ने कहा—"बस रहने दीजिये। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बड़ी से बड़ी बात हो जाए और आप लोग ऐसे हैं कि हवा भी न लगने दें। अगर यह किस्सा हम लोगों को मालूम होता तो इतना तूल ही न खिचता।"

सैयद ने कहा—"यह ग़ौर कर रहा हूँ कि बब्बू को अब क्या सजा दी जाए।"

---

* जन्मजात। † जीवन संगिनी।

साजिदा ने कहा—"मालूम भी है कुछ, वह उस दिन से मफकूद उल खबर[1] है। पता नहीं उनका।"

शकील ने कहा—"सजा वजा अब कुछ नहीं, सजा का मुस्तहिक[2] मैं हूँ, कि मैं इस जलील किस्म की गलतफहमी में मुब्तिला ही क्यों हो गया।"

रेहाना बोली—"आप लोगों का क्या है गलतफहमी का। खुदा न करे कि मौक़ा मिल जाए फिर भला आप लोग बख्शने वाले हैं।"

इश्तियाक ने कहा—"खसूसन मैं तो हरगिज़ न बख्शूँगा। सवाल यह है कि आखिर मौका दिया ही क्यों जाए।"

रेहाना ने कहा—"कौन देता है मौक़ा। यह मौका तो नजमा ने दिया था या खुद खरीदा गया था।"

"तो यह है नजमा के मुतालिक खयाल।"

"और फिर किसके मुतालिक़ हो ? ऐसे जो हर एतबार से जानवर है, के मुतालिक।"

साजिदा ने कहा—"इसका मतलब यह भी तो हुआ कि ये लोग खुद ऐतमादी[3] से कतन काम नहीं लेते। हालांकि गौर करने की जरूरत यह थी कि बब्बू में क्या खसूसियत[4] है। सूरत मुलाखित[5] कीजिये तो अजाइबखाना हैवानात[6] की सैर का लुत्फ आता है। गुफ्तगू सुनिये तो शुबा होता है कि थियेटर के चार आने वाले दर्जे में जगह मिल गई है।"

नरगिस ने कहा—"लिबास देखिये तो मालूम होता है कि पानों की पिटारी छोड़कर भागे हैं या सारंगी भूल आए हैं कहीं।"

रेहाना ने कहा—"कुछ भी हो, उसने ऐसे ऐसे आला दिमागों को

---

१ लापता। २ पात्र। ३ आत्म विश्वास। ४ विशेषता। ५ देखिये। ६ चिड़िया घर।

वह बेवकूफ बनाया है कि उसकी जहानत* से किसी को इन्कार न होना चाहिये।"

सैयद ने गुस्से से कहा—"जहानत नहीं, इसको खबासत† कहते हैं। तुम लोग चाहे माफ कर दो, मुझको तो अगर वह मिल गया तो मारे हन्टरों के उधेड़ कर रख दूंगा। बदमाश कहीं का। इतना मारूँगा कि सारी बदमाशी भूल जाएगा।"

बाहर से आवाज आई—"इन्शाअल्ला।" लड़कियां लड़खड़ाती भागीं अन्दर और ये सब संभल कर बैठ गये।

मौलवी साहब ने तशरीफ लाते हुए कहा—"इन्शाअल्ला अब आज ही कल में तुम बिल्कुल तन्दुरुस्त हो जाओगे।"

अख्तर ने कहा—"ये अब तन्दुरुस्त हैं। गालबन कल तक बिस्तर छोड़ देंगे।"

मौलवी साहब ने जाते हुए कहा—"इन्शाअल्ला।"

उनके जाने के बाद इश्तियाक ने कहा—"यार शकील ये तुम्हारे इन्शाअल्ला खाँ इन्शा हैं बड़ी मुहब्बत के बुजुर्ग।"

इन्शाअल्ला खां इन्शा पर सबको हँसी आ गई। इस हँसी में आज शकील भी बराबर का शरीक था। इसलिए कि उसका दिल भी हँस रहा था।

* बुद्धिमता। † दुष्टता।

मौलवी रजबअली साहब के घर की चहल पहल का क्या पूछना। आज उनके यहां दोहरी खुशी थी। शकील का गुसले सेहत भी और नजमा की शादी भी। घर में साजिदा रेहाना और नरगिस के हाथ में तमाम इन्तजाम था, और बाहर इश्तियाक और अख्तर मुन्तजिम थे। इसलिए कि सैयद सिर्फ डाँट डपट के आदमी थे, इन्तजामी मामलात में उनको चन्दा दखल न था। और मौलवी साहब बेचारे के सुपुर्द अगर कोई इन्तजाम कर दीजिये तो वह "इन्शाअल्ला हो जाएगा—,, कहकर उससे मुतमैयन* हो जाते थे। गोया अब अल्ला ही उस काम को करे तो वह हो। अख्तर ने मर्दाना जियाफत का निहायत उम्दा इन्तजाम किया था। बात यह थी शकील की उस शहर में मुलाजमत की वजह से तमाम मुकामी हुक्काम† जिनमें कमिश्नर तक शामिल थे, मदू‡ थे। शहर के तमाम हुक्काम के अलावह तमाम वकील, बैरिस्टर और तमाम उमाएदीन शहर§ आ रहे थे। खाना दरअसल तीन तरह का था। अंग्रेजी अलग, हिन्दू मेहमानों के लिए अलग और मुसलमानों के लिए अलग। इन्तजाम यह था कि बरात अख्तर के यहाँ से चल कर मौलवी रजबअली साहब के यहाँ आये और दुल्हन रुखसत होकर अख्तर मंजिल ही जाए। चुनान्चे ठीक छः बजे अख्तर के यहाँ से बरात रवाना

* सन्तुष्ट। † अधिकारी। ‡ निमन्त्रित। § गणमान्य व्यक्ति।

हुई। बरात क्या थी मोटरों की कतार थी। जिसके बीच में एक फूलों से लदी हुई गाड़ी में सैयद, इश्तियाक, अख्तर डिप्टी कमिशनर और कमिशनर के साथ में नोशा था। मौलवी साहब के दरवाज़े पर बरात का खैर मुकद्दम* मौलवी साहब खुद और हजरत साहब किबला ने फरमाया। और दूल्हा को मये मुआज़िज मेहमानों के उस बार गाह† में पहुँचा दिया गया जो इसी मकसद के लिए बजाते खुद, दुल्हन की तरह सजा दी गई थी।

ऊपर से तमाम औरतें बरात की आमद का मंजर† देख रही थीं। मगर उनमें साजिदा, रेहाना ''और नरगिस न थीं। इसलिए कि ये तीनों तो दुल्हन के कमरे में मौजूद थीं। जिसमें बाहर का मंजर‡ देखने के लिए दो खिड़कियाँ थी। साजिदा ने रेहाना से कहा—"इश्तियाक भाई ने यह शेरवानी खुद अपनी शादी में क्यों न पहनी थी?"

नरगिस ने कहा—"शर्म आती होगी कि अपनी ही शादी में अब क्या पहिनें। मगर सच तो यह है कि आज दुल्हा तो वह खुद बने हुए हैं।"

साजिदा ने कहा—"और दुल्हा बने अभी कितने दिन हुए हैं। अगले जमाने में तो इतने दिनों के दुल्हाओं के मुँह से रूमाल भी न हटता था। यह तो इस जमाने की खूबी है कि न तो दुल्हनों में शर्म व हया और न दुल्हा को आये गये का लिहाज़। क्या जमाना आ लगा है बीबी?"

रेहना ने ठंडी साँस भर कर फरमाया—"सच कहती हैं नानी अम्मा आप।"

साजिदा ने नानी अम्मा बनकर कहा—"अरे बेटा जब मैं तुम्हारी उमरों की थी तो शादी के बाद ढाई महीने तक तो दुल्हन की आँख ही न खुलती थी।"

---

* स्वागत। † स्थान। ‡ दृश्य।

नरगिस ने कहा—"और ढ़ाई महीने के बाद असल में दुल्हा को पता चलता था कि दुल्हन अन्धी है या कानी।"

नजमा को भी हँसी आ गई तो साजिदा ने कहा—"देख लिया, हाय गजब। यह वह दुल्हन हँस रही है जिसकी बरात दरवाज़े पर बैठी है। बेटा मुझको तो वह ज़माना याद है कि शादी से एक हफ्ताह इधर और एक हफ्ताह उधर दुल्हन साँस भी न लेती थी।"

रेहाना ने कहा—"और यह मश्क* दुल्हनें दम साधने वाले साधुओं से किया करती थीं। बहुत सी दुल्हनें तो ऐसी भी गुज़री हैं कि शादी के बाद से फिर बेचारियों ने साँस ही नहीं ली।"

साजिदा ने कहा—"ऐ मुझ ही को देख लो। अल्ला रखे पोते नवासों वाली हूँ मगर आज तक तुम्हारे नाना अब्बा को पता नहीं चला है कि मैं खाना भी खाती हूँ या नही।"

नजमा से जब्त न हो सका—"कम्बख्त खुद नानी अम्मा बनी हुई है। सैयद भाई को नाना अब्बा बना दिया।"

नरगिस ने कहा—"और आवाज़ तो देखो कैसी पोपली बन जाती है जो कोई पहिचान सके, कि यह साठ बरस से कम की बुढ़िया नहीं है। सैयद भाई यह आवाज सुन लें तो उनके बाल भी सफैद हो जाएं।"

रेहाना ने बाहर देखते हुए कहा—"दुल्हा के पास ये तीन चार मेमें कौन बैठी हुई हैं ?"

नरगिस ने कहा"कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर का खान्दान है। ये अन्दर भी जरूर आयेंगीं, इन डिप्टी आयन को देखने।"

ये बातें हो ही रही थीं कि वकील और गवाहों की आमद हुल्लड़ हुई और औरतों में ग़दर जैसी कैफियत पैदा हो गई। वकील और गवाहों के साथ वह अंग्रेज़ औरतें भी घर में आ गई जिनका अभी जिक्र हो ही रहा था। सैयद ने जो गवाह की हैसियत से अन्दर आये

* अभ्यास।

थे दुल्हन के करीब ही एक सोफा डलवा दिया ताकि ये स्त्रियाँ दुल्हन की मंजूरी का दृश्य देख सकें। वकील और गवाह जब पूछकर बाहर चले तो सैयद के मशवरे के मुताबिक दुल्हन के कमरे को बिल्कुल खाली करा दिया गया ताकि ये स्त्रियां दुल्हन को देख सकें। चुनाचे सबके जाने के बाद साजिदा ने अंग्रेजी में उन में से एक स्त्री से पूछा—"आप दुल्हन को देखेंगी ?" वो सब तो इसी लिए आई थीं। उन बेचारियों ने अपना तआरुफ* खुद कराया कि मैं यह हूँ और वो ये हैं। कमिशनर की मेम साहिबा मिसेज़ लाईड ने कहा—"हम दुल्हन को देखने आये हैं। मिस्टर शकील की दुल्हन को जरूर दिखाइये। उनका मुँह खोल दीजिये ना।"

साजिदा ने नजमा का मुँह खोल कर दिखाया तो मिसेज़ लाईड ने एक खुशी का महीन सा नारा बुलन्द किया—"ओह ऐसी खूबसूरत। यह तो बड़ी प्यारी हैं। मिस्टर शकील बहुत खुश किस्मत हैं।" यह कह कर नजमा को हर तरफ से घूम कर देखा। मालूम होता था कि आशिक ही तो हो जाएँगी।"

आखिर में एक बहुत खूबसूरत सोने का तस्वीर रखने का फ्रेम देते हुए कहा—"अपनी इन ही कपड़ों की तस्वीर इस फ्रेम में रख कर मिस्टर शकील की सिंगारमेज़ पर लगा देना ताकि उनको अपना सिंगार फीका नजर आए हमेशा।"

मिस्टर विलियम डिप्टी कमिशनर की मेम साहिबा ने दो चांदी के गुलदान देते हुए कहा—"जिस घर में ऐसी खूबसूरत दुल्हन हो वहाँ किसी और सजावट की ज़रूरत तो नहीं है मगर तुम अपने दुल्हा से पूछना कि इस गुलदान में लगे हुए फूल देखकर मुझे देखो कि कौन ज्यादा खूबसूरत है ?"

मिसेज़ राबर्ट ने एक राएटिंग पैड देते हुए कहा—"अपने मियां को पहला ख़त इन्हीं काग़ज़ों पर लिखना।"

---

* परिचय।

नजमा मुस्कुराकर हर तोफा कबूल करती गई और आखिर में उन तीनों का शुक्रिया अदा करने के बाद वायदा किया कि मैं खुद आकर आप सब से मिलूंगी और आप को यहाँ बुलाकर दिखाऊंगी कि आपके दिये हुए इन तोफों का इस्तेमाल ठीक हो रहा है या नहीं।

उन तीनों को फौरन बाहर बुला लिया गया। इसलिए कि वहाँ डिनर टेबिल तैयार थी। उनके जाने के बाद रेहाना ने कहा—"तुम लोगों ने इन मेमों की वजह से एक दिलचस्प तमाशा छोड़ दिया। जैसे ही बाहर निकाह हो चुका और छुवारे लुटाए गये, सैयद भाई ने सब से ज्यादा लूटे और तीन छुवारे इस खिड़की के करीब आकर एक तरफ रख कर दुवा के लिए हाथ उठा दिये। अख्तर भाई ने उनकी ये हरकत देखी तो पूछा कि यह क्या ? आपने मुंह पर हाथ फेरते हुए कहा—"या अल्ला इसका सवाब बब्बू मियाँ की रूह नापाक को पहुँचे।"

नजमा ने कहा—"खुदा के लिए इस वक्त उस कम्बख्त का नाम न लो।"

साजिदा ने भी ताईद की—"वाकई मनहूस के ज़िक्र ही को न छेड़ो।"

ज़िक्र छेड़ने का मौका ही न मिला। घर में भी खाने की हड़बौंग शुरू हो गई और जब खुदा खुदा करके उस तूफान ने दम लिया तो दुल्हन की रुखसती की तैयारियाँ शुरू हो गईं। दुल्हा को सलाम कराई के लिए जिस वक्त घर में बुलाया गया है तो शिद्दते ज़ज़्बात* से बेकाबू हो कर शकील ने चची के गले में बाहें डालदीं और वो भी—"मेरा बच्चा" कहकर लिपट गईं।

अमामन बूवा ने कहा—"अल्ला तुम सब को इसी तरह गले लगाए रखे।"

मौलवी रजबअली साहब ने फरमाया—"इन्शाअल्ला।"

---

* भावावश।

बेगम साहिबा ने कहा—"ए इन्शाअल्ला, इन्शा अल्ला किये जाओगें या दामाद को सलाम कराई भी दोगे ?"

मौलवी साहब ने फरमाया—"इन्शाअल्ला दूँगा, सलाम कराई भी। लो बेटा यह इस घर की कुंजियाँ हैं। यहाँ जो कुछ भी है तुम्हारा है, सिर्फ तुम मेरे हो।"

शकील ने चचा के कदमों पर झुकने की कोशिश ही की थी कि उन्होंने नारा बलन्द किया—"इन्शाअल्ला ! न···न···न···इन्शाअल्ला यह न होने दूँगा। मियाँ तुम तो हमेशा के सआदत आसार[1] हो। और इन्शाअल्ला यानी इन्शाअल्ला न जाने क्या कहने वाला था। खैर इन्शा-अल्ला याद आ ही जाएगा।"

बेगम साहिबा ने बढ़कर एक चैक देते हुए कहा—"घर की कुंजियाँ उनसे ले चुके और बैंक का हिसाब मुझसे ले लो। अब तुम जानो और तुम्हारा काम। अब हमारी देखभाल भी तुम्हारा फर्ज है।" इन दोनों के बाद बाक़ी तमाम नाते रिश्तेदारों ने भी सलाम कराई दी। जब शकील का रूमाल भर गया तो साजिदा का आँचल भरना शुरू हो गया और आखिर यह रस्म खत्म होने के बाद बारह बजे रुखसती[2] की नौबत आ सकी।

अख्तर के यहाँ वह कमरा जिसमें दुल्हन दुल्हा उतारे गये थे, खुश्बू के साथ मालूम होता था कि उड़ा जा रहा है। साजिदा रेहाना और नरगिस ने हुज्जला अरूसी[3] अपने नजदीक गोशाए खिल्द[4] बना दिया था। शकील ने कदम रखते ही कहा—

यह किस रश्के मसीहा का मकां है[5]।

---

१ बड़ों का आदर करने वाले। २ विदा। ३ दुल्हन दुल्हा का कमरा। ४ स्वर्ग। ५ पैगम्बर का मकान है जिसको देखकर ईर्षा होती है।